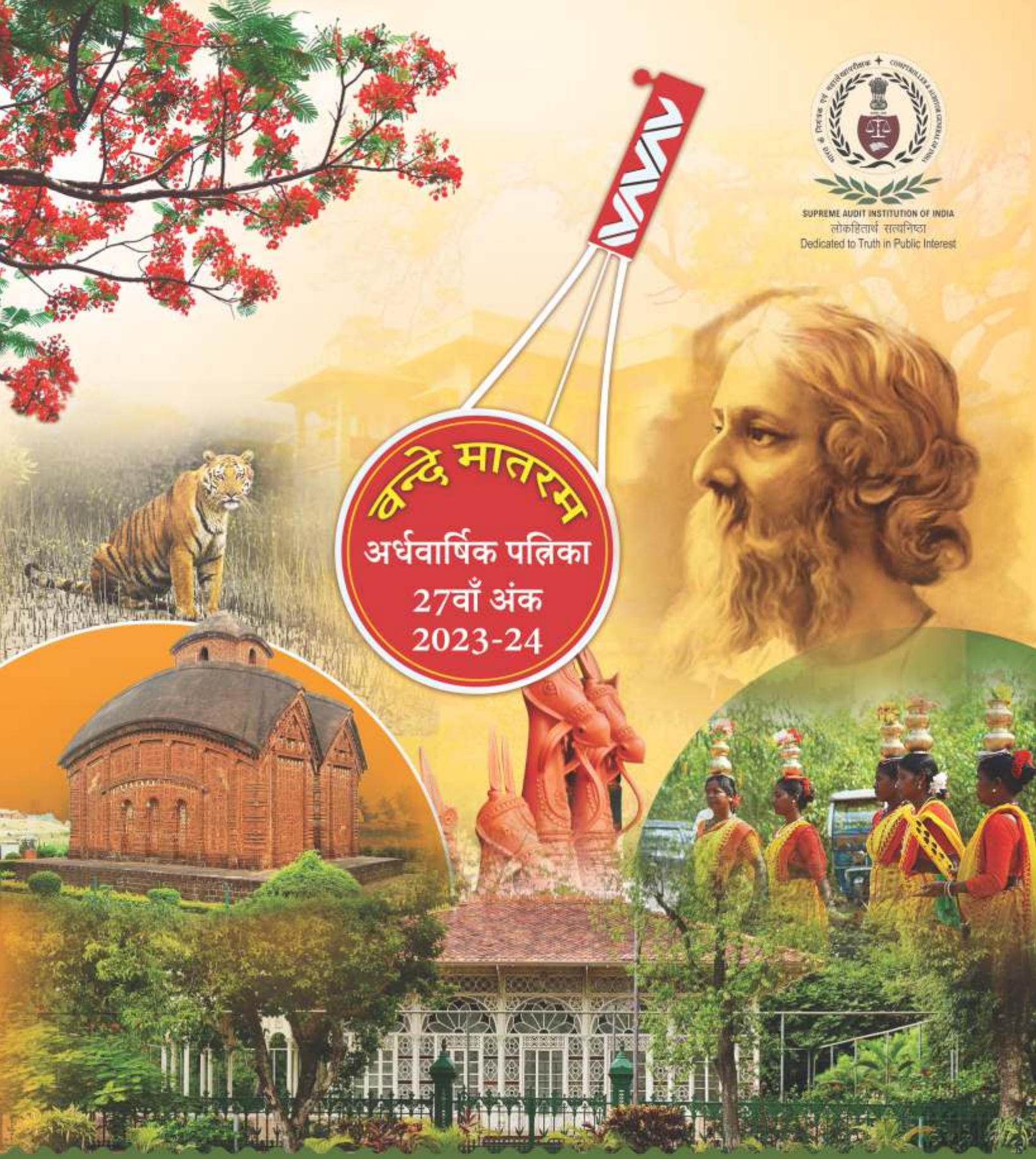

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक पत्रिका

27वाँ अंक

2023-24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

हिंदी पखवाड़ा 2023
समापन समारोह के दौरान
उपस्थित वरिष्ठ अधिकारीगण

कार्यालय में आयोजित
लेखापरीक्षा सप्ताह 2023 के
समापन अवसर पर पश्चिम
बंगाल के महामहिम राज्यपाल
श्री सी. वी. आनंद बोस की
गरिमामयी उपस्थिती

सत्यमेव जयते

हिंदी पत्रिका

वन्दे मातरम्

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक पत्रिका

27वाँ अंक

2023-24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक़दारी) पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

पत्रिका परिवार

संरक्षक	श्री अतुल प्रकाश महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल
परामर्शदातृ समिति	श्री तन्मय जाना, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) श्रीमती शैलजा खरे, वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन) श्री सुरेश कुमार आर.वी.,उप महालेखाकार(लेखा एवं वीएलसी) श्री मुकुल जमलोकी, उपमहालेखाकार (निधि) श्री रेबती रंजन पोद्दार, व. लेखा अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)
संपादक	श्री चन्दन कुमार बढ़ई, हिंदी अधिकारी (प्रशा. हिंदी सेल)
उप-संपादक	श्री आशीष कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
सहायक	श्री जितेंद्र शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी (तदर्थ) श्री मनीष कुमार महतो, वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह, कनिष्ठ अनुवादक श्री अमित कुमार, वरिष्ठ लेखाकार श्री अतुल कुमार, लेखाकार
सहयोग	श्री सचिन प्रसाद, कनिष्ठ अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते है।

श्री अतुल प्रकाश
महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पश्चिम बंगाल ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

संदेश

कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 27वें अंक के सफल प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। पत्रिकाओं का प्रकाशन न केवल कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी की भूमिका को परिलक्षित करता है बल्कि कार्यालय में कार्मिकों के मध्य वैचारिक आदान-प्रदान व कार्य-संस्कृति में बेहतरी का माध्यम भी बनता है । मैं आशा करता हूँ कि 'वंदे मातरम्' पत्रिका के 27वें अंक का प्रकाशन सामाजिक विषयों, समकालीन बदलावों आदि पर सारगर्भित रचनाओं के माध्यम से पाठकों को प्रेरित और प्रभावित करते हुए राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। यह गौरव की बात है कि 19 रचनाओं में करीब आधी रचनाएं महिलाओं ने प्रस्तुत की हैं। वे सभी बधाई की पात्र हैं।

आशा है कि यह अंक भी पहले के अंकों की भांति अपेक्षित मानकों पर खरा उतरेगा। 'वंदे मातरम्' के 27वें अंक की रचनाओं के संबंध में आप सभी की टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है। इस अंक के सफल प्रकाशन पर संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।
सभी को शुभकामनाएँ !

अतुल प्रकाश

अतुल प्रकाश
महालेखाकार

श्रीमती शैलजा खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार(प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700001

संदेश

कार्यालय की गृह-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 27वें अंक का सफल प्रकाशन होना सभी कार्मिकों की मेहनत और राजभाषा हिंदी के प्रति सभी की निष्ठा का एक उदाहरण है। पत्रिका के 27वें अंक की रचनाएँ, रचनाकारों के विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करती हैं। इस अंक की रचनाएँ मानवीय जीवन के विभिन्न आयामों को और सामाजिक विषयों को स्पर्श करती हैं, जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

आप सभी पाठकों की टिप्पणियों और सुझावों का हार्दिक स्वागत है जिससे पत्रिका के आगामी अंक अधिक गुणवत्तापूर्ण बन सकें।

सभी को बधाई और शुभकामनाएँ।

शैलजा खरे
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक) हिंदी अधिकारी

संपादकीय

गीतांजलि श्री के हिंदी उपन्यास 'रेत समाधि' के बुकर प्राइज से सम्मानित होने के बाद हिंदी साहित्य को एक अन्य अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। समकालीन हिंदी साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को अंतरराष्ट्रीय साहित्य में विशेष उपलब्धि के लिए 2023 का प्रतिष्ठित पेन/नाबोकोव पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। हिंदी भाषा एवं साहित्य को मिली अंतरराष्ट्रीय स्तर की ख्याति हमें गर्व की अनुभूति कराती है। विश्व फलक पर हिंदी अपनी विराट संभावनाओं के साथ प्रतिष्ठित हो रही है।

हिंदी हमारे राष्ट्र की सामासिक संस्कृति और अखंड राष्ट्रीय चेतना की प्रतिध्वनि है। यह सूचना, व्यापार, शिक्षा, प्रशासन और रोजगार की भाषा है। तकनीकी शिक्षा में भी हिंदी का प्रचलन बढ़ रहा है। इंटरनेट पर किसी भी विषय पर हिंदी भाषा में प्रचुर सामग्री उपलब्ध है।

हिंदी भाषा के विकास में हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। इस पत्रिका के संबंध में कृपया आप हमें अपने बहुमूल्य विचार व सुझाव दें।

चन्दन कुमार बढ़ई
(संपादक)
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

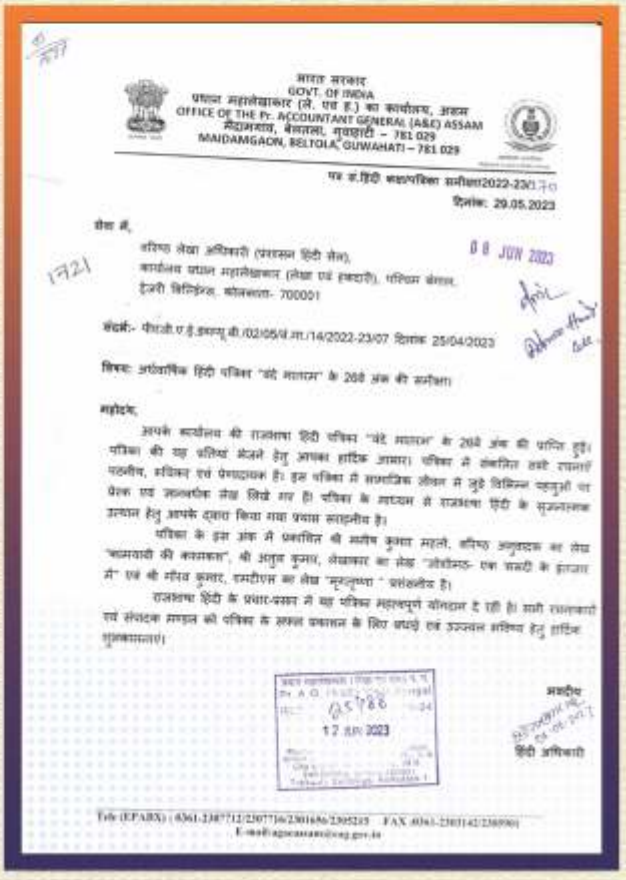

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

पत्र सं.हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/170
दिनांक: 29.05.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन हिंदी सेल),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता- 700001

संदर्भ:- पीएजी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/रा.भा./14/2022-23/07 दिनांक 25/04/2023

विषय: अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 26वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 26वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर बेहद एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री अशोक कुमार महतो, वरिष्ठ अनुवादक का लेख "कामवाली की कशमकश", श्री अतुल कुमार, लेखाकार का लेख "जोशीमठ- एक सदी के इंतजार में" एवं श्री गौरव कुमार, डीईओ का लेख "मृगतृष्णा " प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
हिंदी अधिकारी

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301686/2305215 FAX 0361-2301142/2300901
E-mail: agaeassam@cag.gov.in

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.,सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ -160017
Office of ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T., Sector-17E, CHANDIGARH - 160017
फैक्स - 0172-2703110, दू. सं. - 2702272, 2702072

क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/2-10/2023-24/44
दिनांक - 04.05.2023

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
पश्चिम बंगाल,ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता - 70001 ।

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

सुश्री मधुमिता सेन चौधरी की 'ये लड़कियां', सुश्री प्रियंका संजीव सिंह की 'डिप्रेशन', श्री आशीष कुमार की 'मुफ्तखोर', सुश्री आरती शर्मा की 'कमरा नम्बर 13', रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Accountant General
(Audit-II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/21
दिनांक: 11/05/2023

सेवा में,
हिंदी अधिकारी/ रा.भा.
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.), प.बं.
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता- 700 001

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "वन्दे मातरम" के 26वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "वन्दे मातरम" के 26वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं- ये लड़कियां, मुफ्तखोर, डिप्रेशन एवं कामवाली की कशमकश आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-0916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: [illegible]

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-360001
Office of the Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-360001
फोन नं./Phone No: 0281-2441680-86 (ईपीएबीएक्स/PBX) फैक्स नं./Fax No: 0281-2450231 ईमेल/Email: [illegible]

क्र.हिंदी अनुभाग/पत्रिका-19/2023-24/ 27
दिनांक-03.05.2023

सेवा में,
व.लेखा अधिकारी/ प्रभारी एवं हिंदी कक्ष,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता-700001

विषय- हिंदी गृह-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 26 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह-पत्रिका "वंदे मातरम्" के 26 वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सादर धन्यवाद। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर कोलकाता की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता अंकित चित्र अत्यंत आकर्षक है, जो पत्रिका के नाम 'वंदे मातरम' है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, व.उप महालेखाकार सुश्री मधुमिता सेन चौधुरी की रचना "ये लड़कियां", श्री अमर कुमार सील की रचना "मेरा लद्दाख-एक सपना सफर", श्री विवेक शर्मा की रचना "जैविक वायु प्रदूषण और भारत की स्थिति", श्री चन्दन कुमार की रचना "विदाई", श्री अशोक कुमार महतो की रचना "कामवाली की कशमकश", श्री अतुल कुमार की रचना "जोशीमठ-एक सदी के इंतजार में", सुश्री प्रियंका संजीव सिंह की रचना "डिप्रेशन", श्री आशीष कुमार की रचना "मुफ्तखोर", सुश्री सुस्मिता साहा की रचना "गुरु तेगबहादुर सिंह की शहादत", श्री रेवती रमण चौधुरी की रचना "जिंदगी का सच मिसाल, आदि" श्री अमित कुमार की रचना "मेरा शहर", श्री आनंद कुमार पाण्डेय की रचना "गुरु दक्षिणा", सुश्री सुस्मिता दास की रचना "होली आई रे" सुश्री आरती शर्मा की रचना "कमरा नंबर-13", आदि रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय लगती हैं।

पत्रिका के माध्यम से "ग" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका में कार्यालयी छायाचित्र पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 'विरासत' परिवार को आपकी पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

आपके पत्र

[illegible] /2022-23

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-I, महाराष्ट्र, नागपुर 440001

क्र.हिंदी अनुभाग/पत्रिका/22/2023-24/ [illegible]

दिनांक [illegible]/05/2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी /हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

पश्चिम बंगाल, कोलकाता – 700001

विषय:- हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 26वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर [illegible] कुमार, हिंदी अधिकारी का लेख "मिठास", श्री [illegible] कुमार [illegible], वरिष्ठ अनुवादक का लेख [illegible] तथा श्री [illegible] कुमार, कनिष्ठ अनुवादक का लेख [illegible] अति [illegible] हैं।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को उत्कृष्ट संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

HINDI OFFICER

हिंदी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (ले० प०) हरियाणा का कार्यालय लेखा भवन, प्लॉट सं० 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020 टेलीफोन सं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स सं० 0172-2603824

OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E)HARYANA, CHANDIGARH-160020 EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.: 0172-2603824

E mail- agaeharyana@cag.gov.in

कहा/पवि. प्रति/2023-2024/44

दिनांक: 08.05.2023

सेवा में

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी सेल)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)

पश्चिम बंगाल ट्रेजरी बिल्डिंग

कोलकाता।

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26वें अंक का प्रेषण से संबंधित।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 27.04.2023 के द्वारा कार्यालय हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26वें अंक के प्रेषण की प्राप्ति सधन्यवाद हुई है पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री जितेन्द्र शर्मा का लेख 'वैश्विक वायु गुणवत्ता और भारत की स्थिति', श्री अतुल कुमार का लेख 'जोशीमठ- एक त्रासदी के इंतजार में', सुश्री सुष्मिता सरकार का लेख 'गुरु तेगबहादुर हिन्द की चादर', श्री रेवती रंजन पोद्दार का लेख 'जिन्दगी का सारा निचोड़ : साहिर तथा श्री चन्दन कुमार का लेख 'मिठास' ज्ञानवर्धक है।

इसके अतिरिक्त श्रीमती सुनीता राय की कविता 'होली आई रे' तथा श्रीमती [illegible] राय चौधरी की कविता 'ये लड़कियां' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

पूजा सिंह

हिन्दी अधिकारी

संख्या/No. हि.अ./टी.पी./[illegible]/2023-24/37/ [illegible]

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

Indian Audit & Accounts Department

Office of the Principal Accountant General (Audit) Bihar

Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date 10.05.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ प्रशासन, हिन्दी सेल

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग, कोलकाता – 700001

विषय:- हिन्दी अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के 26वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय/महोदया,

वंदे मातरम् का 26वाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की साज सज्जा सुंदर है। आवरण पृष्ठ पश्चिम बंगाल की संस्कृति को समेटने में सफल हुआ है। पत्रिका में प्रधान महालेखाकार महोदय की बांग्ला कविता की अनुदित रचना "ये लड़कियाँ" पढ़ना सुखद अनुभूति है। उम्मीद है भविष्य में भी बांग्ला साहित्य की अनुदित रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगी। अनुवादक एवं संपादक की बढ़ाई इसके लिए प्रशंसा के पात्र है।

लेह लद्दाख पर यात्रा वृतांत में जयंत कुमार सील ने पाठकों का ज्ञान बढ़ाया है। संपादक की कहानी "मिठास" में बिहार में बोली जाने वाली आंचलिक शब्दों की मिठास पता _ धम से, भकोसा, अंड संड बकते रहते हैं, गाँव-जवार इत्यादि देखने को मिली। कहानीकार 5 वर्षीय बालक के मनोविज्ञान को उकेरने में सफल हुआ है।

अन्य रचनाएँ भी पाठकों को आकर्षित करती है। साहिर लुधियानवी पर लेख भी सराहनीय है। "कमरा नंबर 13" शीर्षक कहानी का प्रारंभ जहाँ पाठकों को आकर्षित करती है वहीं अंत निराशाजनक है तथा अपूर्णता का बोध होता है। विभिन्न अवसरों पर ली गई तस्वीरें कार्यालय की गतिविधियों से परिचित कराती हैं। "वंदे मातरम्" राजभाषा की सेवा में मील का पत्थर साबित होगी ऐसा विश्वास है। संपादक मंडल को बधाई।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

सह-सम्पादक 'प्रहरी'

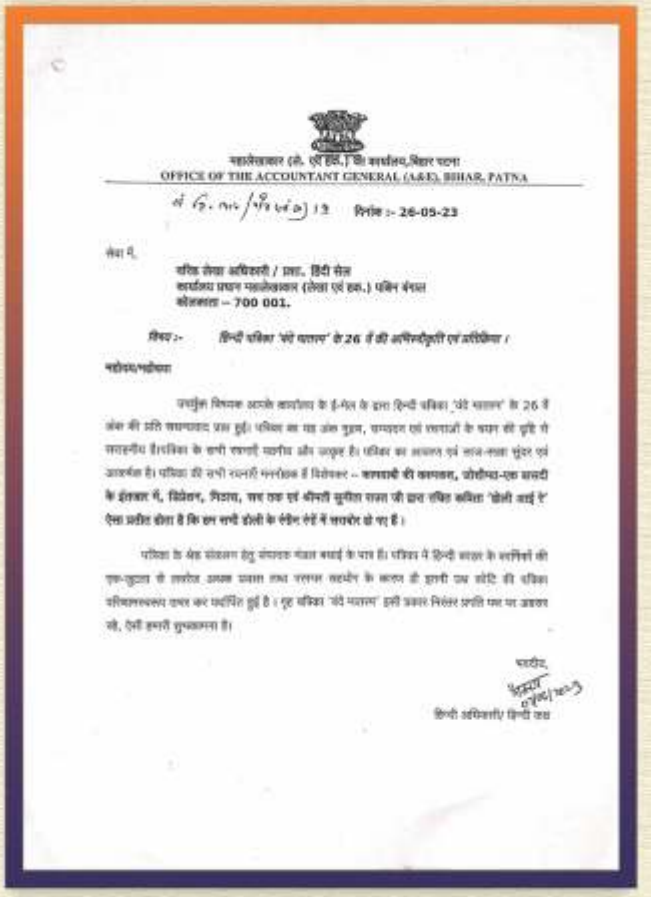

दूरभाष/Phone - 2221226, 2506091, 2223194, 2221941, 2223725, 2506263 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757

फैक्स/Fax : 0612-250 6223,2506174 ई-मेल/E-mail- agaubihar@cag.gov.in, पो० बॉक्स/P.B.No.- 47

महालेखाकार (ले. एवं हक.) का कार्यालय,बिहार पटना

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

[illegible] 13 दिनांक :- 26-05-23

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी / प्रशा. हिंदी सेल

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) पश्चिम बंगाल

कोलकाता – 700 001.

विषय :- हिन्दी पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26 वें की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ई-मेल के द्वारा हिन्दी पत्रिका 'वंदे मातरम' के 26 वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका की सभी रचनाएँ मनमोहक हैं विशेषकर – **[illegible], जोशीमठ-एक त्रासदी के इंतजार में, [illegible], मिठास, [illegible] एवं श्रीमती सुनीता राय जी द्वारा रचित कविता 'होली आई रे' ऐसा प्रतीत होता है कि हम सभी होली के रंगीन रंगों में सराबोर हो गए हैं।**

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में हिन्दी भाषा के [illegible] की [illegible] प्रयास तथा [illegible] सहयोग के कारण ही इतनी उच्च कोटि की पत्रिका [illegible] रूप का प्रकाशित हुई है। यह पत्रिका 'वंदे मातरम' इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी/ हिन्दी कक्ष

वंदे मातरम के 27वें अंक के रचनाकारों का विवरण

क्र. स.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	साइबर सुरक्षा और भारत	जितेंद्र शर्मा	निबंध	1
2.	मौन साधना	मनीष कुमार महतो	कहानी	7
3.	उद्यमिता	अंशुबाला	निबंध	13
4.	सूखे रंग की डिबिया	चंदन कुमार बढ़ई	कहानी	18
5.	क्लिकबेट	आरती शर्मा	निबंध	22
6.	सुरीली चिड़िया	सुस्मिता सरकार	कहानी	27
7.	गीतकार हसरत जयपुरी	रेवती रंजन पोद्दार	जीवनी	30
8.	कार्तिक स्वामी मंदिर के दर्शन: भगवान का अपना निवास	सौमी बन्दयोपाध्याय	यात्रा-वृत्तान्त	33
9.	हैप्पी फादर्स डे	मौटुसि मित्रा	संस्मरण	35
10.	बचपन कैसा	सुनीता राउत	कविता	37
11.	गुलमोहर	आशीष कुमार	कहानी	38
12.	संस्मरण	चन्द्रशेखर भगत	संस्मरण	45
13.	जीवन के कुछ पहलू	अनिल कुमार	निबंध	49
14.	आत्मजाल	तापसी आचार्य (बसाक)	निबंध	51
15.	आगरा फतेहपुर की यात्रा	जयंत कुमार सील	यात्रा-वृत्तान्त	55
16.	लोकल ट्रेन	सचिन प्रसाद	निबंध	58
17.	सौभाग्य	अमित कुमार	कहानी	62
18.	वहम	प्रियंका संजीव सिंह	कहानी	67
19.	हावड़ा ब्रिज	रवि प्रदीप इंदवर	निबंध	74

साइबर सुरक्षा और भारत

जितेंद्र शर्मा

तेजी से बदलते तकनीकी प्रगति के युग में, डिजिटल परिदृश्य आधुनिक समाज का एक अभिन्न अंग बन गया है, जिससे हमारे बातचीत करने, संचार करने और व्यवसाय संचालित करने के तरीके में बदलाव आ रहा है। प्रौद्योगिकी को व्यापक रूप से अपनाने से कई लाभ हुए हैं, लेकिन इसने व्यक्तियों, संगठनों और राष्ट्रों को नए खतरों से भी अवगत कराया है। साइबर सुरक्षा भारत सहित दुनिया भर के देशों के लिए एक गंभीर चिंता के रूप में उभरी है। इस निबंध का उद्देश्य भारत में साइबर सुरक्षा के महत्व, इसके सामने आने वाली चुनौतियों और देश द्वारा अपने साइबरस्पेस की सुरक्षा के लिए उठाए गए उपायों का पता लगाना है।

भारत में साइबर सुरक्षा का महत्व:

21वीं सदी में, दुनिया ने एक अभूतपूर्व डिजिटल क्रांति देखी है, जिसने मानव जीवन के हर पहलू को बदल दिया है। भारत, दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में, इस तकनीकी प्रगति से अत्यधिक लाभ प्राप्त कर रहा है। हालाँकि, लाभ के साथ-साथ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी आती हैं, विशेषकर साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में। भारत में साइबर सुरक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता, क्योंकि देश की प्रगति और स्थिरता अब इसकी डिजिटल संपत्तियों की सुरक्षा करने की क्षमता पर निर्भर करती है। भारत में साइबर सुरक्षा के बहुमुखी महत्व, इसके आर्थिक, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक आयामों के विषय में निम्नलिखित है :

आर्थिक निहितार्थ:

1. वित्तीय बुनियादी ढांचे की सुरक्षा: भारत का वित्तीय क्षेत्र तेजी से डिजिटल भविष्य की ओर बढ़ रहा है, जिसमें मोबाइल बैंकिंग, डिजिटल वॉलेट और ऑनलाइन लेनदेन आदर्श बन गए हैं। मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की कमी से वित्तीय धोखाधड़ी, बैंक खातों तक अनधिकृत पहुंच और अर्थव्यवस्था में संभावित विनाशकारी व्यवधान हो सकता है।

2. बौद्धिक संपदा का संरक्षण : भारत उभरते तकनीकी उद्योग के साथ नवाचार और रचनात्मकता का एक केंद्र है।

प्रभावी साइबर सुरक्षा साइबर चोरी से मूल्यवान बौद्धिक संपदा की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। यह सुनिश्चित करती है कि देश के नवाचार आर्थिक विकास का स्रोत बने रहें।

3. ई-कॉमर्स और व्यापार: डिजिटल युग ने ई-कॉमर्स को जन्म दिया है, जो भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण चालक बन गया है। सुरक्षित ऑनलाइन लेनदेन, डेटा गोपनीयता और ग्राहक विश्वास को सुनिश्चित करने में साइबर सुरक्षा महत्वपूर्ण है। ये सभी ई-कॉमर्स के विकास में योगदान करते हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा अनिवार्यताएँ:

1. महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे की सुरक्षा: बिजली, परिवहन, स्वास्थ्य सेवा और संचार जैसे आवश्यक बुनियादी ढाँचा क्षेत्र तेजी से डिजिटल प्रणालियों पर निर्भर हो रहे हैं। साइबर सुरक्षा में उल्लंघन से इन महत्वपूर्ण सेवाओं में व्यवधान हो सकता है, जिसके सार्वजनिक सुरक्षा और राष्ट्रीय स्थिरता पर गंभीर परिणाम होंगे।

2. साइबर जासूसी और आतंकवाद: राज्य-प्रायोजित साइबर जासूसी और साइबर आतंकवाद के बढ़ने के साथ, संभावित हमलों को विफल करने के लिए एक मजबूत साइबर सुरक्षा ढांचा आवश्यक है अन्यथा यह संवेदनशील सरकारी डेटा हैक कर अराजकता पैदा कर सकता है।

3. भू-राजनीतिक स्थिति: किसी देश की साइबर तैयारी उसके भू-राजनीतिक प्रभाव में योगदान करती है। अपने साइबर डोमेन को सुरक्षित रखने की भारत की क्षमता अंतरराष्ट्रीय वार्ता और सहयोग में इसकी स्थिति को मजबूत करती है, जिससे एक जिम्मेदार और तकनीकी रूप से उन्नत राष्ट्र के रूप में इसकी प्रतिष्ठा मजबूत होती है।

सामाजिक कल्याण:

1. व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा: डिजिटलीकरण के युग में, व्यक्तिगत डेटा एक मूल्यवान वस्तु है। प्रभावी साइबर सुरक्षा व्यक्तियों की व्यक्तिगत और संवेदनशील जानकारी को डेटा उल्लंघनों, पहचान की चोरी और अन्य साइबर अपराधों से सुरक्षित रखती है।

2. गोपनीयता और डिजिटल अधिकार: एक मजबूत साइबर सुरक्षा ढांचा यह सुनिश्चित करता है कि नागरिकों के डिजिटल अधिकार और गोपनीयता बरकरार रहे। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत के डिजिटल पदचिह्न (फुटप्रिन्ट) का विस्तार हो रहा है, जिसमें शासन, स्वास्थ्य, शिक्षा और बहुत कुछ शामिल है।

3. डिजिटल साक्षरता और जागरूकता: साइबर सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम नागरिकों को डिजिटल परिदृश्य को सुरक्षित रूप से नेविगेट (संचालित) करने के लिए सशक्त बनाते हैं। यह, बदले में साइबर अपराधों का शिकार होने के जोखिम को कम करता है और जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार को बढ़ावा देता है।

भारत में साइबर सुरक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। यह एक आवश्यक स्तंभ है जो देश की आर्थिक वृद्धि, राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक कल्याण का समर्थन करता है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे साइबर अपराधियों और दुष्ट कारकों की रणनीति भी आगे बढ़ रही है। इस प्रकार, साइबर सुरक्षा के लिए एक गतिशील और सक्रिय दृष्टिकोण अपरिहार्य है। भारत सरकार को, निजी क्षेत्र के सहयोग से, उन्नत साइबर सुरक्षा प्रौद्योगिकियों में निवेश जारी रखना चाहिए, साइबर सुरक्षा जागरूकता की संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए और देश की डिजिटल सीमाओं की रक्षा करने में सक्षम कुशल कार्यबल विकसित करना चाहिए। केवल ऐसे ठोस प्रयासों से ही भारत अपने डिजिटल भविष्य को सुरक्षित कर सकता है और वैश्विक तकनीकी महाशक्ति बनने की दिशा में अपनी यात्रा जारी रख सकता है।

साइबर सुरक्षा में भारत के सामने चुनौतियाँ:

जैसे-जैसे भारत तेजी से डिजिटल परिवर्तन से गुजर रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरकनेक्टेड सिस्टम पर देश की निर्भरता तेजी से बढ़ी है। हालाँकि इससे कई लाभ हुए हैं, इसने भारत को कई प्रकार के साइबर खतरों और चुनौतियों से भी अवगत कराया है। साइबर सुरक्षा का क्षेत्र जटिल और निरंतर विकसित होने वाला है, जिसके लिए निरंतर सतर्कता और अनुकूलन की आवश्यकता होती है। यह निबंध तकनीकी और संगठनात्मक बाधाओं से लेकर व्यापक सामाजिक निहितार्थों तक, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में भारत के सामने आने वाली बहुमुखी चुनौतियों की पड़ताल करता है।

1. साइबर हमले और थ्रैट-ऐक्टर: भारत को साइबर अपराधियों, हैक्टिविस्टों और राज्य-प्रायोजित थ्रैट-ऐक्टर सहित विभिन्न स्रोतों से असंख्य साइबर खतरों का सामना करना पड़ता है। ये खतरे डेटा उल्लंघनों, रैंसमवेयर हमलों, फ़िशिंग और यहां तक कि साइबर जासूसी के रूप में प्रकट होते हैं। इन हमलों की जटिलता और परिष्कार से बचाव करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

2. जागरूकता और शिक्षा का अभाव: साइबर हमलों की बढ़ती आवृत्ति और गंभीरता के बावजूद, भारत की आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से में साइबर सुरक्षा के बारे में जागरूकता की कमी बनी हुई है। समझ की यह कमी खराब साइबर स्वच्छता में योगदान करती है, जिससे व्यक्ति और संगठन साइबर खतरों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।

3. कौशल अंतर और कार्यबल की कमी: साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में विशेष कौशल और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। भारत इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कौशल-अंतर का सामना कर रहा है, जिसके कारण योग्य साइबर सुरक्षा पेशेवरों की कमी हो गई है। यह कमी साइबर हमलों से प्रभावी ढंग से बचाव करने और मजबूत सुरक्षा उपाय विकसित करने की देश की क्षमता को बाधित करती है।

4. साइबर सुरक्षा के लिए खंडित दृष्टिकोण: साइबर सुरक्षा जिम्मेदारियाँ विभिन्न सरकारी एजेंसियों, निजी संगठनों और कानून प्रवर्तन निकायों के बीच विभाजित हैं। इस खंडित दृष्टिकोण से समन्वय संबंधी चुनौतियाँ, सूचना साझा करने में अंतराल और साइबर घटनाओं पर प्रतिक्रिया देने में देरी हो सकती है।

5. तीव्र तकनीकी प्रगति: जबकि तकनीकी प्रगति कई लाभ प्रदान करती है, यह नई कमजोरियाँ भी पैदा करती है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी), आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी उभरती प्रौद्योगिकियां नए अटैक वैक्टर पेश करती हैं जिनका साइबर अपराधी फायदा उठा सकते हैं।

6. विनियामक और नीति ढाँचे: साइबर खतरों की उभरती प्रकृति के लिए अनुकूलनीय और व्यापक नियामक और नीतिगत ढांचे की आवश्यकता है। तेजी से बदलते साइबर परिदृश्य के साथ तालमेल बिठाने वाले प्रभावी नियमों और नीतियों को विकसित करना और लागू करना एक चुनौती है।

7. अंतर्राष्ट्रीय और भूराजनीतिक कारक: साइबरस्पेस की परस्पर जुड़ी प्रकृति का मतलब है कि साइबर हमले दुनिया में कहीं से भी हो सकते हैं। भू-राजनीतिक

परिदृश्य को नेविगेट करना और अंतर्राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा सहयोग का प्रबंधन करना जटिल हो सकता है, खासकर राज्य-प्रायोजित साइबर खतरों के संदर्भ में।

8. महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा: ऊर्जा, परिवहन और स्वास्थ्य सेवा जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्र तेजी से डिजिटल प्रणालियों पर निर्भर हो रहे हैं। इन महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि एक सफल हमले के दूरगामी और विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

9. सार्वजनिक-निजी सहयोग: प्रभावी साइबर सुरक्षा के लिए सरकार, निजी क्षेत्र और शिक्षा जगत के बीच सहयोग की आवश्यकता है। इन साझेदारियों का निर्माण और रखरखाव, जिसमें संवेदनशील जानकारी और विशेषज्ञता साझा करना शामिल है, जटिल हो सकता है और इसके लिए मजबूत विश्वास और समन्वय तंत्र की आवश्यकता होती है।

डिजिटल रूप से सशक्त समाज की दिशा में भारत की यात्रा साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों के साथ चलती है। इन चुनौतियों से निपटना न केवल देश की डिजिटल संपत्तियों और आर्थिक विकास की सुरक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि देश की राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक कल्याण की रक्षा के लिए भी आवश्यक है। इसके लिए प्रौद्योगिकी नवाचार, शिक्षा, नीति विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से जुड़े एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इन चुनौतियों को स्वीकार करके और सक्रिय रूप से संबोधित करके, भारत अपनी साइबर सुरक्षा को मजबूत कर सकता है और जटिल साइबर परिदृश्य को अधिक लचीलेपन और आत्मविश्वास के साथ नेविगेट कर सकता है।

भारत की साइबर सुरक्षा पहल:

साइबर सुरक्षा के महत्व को पहचानते हुए, भारत सरकार ने साइबर लचीलापन बढ़ाने और अपने डिजिटल बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए कई पहल की हैं:

1. राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति: भारत सरकार ने देश के साइबर स्पेस की सुरक्षा और एक सुरक्षित और लचीला डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के उद्देश्य से 2013 में राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति शुरू की।

2. सीईआरटी-इन: भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सीईआरटी-इन) साइबर सुरक्षा घटनाओं से निपटने और साइबर सुरक्षा के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है।

3. साइबर अभ्यास और ड्रिल्स: : भारत नियमित रूप से तैयारियों और प्रतिक्रिया क्षमताओं का आकलन करने के लिए सरकारी एजेंसियों सहित विभिन्न हितधारकों को शामिल करते हुए साइबर अभ्यास और ड्रिल्स आयोजित करता है।

4. क्षमता निर्माण: विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों और शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग के माध्यम से साइबर सुरक्षा कार्यबल को बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

5. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: भारत सर्वोत्तम प्रथाओं, खुफिया जानकारी और तकनीकी विशेषज्ञता को साझा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा सहयोग और साझेदारी में सक्रिय रूप से संलग्न है।

6. साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान: सरकार और निजी संगठन नागरिकों और व्यवसायों को साइबर खतरों और निवारक उपायों के बारे में शिक्षित करने के लिए साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाते हैं।

साइबर सुरक्षा, भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी का विकास जारी है, देश विविध और परिष्कृत साइबर खतरों का सामना कर रहा है जिसके लिए विभिन्न हितधारकों से निरंतर सतर्कता और सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता होती है। नीतियों, क्षमता निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से भारत का सक्रिय दृष्टिकोण उसके डिजिटल परिदृश्य को सुरक्षित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हालाँकि, चुनौतियाँ लगातार बढ़ रही हैं, अतः राष्ट्र के लिए एक सुरक्षित डिजिटल भविष्य सुनिश्चित करने के लिए साइबर सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

जितेन्द्र शर्मा
(सहायक लेखा अधिकारी, तदर्थ)

राष्ट्रीय साइबर नीति

मौन साधना

मनीष कुमार महतो

सत्यनारायण शास्त्री जी उर्फ पंडित जी की व्यस्तता हर बीते दिन के साथ बढ़ती जा रही थी। जब उन्होंने गीता ज्ञान ब्लॉग लिखना शुरू किया था तब सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन इसकी बदौलत उन्हें इतने लोगों का स्नेह और सम्मान मिलेगा। लोग अपने जीवन की परेशानियाँ उनसे बाँटने लगें। उनसे उम्मीद करते कि पंडित जी का ज्ञान यानी कि श्रीमदभगवद गीता से प्राप्त ज्ञान उनकी परेशानियों में रास्ता दिखा सकता है। पंडित जी को सबसे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि लोग गीता की तरफ लौट रहे थे। इस बात की भी उन्हें ज्यादा खुशी थी कि उनके पाठकों में हर उम्र के लोग थे।

जब पंडित जी अपने ब्लॉग के जरिये लोगों को अपना सीखा हुआ ज्ञान और अनुभव बाँट रहे थे तब उनके अपने ही घर में उनकी पत्नी कमला जी एक बड़े मानसिक तनाव से गुजर रही थीं। जिस पर अगर पंडित जी ने ध्यान दे दिया होता तो वे कमला जी की मदद कर सकते थे लेकिन कई बार हम अपनी व्यस्तता के कारण बाहर की दुनिया में इतने खो जाते है कि अपने घर के लोगों की परेशानियों पर हमारी नजर ही नहीं पड़ती।

कमला जी बहुत ही सीधी-सादी महिला थी। उनका सारा जीवन परिवार की देखभाल करते बीता था। ये कहना गलत न होगा कि उनकी दुनिया अपने परिवार तक ही सीमित थी। पति और बच्चों, रिश्ते-नातों, सगे-संबंधियों का ख्याल रखने में उन्होंने कभी न अपने बारे में सोचा और न ही अपना ख्याल रखा। अब सब अपनी-अपनी जिन्दगी में व्यस्त थे। बच्चे अपने कार्यालय के कार्यों में इतने व्यस्त हो चुके थे कि पूरे दिन में एक बार भी अपनी माँ से बात करने का समय नहीं निकाल पाते थे। पति ने भी अपनी अलग दुनिया बना रखी थी, जहाँ उनके दोस्त थे, इंटरनेट ब्लॉग था, लोग थे और उनकी समस्याएँ थी, नहीं थी तो बस कमला जी से इत्मीनान से बात करने की फुर्सत।

इंसान का मन भी बड़ा अजीब होता है। कभी तो बड़ी-बड़ी बातों से परेशान नहीं होता और कभी जरा सी बात पर टूट कर बिखर जाता है। कमला जी के मन को भी एक ऐसी ही बात ने जकड़ कर रखा है।

वे चाहती हैं कि सारी दुनिया को उनकी परेशानियों का हल बताने वाले पंडित जी उनके भी दुःख का हल बताएं परन्तु उनसे खुलकर कुछ कहती भी नहीं। इस सब में कमला जी के शरीर को नुकसान पहुँचना शुरू हो गया। जब मन में हर वक्त तनाव रहने लगे तो इसका खामियाजा शरीर ही भुगतता है। उनकी भूख मर गई, ब्लड प्रेशर बढ़ने लगा, नींद उड़ गई। पंडित जी ने डॉक्टर को दिखाया, कुछ टेस्ट भी करवाए, पर सब कुछ ठीक ही था। तब डॉक्टर ने पंडित जी से कहा – "लगता है, आपकी पत्नी को कोई मानसिक तनाव है जो शरीर में ये लक्षण दिख रहे है। आप या तो अपनी पत्नी से खुद बात कीजिए या किसी मानसिक रोग विशेषज्ञ को इन्हें दिखाइए।"

पंडित जी बहुत हैरान थे। जीवन में प्रभु कृपा से सब कुछ तो ठीक ही चल रहा था। ऐसी कोई बात तो उनकी जानकारी में नहीं थी जो कमला जी को इस हद तक परेशान करती कि वो बीमार रहने लगें।

उन्होंने मन में सोचा कि घर जाकर पहले खुद ही कमला जी से बात करेगें। क्या सच में कोई तनाव है जो इस हद तक बढ़ गया है और उन्हें इसकी खबर तक न लगी? घर जाकर उन्होंने सबसे पहला काम किया कि कमला जी का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने पास बिठाया और बड़े स्नेह से पूछा – "क्या बात है कमला? क्या तुम्हें कोई दुःख है? किसी की कोई बात जो तुम्हारे दिल को लगी है, या मेरा कोई व्यवहार तुम्हें बुरा लगा हो या कुछ भी ऐसा हुआ है जिसने तुम्हें परेशान किया है?" पता नहीं पति के स्नेह भरे शब्दों का असर था या उनकी आँखों में अपने प्रति झलकती चिंता, जिसे महसूसकर कमला जी के सब्र का बाँध जैसे टूट गया। उनकी आँखों से जो आँसू निकलने शुरू हुए तो लगा आज पूरे घर को डुबोकर ही रूकेगें। पंडित जी ने कमला जी को रोका नहीं, रोने दिया लेकिन मन ही मन उन्हें खुद पर बहुत गुस्सा भी आ रहा था कि सारी जिन्दगी उनके साथ हर सुख-दुःख में खड़ी रहने वाली, उनकी

हँसी हँसने वाली, उनके आँसू रोने वाली उनकी पत्नी न जाने कितनी कष्ट में है और उन्हें पता तक नहीं? इससे बड़ी शर्म की बात क्या होगी कि अनजान लोगों को उनके दुःखों और समस्याओं का हल बताने वाले पंडित जी को अपनी पत्नी के दुःखों की भनक तक नहीं है! खूब रोकर जब कमला जी शांत हुईं तब पंडित जी ने फिर से पूछा – "तुम्हारे आँसूओं की वजह क्या है कमला..? " तब बड़े संकोच के साथ कमला जी ने कहा – "मुझे लगता है कि मेरा जीवन व्यर्थ ही गया। न मैंने ऐसा कुछ किया है कि लोग मुझे याद रखें और न ही कुछ ऐसा कि भगवान मुझसे प्रेम करें, न ही कोई पूजा-पाठ, न कोई दान-धर्म, न किसी की मदद और न भलाई ही की। मानव जन्म लेकर भी बेकार ही जाने दिया इसे।" मुझे लगता है – "मुझ जैसा बेकार जीवन किसी ने नहीं जीया।"

पंडित जी ने कहा - "मेरी प्यारी कमला! मुझे दुःख है कि तुम ऐसा सोचती हो, तुम्हें लगता है कि तुमने जीवन व्यर्थ जीया है। अगर ऐसा है तो इस धरती पर सभी का जीवन व्यर्थ ही है। कमला, तुम नहीं जानती कि तुमने कितना निःस्वार्थ जीवन जीया है। याद करो वो दिन जब तुम मेरे जीवन में आयी थी, कितनी छोटी उम्र थी तुम्हारी, लेकिन तुमने कितने आत्मविश्वास के साथ एक नए जीवन को अपना लिया था। अपने स्वभाव और सेवाभाव से कितनी जल्दी तुमने मेरे परिवार का दिल जीत लिया था। तुमने हमेशा दूसरों के सुख की फिक्र की। दूसरों की खुशी में खुश हुई और कभी इनके बदले कुछ नहीं चाहा। ये तुम्हारी ही बदौलत है कमला कि आज मैं और हमारे बच्चें एक अच्छी और कामयाब जिन्दगी जी रहे हैं। ये सब तुम्हारी मौन साधना का ही तो फल है। लोगों को गीता का ज्ञान मैं देता हूँ लेकिन सही मायने में गीता ज्ञान को तुमने जीया है। मुश्किल से मुश्किल वक्त में भी तुम्हारा धैर्य नहीं डिगा। सुख में तुम इतराई नहीं और यही तो हमें गीता सिखाती है।" मैं तुम्हें गीता से ही एक-दो श्लोक सुनाता हूँ-

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्तयागाच्छान्तिरनन्तरम्॥

यह श्लोक गीता के बारहवें अध्याय में है और इसमें भगवान श्री कृष्ण कह रहे है कि **हे अर्जुन! मर्म अर्थात् सही भाव न जानकर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है; ज्ञान से मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से भी सब कर्मो के फल का त्याग श्रेष्ठ है; क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।**

हँसी हँसने वाली, उनके आँसू रोने वाली उनकी पत्नी न जाने कितनी कष्ट में है और उन्हें पता तक नहीं? इससे बड़ी शर्म की बात क्या होगी कि अनजान लोगों को उनके दुःखों और समस्याओं का हल बताने वाले पंडित जी को अपनी पत्नी के दुःखों की भनक तक नहीं है! खूब रोकर जब कमला जी शांत हुईं तब पंडित जी ने फिर से पूछा – "तुम्हारे आँसूओं की वजह क्या है कमला..? " तब बड़े संकोच के साथ कमला जी ने कहा – "मुझे लगता है कि मेरा जीवन व्यर्थ ही गया। न मैंने ऐसा कुछ किया है कि लोग मुझे याद रखें और न ही कुछ ऐसा कि भगवान मुझसे प्रेम करें, न ही कोई पूजा-पाठ, न कोई दान-धर्म, न किसी की मदद और न भलाई ही की। मानव जन्म लेकर भी बेकार ही जाने दिया इसे।" मुझे लगता है – "मुझ जैसा बेकार जीवन किसी ने नहीं जीया।"

पंडित जी ने कहा - "मेरी प्यारी कमला! मुझे दुःख है कि तुम ऐसा सोचती हो, तुम्हें लगता है कि तुमने जीवन व्यर्थ जीया है। अगर ऐसा है तो इस धरती पर सभी का जीवन व्यर्थ ही है। कमला, तुम नहीं जानती कि तुमने कितना निःस्वार्थ जीवन जीया है। याद करो वो दिन जब तुम मेरे जीवन में आयी थी, कितनी छोटी उम्र थी तुम्हारी, लेकिन तुमने कितने आत्मविश्वास के साथ एक नए जीवन को अपना लिया था। अपने स्वभाव और सेवाभाव से कितनी जल्दी तुमने मेरे परिवार का दिल जीत लिया था। तुमने हमेशा दूसरों के सुख की फिक्र की। दूसरों की खुशी में खुश हुई और कभी इनके बदले कुछ नहीं चाहा। ये तुम्हारी ही बदौलत है कमला कि आज मैं और हमारे बच्चें एक अच्छी और कामयाब जिन्दगी जी रहे हैं। ये सब तुम्हारी मौन साधना का ही तो फल है। लोगों को गीता का ज्ञान मैं देता हूँ लेकिन सही मायने में गीता ज्ञान को तुमने जीया है। मुश्किल से मुश्किल वक्त में भी तुम्हारा धैर्य नहीं डिगा। सुख में तुम इतराई नहीं और यही तो हमें गीता सिखाती है।" मैं तुम्हें गीता से ही एक-दो श्लोक सुनाता हूँ-

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्तयागाच्छान्तिरनन्तरम्॥

यह श्लोक गीता के बारहवें अध्याय में है और इसमें भगवान श्री कृष्ण कह रहे है कि **हे अर्जुन! मर्म अर्थात् सही भाव न जानकर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है; ज्ञान से मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से भी सब कर्मो के फल का त्याग श्रेष्ठ है; क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।**

इस तरह, कमला तुम्हारा अब तक का सारा जीवन ही त्याग की भावना से ही प्रेरित है।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः॥

यह श्लोक भी गीता के बारहवें अध्याय में है और इसमें भगवान श्री कृष्ण कह रहे है कि

हे अर्जुन! जिससे किसी को कष्ट नहीं पहुँचता तथा जो अन्य किसी के द्वारा विचलित नहीं होते, जो सुख-दुःख में, भय तथा चिंता में समभाव रहता है वह मुझे अत्यन्त प्रिय है।

हम सबको लगता है कि इस दुनिया में आकर उसी का जीवन सफल हुआ जिसने खूब सारा धन कमाया या खूब मान-सम्मान कमाया, जिसके पास बहुत सुख-सुविधाएं है या जिसे लाखों-करोड़ों लोग जानते है। हम सोचते हैं कि ईश्वर को वही भक्त याद रहता है जो बहुत सारा दान करता है या रोज व्रत-उपवास रखता है या नंगे पैर मिलों दूर की तीर्थ यात्राएँ करता है लेकिन गीता में स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने बताया है कि उन्हें किस तरह के लोग प्रिय हैं-

"सबसे पहले जो किसी को कष्ट नहीं पहुँचाते हैं। कष्ट पहुँचाने का अर्थ किसी को मारना ही नहीं होता, अपनी बातों और विचारों से भी हम किसी का दिल दुखा सकते हैं। अपने कर्मों के जरिये भी हम किसी का बुरा कर सकते हैं। इसीलिए जो किसी भी तरह मन, वचन या कर्म से किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता, ऐसा व्यक्ति मुझे यानी भगवान श्री कृष्ण को प्रिय है जो अन्य किसी के द्वारा परेशान (डिस्टर्ब) नहीं होता, मतलब अगर किसी ने जाने-अनजाने आपका दिल दुखाने वाला काम कर दिया या कोई बात कह दी लेकिन आपने इसका बुरा नहीं माना। उस व्यक्ति के प्रति कोई बुरा भाव अपने मन में नहीं लाए तो आप मुझे यानी भगवान श्री कृष्ण को प्रिय लगोगे। सुख-दुःख में, भय और चिंता में जो एक जैसी मानसिक स्थिति में रहे अर्थात् स्थितिप्रज्ञ रहें, न सुख में उछले और न दुःख में डुबने लगे, ऐसा व्यक्ति मुझे बहुत प्रिय होता है।"

- तो कमला! अब मुझे बताओ, क्या इसमें कहीं ये बात है जो तुम्हें लगे कि तुम ईश्वर को प्रिय नहीं हो। तुमने तो गीता में भगवान श्री कृष्ण की कही इन शर्तों का हमेशा पालन किया है, तो फिर तुम्हारा जीवन कैसे व्यर्थ हुआ। तुम्हारा जीवन तो हम सबसे ज्यादा सफल है क्योंकि ये तुम्हारे नाम की ही तरह सरल है। इसमें

- तो कमला! अब मुझे बताओ, क्या इसमें कहीं ये बात है जो तुम्हें लगे कि तुम ईश्वर को प्रिय नहीं हो। तुमने तो गीता में भगवान श्री कृष्ण की कही इन शर्तों का हमेशा पालन किया है, तो फिर तुम्हारा जीवन कैसे व्यर्थ हुआ। तुम्हारा जीवन तो हम सबसे ज्यादा सफल है क्योंकि ये तुम्हारे नाम की ही तरह सरल है। इसमें किसी प्रकार का छल-कपट नहीं है। कमला, सबकी अपना-अपनी साधना होती है, तुम्हारी भी है इसीलिए अपने मन से सारे संशय और सारी हीन भावना निकाल दो।

पंडित जी की बातों ने कमला जी के मन से संशय के सारे बादल हटा दिए। वो अब संतुष्ट दिख रही थीं, उनके प्रश्नों के जवाब उन्हें मिल चुके थे। परन्तु, पंडित जी खुश नहीं थे। उन्हें कमला के दुःख को न समझने के अपराधबोध ने घेर लिया था। अचानक उन्हें लगने लगा कि उन्हें अपने गीता-ज्ञान का अहंकार हो चला था जिसकी वजह से उन्होंने अपनी पत्नी के मन में पल रहे दुःख को महसूस तक नहीं किया। गीता तो अपने आप की खोज करना सिखाती है। अपने हर भाव को महसूस करके सही और गलत की पहचान करना सिखाती है। फिर पंडित जी से इतनी बड़ी चूक कैसे होती रही कि जो उनके अस्तित्व का आधा हिस्सा है, उनकी जीवन-संगिनी है वो उनके होते हुए भी अकेले अपने मन में अपनी हीनभावना का दंश लेकर जीती रही। उनसे भूल तो हुई है और उसके सुधार के लिए भी उन्हें गीता से ही सहायता मिलेगी। कहीं न कहीं, किसी न किसी श्लोक में ऐसा कुछ जरूर होगा जो उनके मन से इस बोझ को उतारकर इस भूल से सुधार की राह बताएगा। ये सोचकर पंडित जी ने अपनी श्रीमदभागवत् गीता खोल ली और मन ही मन भगवान श्री कृष्ण से अनुरोध किया कि हमेशा की तरह उन्हें सही राह दिखाएँ...।

उद्यमिता

अंशुबाला

उद्यमिता आर्थिक मूल्य का निर्माण या निष्कर्षण है। इस परिभाषा के साथ उद्यमशीलता को ऐसे परिवर्तन के रूप में देखा जाता है जिसमें आमतौर पर एक व्यवसाय शुरू करने के सामान्य जोखिम से अधिक जोखिम होता है। उद्यमिता में सामान्य आर्थिक मूल्यों के अलावा अन्य मूल्य भी शामिल हो सकते हैं।

समस्याओं को हल करने की प्रक्रिया है। उद्यमिता अब एक लोकप्रिय उपक्रम है जिसमें विचार, नए उद्यम निर्माण और लाभ संचालित मॉडल का अध्ययन करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

उद्यमी व्यक्ति वह होता है जो अधिकांश जोखिम उठाते हुए और अधिकांश लाभों को प्राप्त करने का

वित्तीय जोखिम लेते हुए लाभ प्राप्त करने के लिए एक नया व्यवसाय विकसित करने, व्यवस्थित करने और चलाने की प्रक्रिया ही उद्यमिता है। व्यापक अर्थ में, उद्यमशीलता प्रायः एक नवीन उत्पाद अथवा सेवा पेश करके या एक नया बाजार बनाकर हमारे समाज की

आनंद लेते हुए एक नया व्यवसाय बनाता है। व्यवसाय स्थापित करने की प्रक्रिया को उद्यमिता के नाम से जाना जाता है।

उद्यमिता उन संसाधनों में से एक है जिसे अर्थशास्त्री उत्पादन के अभिन्न अंग के रूप में वर्गीकृत करते हैं। अन्य तीन अंग हैं- भूमि/प्राकृतिक संसाधन, श्रम और पूंजी।

एक उद्यमी सामान बनाने व सेवाएँ प्रदान करने के लिए ही इन्हें जोड़ता है। वे आमतौर पर एक व्यवसाय की योजना बनाते हैं, श्रमिकों को नियुक्त करते हैं, संसाधन और वित्तपोषण प्राप्त करते हैं; व्यवसाय के लिए नेतृत्व और प्रबंधन प्रदान करते हैं। अपनी कंपनी बनाते समय उद्यमियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। विद्वानों का मानना है कि नौकरशाही को काबू में रखना, योग्य लोगों को काम पर लगाना और वित्तपोषण प्राप्त करना सबसे चुनौतीपूर्ण काम है। हर उद्यमी एक जैसा नहीं होता है और सभी के लक्ष्य एक जैसे नहीं होते हैं। उद्यमियों के निम्नलिखित प्रकार है-

1. निर्माता: ये कम समय में उल्लेखनीय व्यवसाय बनाना चाहते हैं। ये आमतौर पर पहले दो से चार वर्षों में राजस्व के रूप में बड़ी राशि उत्पन्न करते हैं। फिर 100 करोड़ या उससे अधिक तक अपना राजस्व बढ़ाते हैं। ये उद्यमी सर्वोत्तम प्रतिभाओं को काम पर रखकर और सर्वोत्तम निवेशकों को तलाश कर एक मजबूत बुनियादी ढाँचा तैयार करना चाहते हैं। कभी-कभी उनका स्वभाव मनमौजी होता है जो उनकी इच्छा के अनुसार तेज विकास के लिए उपयुक्त होता है लेकिन व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों को कठिन बना सकता है।

2. अवसरवादी: ये उद्यमी आशावादी व्यक्ति होते हैं जिनमें वित्तीय अवसरों को चुनने, सही समय पर प्रवेश करने, विकास के टाइमबोर्ड पर बने रहने और जब व्यवसाय अपने चरम पर पहुँच जाता है तो व्यवसाय से बाहर निकलने की क्षमता से युक्त होते हैं। इस प्रकार के उद्यमी मुनाफे और अपने द्वारा बनाई गई संपत्ति को लेकर चिंतित रहते हैं इसलिए वे उन विचारों की ओर आकर्षित होते हैं जहां वे अवशिष्ट या नई आय का सृजन कर सकते हैं। अवसरवादी उद्यमी आवेगी हो सकते हैं क्योंकि वे सही समय पर अवसर की तलाश कर रहे होते हैं।

3. नवप्रवर्तक: नवप्रवर्तक वे दुर्लभ व्यक्ति होते हैं जो एक महान विचार या अभूतपूर्व उत्पाद लेकर आते हैं। जैसे- थॉमस एल्वा एडिसन, स्टीव जॉब्स और मार्क जुकरबर्ग आदि। ऐसे व्यक्तियों ने अपनी पसंदीदा चीज पर काम किया और अपनी दूरदृष्टि और क्रांतिकारी विचारों के माध्यम से व्यावसायिक अवसर प्राप्त किए। पैसे पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय नवप्रवर्तक इस बात की अधिक परवाह करते हैं कि उनके उत्पादों और सेवाओं का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। ऐसे व्यक्ति व्यवसाय चलाने के लिए सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं क्योंकि ये विचार-उत्पादक

4. विशेषज्ञ: ये व्यक्ति विश्लेषणात्मक और जोखिम से दूर रहने वाले होते हैं। इनके पास शिक्षा या प्रशिक्षुता के माध्यम से प्राप्त किसी विशिष्ट क्षेत्र में मजबूत कौशल होता है। एक विशेषज्ञ उद्यमी नेटवर्किंग और रेफरल के माध्यम से अपने व्यवसाय का निर्माण करता है जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी उसका विकास एक निर्माता उद्यमी की तुलना में धीमा होता है।

जैसे विभिन्न प्रकार के उद्यमी हैं उसी तरह से विभिन्न प्रकार के व्यवसाय होते हैं। उद्यमिता के विभिन्न प्रकार नीचे दिए गए हैं-

1. लघु व्यवसाय: लघु व्यवसाय उद्यमिता से तात्पर्य किसी व्यवसाय को बड़े समूह में बदले बिना या कई कड़ियों के बिना संचालन से है। इसके उदाहरण हैं- एक एकल रेस्तरां, एक किराए की दुकान, सामान या सेवाएँ बेचने के लिए एक दुकान इत्यादि। उद्यमी आमतौर पर पैसों का निवेश करके इन व्यवसायों से लाभ कमाते हैं। प्रायः उनके पास बाहरी पैसा नहीं होता है और वे बहुत जरूरी होने पर ऋण लेते हैं।

2. स्केलेबल स्टार्टअप: ये ऐसी कंपनियाँ हैं जो एक अनूठे विचार से शुरू होती हैं और जिनसे बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। जैसे- सिलिकान वैली। इस इस उद्यमों को आशा होती है कि सेवा के साथ कुछ नया किया जाए और कंपनी समय के साथ बढ़ती रहे। ऐसी कंपनियों को व्यापक प्रसार हेतु बड़े पैमाने पर पूंजी-निवेश की जरूरत होती है।

3. बड़ी कंपनी: बड़ी कंपनी उद्यमिता एक मौजूदा कंपनी के भीतर बनाया गया एक नया व्यवसाय प्रभाग है। मौजूदा कंपनी अन्य क्षेत्रों में शाखा लगाने के लिए अच्छी स्थिति में हो सकती है या किसी नई तकनीक में शामिल होने के लिए अच्छी स्थिति में हो सकती है। ये कंपनियाँ या तो नए बाज़ारों की तलाश करती हैं या नए विचारों के साथ अपने प्रबंधन के पास जाती हैं।

4. सामाजिक उद्यमिता: सामाजिक उद्यमिता का लक्ष्य समाज और मानव जाति के लिए लाभ पैदा करना है। व्यवसाय का यह रूप अपने उत्पादों और सेवाओं के माध्यम से समुदायों या पर्यावरण की मदद करने पर केन्द्रित है। मुनाफा कमाने के बजाय इनका उद्देश्य दुनिया की मदद करना है।

अर्थशास्त्र की भाषा में एक उद्यमी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में एक समन्वय एजेंट की तरह काम करता है। यह समन्वय संसाधनों को नए संभावित लाभ के अवसरों की ओर मोड़ने का काम करता है।

उद्यमी, पूंजी निर्माण को बढ़ावा देने के लिए मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार के विभिन्न संसाधनों को स्थानांतरित करता है। बाजार की अनिश्चितता के बीच यह उद्यमी ही है जो वास्तव में अनिश्चितता को दूर कर सकता है क्योंकि वे निर्णय लेते हैं और जोखिम उठाते हैं। स्थापित उपक्रमों को उद्यमियों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो प्रायः उन्हें अनुसंधान और विकास के नवीन प्रयासों की ओर उन्मुख करता है। आर्थिक शब्दावली में कहें तो उद्यमी स्थिर-अवस्था संतुलन के पथ को बाधित करता है। उद्यमिता को बढ़ावा देने से अर्थव्यवस्था और समाज पर कई तरह से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शुरुआत में उद्यमी नए व्यवसाय बनाते हैं; वे वस्तुओं और सेवाओं का आविष्कार करते हैं जिसके परिणामस्वरूप रोजगार मिलता है और विकास को गति मिलती है। उदाहरण के लिए 1990 के दशक में भारत में कुछ सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों के शुरू होने के बाद कॉल सेंटर संचालन प्रारम्भ हुआ, हार्डवेयर उद्योगों की स्थापना भी होने लगी। सहायक उद्योगों का भी तेजी से विकास हुआ।

उद्यमी सकल राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मौजूदा व्यवसाय अपने बाजारों तक ही सीमित रह सकते हैं लेकिन नए उत्पाद और सेवाएँ एक नए बाजार को जन्म देते हैं जिससे नई परिसंपत्तियों का सृजन होता है और विकास को गति मिलती है। बढ़ा हुआ रोजगार और उच्च कमाई देश के कर आधार में योगदान देते हैं जिससे सार्वजनिक परियोजनाओं पर अधिक खर्च संभव हो पाता है। उद्यमी सामाजिक परिवर्तन भी लाते हैं। वे अद्वितीय आविष्कारों के माध्यम से परम्पराओं को तोड़ते हैं और मौजूदा तकनीकी और प्रणाली पर हमारी निर्भरता घटाते हैं और कभी-कभी उन्हें अप्रचलित बना देते हैं। उदाहरण के लिए स्मार्टफोन और अप्लीकेशन आदि ने दुनियाभर में कार्यसंस्कृति और जीवनशैली को गहरे तक प्रभावित किया है। उद्यमी सामुदायिक परियोजनाओं में निवेश करते हैं और चैरिटी संस्थाओं व गैर-सरकारी संगठनों की मदद करते हैं। उदाहरण के लिए बिल गेट्स ने अपनी काफी संपत्ति का उपयोग शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए किया है। शोध से पता चलता है कि स्वरोजगार का उच्च स्तर आर्थिक विकास को रोक सकता है। यदि उद्यमिता को ठीक से विनियमित नहीं किया जाता है तो यह अनुचित बाजार प्रथाओं और भ्रष्टाचार को जन्म दे सकता है। बहुत से उद्यमी समाज में आय संबंधी असमानताएँ पैदा कर सकते हैं।

कैलिफोर्निया की सिलिकॉन वैली को प्रायः एक अच्छी तरह से कार्यशील उद्यमी के अनुकूल माहौल के उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जाता है। इस क्षेत्र में अच्छी तरह से विकसित उद्यम पूंजी आधार, तकनीकी शिक्षा में विशिष्ट प्रतिभाओं का पूल और नए उद्यमों को बढ़ावा देने की सरकारी और गैर-सरकारी कार्यक्रमों की मौजूदगी है। कुल मिलाकर देखा जाए तो उद्यमिता, नवाचार और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है इसलिए दुनियाभर की सरकारें उद्यमिता को अपनी विकास नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रही हैं। इसके लिए सरकारें आमतौर पर उद्यमशीलता के अनुकूल माहौल तैयार करने में अपना योगदान देती हैं जिसमें स्वयं उद्यमी, सरकार प्रायोजित सहायता कार्यक्रम, गैर-सरकारी संगठन और उद्यम पूंजीपति आदि शामिल हो सकते हैं।

अंशुबाला/लेखाकार

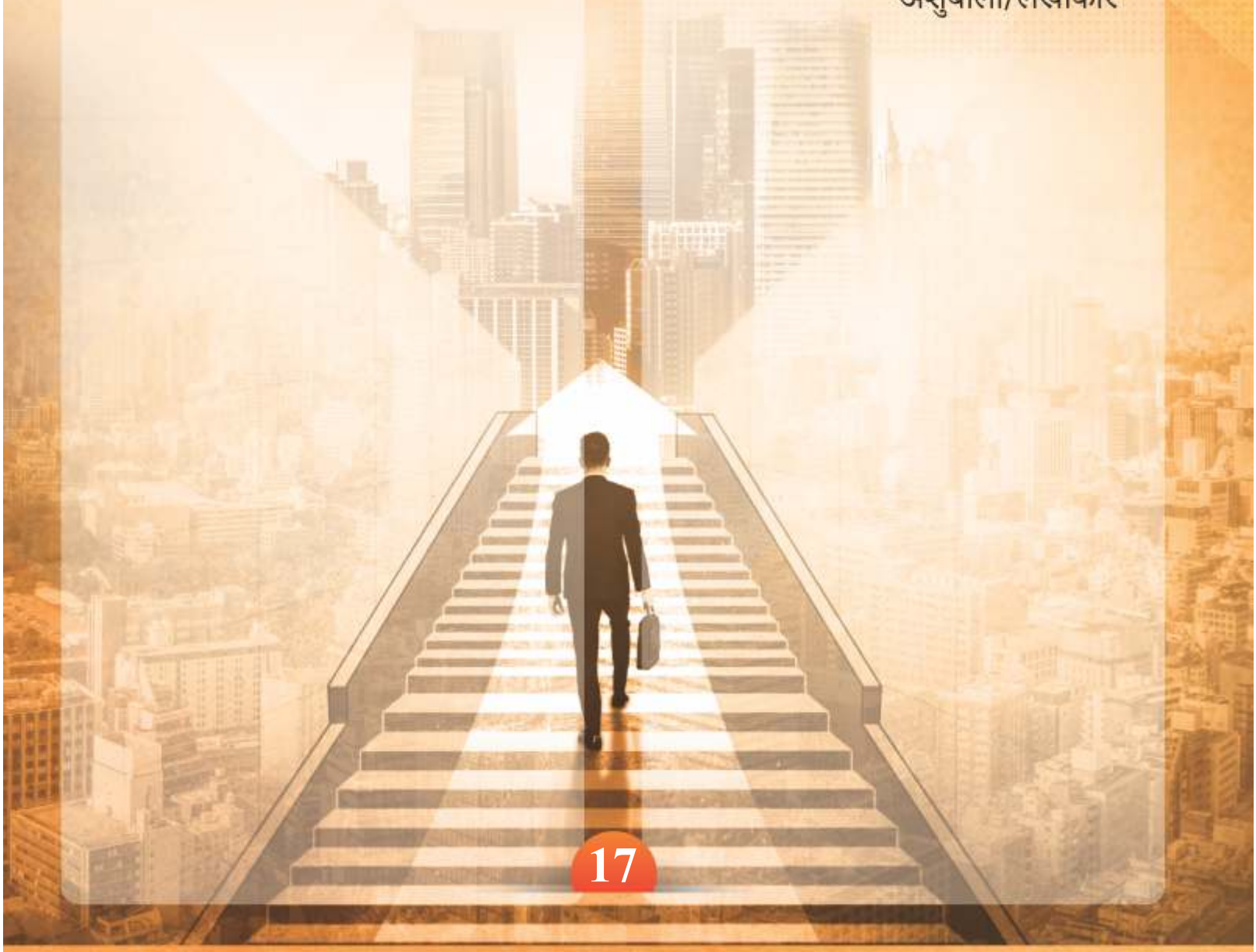

सूखे रंग की डिबिया

चंदन कुमार बढ़ई

दुबला-पतला, लंबा कद। उलझे सफेद बाल जो उसकी गर्दन छू रहे थे। उसकी पीठ झुकी और कंधे थके से लग रहे थे। उसकी आंखों पर एक पुराना चश्मा चढ़ा था। चश्मे का शीशा मटमैला, पीला-सा दिख रहा था। किसी को आश्चर्य होगा कि उस गंदले शीशे से भला वह कैसे देखता होगा! वह घिसे कुर्ते पजामे में बैठा चाय सुड़क रहा था। चाय की टपरी पर लोगों की आवाजाही थी। वह बेफिक्री से दो उंगलियों से कांच का प्याला थामे, चाय के घूंट भर रहा था। दिमाग पर बहुत जोर देकर भी जब मुझे याद नहीं आया कि उस कृषकाय वृद्ध को मैंने पहले कहां देखा था तो मैंने उनसे पूछ ही लिया।

"आपका चेहरा कुछ जाना-पहचाना लग रहा है। कहाँ देखा याद नहीं आ रहा।"

एक नजर मेरी ओर देखकर वह अपनी सारी बेज़ारियाँ समेटकर बोला, "सिनेमा हॉल में देखे होंगे। मैं पंकज टॉकीज में साइकिल जमा लेने का काम करता हूँ।"

पंकज टॉकीज में मैंने कभी सिनेमा नहीं देखा। दरअसल इस शहर में मैं करीब बीस साल के बाद आया हूँ। यह शहर मेरा ननिहाल है। यहाँ मेरा बचपन और किशोरावस्था बीती। मैट्रिक की परीक्षा मैंने इसी शहर से पास थी। फिर आगे की पढ़ाई करने माता-पिता के पास कोलकाता चला गया।

"पंकज टॉकीज में नहीं, आपको मैंने कहीं और देखा है।"

दरअसल मैं यहां कई सालों के बाद आया हूँ। कई चेहरे मुझे जाने पहचाने से तो लगते हैं पर चेहरे से ज्यादा कुछ याद नहीं आता। बड़ा अजीब लगता है तब।

वह बूढ़ा कुछ देर चाय का प्याला हाथ में लिए चुप रहा, फिर प्याले को बेंच पर रखकर बोला, "हो सकता है कि आपने मुझसे कभी साइन बोर्ड बनवाया होगा या कोई पोस्टर वगैरह।"

मेरे दिमाग में बिजली सी कौंध गई। मैं जोर से बोल पड़ा, "याद आया मीना बाजार में आपकी दुकान थी। आप पेंटर का काम करते थे न। साइन बोर्ड लिखते थे, सिनेमा के पोस्टर बनाते थे।"

उस बूढ़े को मैंने अब जरा गौर से देखा। इन वर्षों में वह काफी बदल चुका था। चेहरा धूप में झुलसकर ताम्बई हो गया था। बाल-दाढ़ी बेतरतीब बढ़े थे। आंखों में एक स्थायी निस्तेज भाव था। मानों युद्ध में पराजित होकर वह अपनी पराजय का शोक मना रहा है।

मेरे पिताजी की नौकरी ऐसी थी कि उनका ट्रांसफर प्रत्येक साल एक-दो बार अलग अलग शहरों में हो जाता था। उनकी तैनाती भारत के विभिन्न राज्यों में होती थी। इसलिए मैं अपनी माँ के साथ ननिहाल रहता था। मेरे नाना के घर से करीब एक किलोमीटर दूर मेरा स्कूल था। मैं अपने सहपाठियों के साथ पैदल ही स्कूल आया जाया करता था। स्कूल की ओर जाते अक्सर मेरा ध्यान मीना बाजार के एक दुकान पर टिक जाता था। एक पेंटर की दुकान। पेंटर एक छोटे से स्टूल पर बैठे पूरी तन्मयता से ब्रश को रंगों में डुबो डुबोकर साइन बोर्ड लिखता। कभी वह 'गुप्ता जेनरल स्टोर्स' में रंग भरता, कभी 'प्रभात मेडिकल हॉल' में। दुकान के कोने में आधे-अधूरे लिखे 'लक्ष्मी वस्त्रालय' 'सिंह हार्डवेयर' पड़े रहते। उसके लिखे अक्षर थे छपाई के अक्षर से भी सुंदर। अलग-अलग रंगों में लिखे, नाना डिजाइन के।

मैं अक्सर वहाँ ठहर जाता था। टीन के बोर्ड पर रेंगती उसकी कूची को देखता रहता। सोचता, काश मैं भी कागज पर कलम से इतना सुंदर लिख पाता! वह सिनेमा के पोस्टर और कट आउट भी बनाता था। काली जैकेट ,जींस और हैट पहना नायक अपनी नायिका को कंधों पर उठाए है। सिनेमा का नाम अभी लिखा जाना बाकी है। मैं अपने दोस्तों को चुनौती देता, 'बताओ जरा। ये हीरो कौन है?"

"शाहरुख खान। दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे।"

मेरा दोस्त नायक को पहचानने के साथ-साथ सिनेमा का नाम भी बता देता। फ़िल्म सुपरहिट जाने पर सिनेमा हॉल में बड़े बड़े पोस्टर और कट आउट लगते थे। उसके दुकान के पास ठहरना अपने आप में मौज थी। लहूलुहान नायक पिस्तौल ताने खड़ा है। काला चश्मा लगाए एक अन्य नायक का चेहरा बगल से उभर आया है। नायिका एक खास अदा से निढाल पड़ी है। मुफ्त का मनोरंजन। बिन टिकट किसी कला दीर्घा की यात्रा। वह वाकई कलाकार है। उसे रंगों की पहचान है। उसकी सधी उंगलियों से बनी तस्वीरें

सजीव हो उठती हैं। उसके लिखे अक्षरों की लकीरों और रंगों के शेड्स से कई आयाम फूटते हैं। कभी कभी मेरा मन करता था कि उसका शिष्य बन उससे रंगों की बारीकियां सीखूं। अपनी लिखावट उसके जैसा सुंदर करने का यत्न करूँ। रंगों में कूची डुबोकर अपनी कल्पना में रंग भरूँ।

मैंने उस पेंटर से कभी बात नहीं की। साहस नहीं हुआ, ऐसी बात नहीं है। मैं उसे सदा अपने काम में तल्लीन पाया। छोटी उंगली को बोर्ड की सतह पर टिकाकर, तीन उंगलियों से कूची को आहिस्ते थामे, अपने काम में मग्न। उसकी आँखों में एक ऐसी प्रशांति रहती थी, मानों कोई योगी अपनी साधना के उच्चतम अवस्था में पहुँचा है। उसे टोका नहीं जा सकता। उसके कार्य में बाधा उत्पन्न नहीं की जा सकती। इसलिए उससे कभी मेरी बात नहीं हो सकी। बूढ़ा चाय पी चुका था। वह एक पैर दूसरे पर चढ़ाए एक बेंच पर बैठा था। उठकर जाने की भी कोई जल्दी नहीं थी।

मैंने उनसे पूछा, 'आज ड्यूटी नहीं गए?'

बूढ़ा बोला, 'शो शुरू हो चुका है। इधर चाय पीने चला आया। एक घंटे में फ़िल्म खत्म होगी। तब लोग साइकिल लेने आएंगे।' फ़िल्म शुरू होने से पहले दर्शकों की साइकिलें जमा लेना। फिर ढाई से तीन घंटे तक शो खत्म होने की प्रतीक्षा करना। सही टोकन का मिलान कर साइकिल वापिस करना। यही इस बूढ़े की दिनचर्या थी।

मैंने आहिस्ते पूछा, "पेंटिंग का काम क्यों छोड़ दिया?"

वह कुछ ठहरकर बोला, 'पेंटिंग का काम बंद हो गया है। कौन पेंटर से साईन बोर्ड बनवाता है आजकल। देखते नहीं, दुकानों के साइनबोर्ड। सब प्रिंट वाले मिलेंगे। बैनर, पोस्टर सब प्रिंट मशीन से बनते हैं। सिनेमा वाले भी अब पेंटर से पोस्टर नहीं बनवाते। कम्प्यूटर से चलने वाले मशीनों का जमाना है।"

"आप ऐसी मशीन क्यों नहीं लगा लेते। वक्त के साथ तो बदलना जरूरी है।"

बूढ़े ने अपनी ऐनक उतारी। उसके धुंधले कांच को अपने कुर्ते के किनारे से पोंछते हुए बोला, 'भैया उन मशीनों की कीमत लाखों में है। मैंने दस बरस अपने उस्ताद के साथ रहकर पेंटिंग का काम सीखा। अब कंप्यूटर के कुछ बटन दबाने से ही सब मिनटों में छपकर तैयार हो जाता है। क्या फायदा हुआ बरसों हुनर सीखने का।"

"समय के साथ चीजें बदलती हैं। कुछ सालों में और कोई नई चीज आ जाएगी। तरक्की ऐसे ही तो होती है।" मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की।

बूढ़े ने हामी भरी। "बदलाव तो आता है। हम नहीं बदल सके, सो पीछे रह गए। अच्छा अब चलता हूँ। शो खत्म होने टाइम हो गया है। ऐसे भी इस फालतू पिक्चर को कौन पूरी देखेगा। लोग पहले ही निकलेंगे।"

मैं उस छोटे से कस्बे के बाजार की टोह ले रहा था। दुकानों के साइनबोर्ड, विज्ञापन बैनर, सिनेमा के पोस्टर, कट आउट सब के सब प्रिंट वाले। शहर बदल रहा है पर इस बदलाव की सुध आज लगी।

चंदन कुमार बढ़ई
हिंदी अधिकारी

क्लिकबेट

आरती शर्मा

इंटरनेट की वजह से पैदा हुए शब्दों की एक अलग ही दुनिया है। हिंदी भाषा में इनका मतलब समझना और समझा पाना जटिल कार्य होता है। ये शब्द ऐसे लिखे होते हैं जिनके अंग्रेजी रूपों का प्रचलन अधिक होता है तथा हिंदी या अन्य किसी भाषा में इनका अनुवाद करना एक चुनौती होती है। प्रोटोकाल, नेटवर्क, ब्राउज़र, यूजर, ऑनलाइन, ऑफलाइन, वेब पेज, सर्वर, टीजर, क्लिकबेट इत्यादि अनेक शब्द हैं जिन्हें इसी तरह उपयोग में लाना आसान होता है। क्लिकबेट, ऐसा ही शब्द है जो इंटरनेट की दुनिया में प्रचलित है।है कि अपने घर के लोगों की परेशानियों पर हमारी नजर ही नहीं पड़ती।

क्लिकबेट(Clickbait), अंग्रेजी भाषा के दो शब्दों क्लिक (Click) और बेट(Bait) से मिलकर बना है। क्लिक शब्द का अर्थ है- लिंक द्वारा इंटरनेट पर किसी नये पेज को खोलना या किसी वेबसाइट पर जाना। वहीं बेट शब्द का अर्थ है- प्रलोभन देना या जाल में फंसाना।अर्थात क्लिकबेट(Clickbait) का आशय है लोगों को प्रलोभन देकर किसी लिंक पर ले जाकर जाल में फंसाना। हालांकि क्लिकबेट की कोई सार्वभौमिक परिभाषा नहीं है। मरियम-वेब्स्टर शब्दकोश क्लिकबेट को इस तरह से परिभाषित करता है- "पाठकों को हाइपर लिंक पर क्लिक करने के लिए प्रेरित करने के लिए डिजाइन किया गया कुछ खास लिंक जो संदिग्ध मूल्य या रुचि की सामग्री की ओर ले जाता है।" वहीं डिक्शनरी डॉट कॉम लिखता है कि क्लिकबेट इंटरनेट पर एक सनसनीखेज शीर्षक या पाठ का टुकड़ा है जो लोगों को किसी अन्य वेबपेज पर एक लेख के लिंक का अनुसरण करने और लुभाने के लिए डिजाइन किया गया है। अतः क्लिकबेट की एक परिभाषित विशेषता उपयोगकर्ता को किसी लिंक पर क्लिक करने और हेरफेर करने के लिए प्रलोभन देना है।

क्लिकबेट एक टेक्स्ट या थंबनेल लिंक है जिसे ध्यान आकर्षित करने और उपयोगकर्ताओं को उस लिंक का अनुसरण करने और ऑनलाइन सामग्री के लिंक किए गए टुकड़े को पढ़ने, देखने या सुनने के हेतु लुभाने के लिए डिजाइन किया जाता है जो प्रायः भ्रामक और सनसनीखेज होता है। क्लिकबेट शीर्षक प्रायः ऐसे प्रलोभनों का उपयोग करके बेईमानी का तत्व जोड़ते हैं जो वितरित की जा रही सामग्री को सटीक रूप से नहीं दर्शाते हैं। चारा(Bait) प्रत्यय मछली पकड़ने के साथ एक सादृश्य बनाता है, जहां एक हुक द्वारा प्रलोभन (चारा) को छुपाया जाता है, जिसे मछली को यह आभास होता है कि यह निगलने के लिए एक वांछनीय खाद्य तत्व है। यहाँ चारा शब्द क्लिकबेट प्रक्रिया और मछली शब्द दर्शकों अथवा पाठकों को इंगित करता है।

इंटरनेट से पहले बैट-एंड-स्विच के नाम से जानी जाने वाली मार्केटिंग प्रथा ग्राहकों को लुभाने के लिए इसी तरह के बेईमानी भरे तरीकों का इस्तेमाल करती थी। क्लिकबेट भी इसी तरह का छल है। क्लिकबेट को हम निम्नलिखित उदाहरण से समझ सकते हैं- जैसे किसी यूजर को अपनी वेबसाइट पर पृष्ठदृश्य(Interface) को लुभावना बनाने के लिए टाइटल को बहुत ही आकर्षक शब्दों में लिखना पड़ता है ताकि अधिकांश लोग उसे पढ़कर उस वेबसाइट की ओर आकर्षित हों और उस पर क्लिक करें ताकि बनाने वाले यूजर को फायदा हो।

यूजर अपने स्वयं के उद्देश्य के लिए अथवा ऑनलाइन विज्ञापन राजस्व बढ़ाने के लिए ऐसा विज्ञापन दर्शाता है जिसका टाइटल और कंटेंट बिलकुल अलग होते हैं। यही प्रक्रिया क्लिकबेट कहलाती है। कोई यूजर अपनी वेबसाइट पर बाल उगाने के तरीकों के बारे में एक लेख लिखता है जिसमें पुराने तरीकों का उल्लेख है। पोस्ट लिखने के बाद यूजर उस ब्लॉग पोस्ट को कुछ इस तरह का शीर्षक देता है- 'एक रात में अपने बाल घुटनों से लंबे बनाएँ।' इसके बाद सोशल मीडिया पर इस पोस्ट को शेयर कर देता है। बालों के गिरने से चिंतित लोग जब ऐसी पोस्ट पढ़ते हैं तो उनके मन में उत्सुकता बढ़ जाती है और वह ये जानते हुए भी कि एक रात में घुटनों तक बाल बढ़ना संभव नहीं है, उस विज्ञापन पर क्लिक कर देता है जहां उसे कुछ भी नहीं मिलता है। इसी प्रकार बहुत सारे लोग उस वेबसाइट पर जाते हैं तो उसका ट्रैफिक कई गुना बढ़ जाता है। अब जरा विचार करें कि जो लोग उस वेबसाइट पर गये थे क्या उन्हें वो मिला जो वो चाहते

थे? नहीं .... इसका मतलब हुआ कि इस मामले में यूजर ने लोगों के साथ क्लिकबेट किया है।

क्लिकबेट का उपयोग ब्लॉगर, यूट्यूबर या फिर डिजिटल मार्केटों के द्वारा ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपनी वेबसाइट की ओर आकर्षित करने के लिए किया जाता है। यह आगंतुकों को लिंक की गई ऑनलाइन सामग्री को पढ़ने, देखने या सुनने के लिए लुभाने का एक तरीका है। हांलाकि यह संदिग्ध मूल्य या गुणवत्ता वाली सामग्री की ओर ले जाता है। क्लिकबेट में आमतौर पर निम्नलिखित विशेषताएँ शामिल रहती हैं-

1. एक ऐसी सामग्री जो दूसरों को सोशल मीडिया पर साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
2. सुर्खियां जो हँसी या क्रोध जैसी विशिष्ट और तीव्र भावनाओं को सामने लाती है।
3. छवियाँ या वीडियोज़ जो अद्वितीय या मनोरंजक हों।
4. ऐसी सामग्री जो पढ़ने और समझने में आसान हो।
5. सुर्खियां जो पाठकों की रुचि को जगाती हैं और उन्हें ज्यादा जानने के लिए प्रेरित करती हैं।
6. अप्रामाणिक सामग्री जिसमें एक एम्बेडेड वीडियो या एक लंबे टुकड़े का सारांश शामिल है जो अन्य प्लेटफॉर्म पर पाया जा सकता है।
7. पृष्ठदृश्य प्राप्त करने में क्लिकबेट मददगार है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में क्लिकबेट लेखकों द्वारा अपनाई गई तकनीकों को पीत पत्रकारिता से व्युत्पन्न माना जा सकता है जो किसी स्पष्ट शोधपूर्ण या किसी वैध खबर को प्रस्तुत नहीं करता है। इसके बजाय यह ध्यान आकर्षित करने वाली सुर्खियों का उपयोग करता है। इसमें अतिशयोक्ति वाले सनसनीखेज समाचार आदि शामिल हैं। ऐसी सनसनी भरी कहानियों का कारण चेकबुक पत्रकारिता नामक विवादास्पद प्रथा है जहां समाचार संवाददाता अपनी जानकारी की सच्चाई की पुष्टि किए बिना स्रोतों को भुगतान करते हैं। अमेरिका में इसे आमतौर पर एक अनैतिक प्रथा माना जाता है क्योंकि यह मशहूर हस्तियों और राजनेताओं को अप्रमाणित आरोपों का आसान निशाना बना देता है। वाशिंगटन पोस्ट के मशहूर लेखक हावर्ड कर्ट्ज के अनुसार इस फलती-फूलती टैबलाइड संस्कृति ने लाभ के लिए मशहूर हस्तियों के बारे में तीखी और सनसनीखेज कहानियों को शामिल करके समाचार की पुरानी परिभाषाओं को मिटा दिया है।

2014 तक वेब पर क्लिकबेट की सर्वव्यापकता के कारण इसके उपयोग के

खिलाफ प्रतिक्रिया शुरू हो गई थी। व्यंग्यात्मक अखबार 'द ओनियन' ने एक नई वेबसाइट क्लिकहोल लांच की जिसने अपवर्थी और बज़फीड जैसी क्लिकबेट वेबसाइटों की पैरोडी बनाई। अगस्त 2014 में फेसबुक ने घोषणा की कि वह क्लिकबेट के प्रभाव को कम करने के लिए तकनीकी उपाय कर रहा है। इसका सोशल नेटवर्क अन्य संकेतों के साथ क्लिकबेट को अन्य प्रकार की सामग्री से अलग के तरीके के रूप में उपयोगकर्ता द्वारा लिंक किए गए पेज पर जाने में बिताए गए समय का उपयोग करता है। विज्ञापन अवरोधक और विज्ञापन क्लिकों में सामान्य गिरावट ने क्लिकबेट मॉडल को भी प्रभावित किया क्योंकि वेबसाइटें प्रायोजित विज्ञापन और मूल विज्ञापन को ओर बढ़ीं जहां लेख की सामग्री क्लिक दर से अधिक महत्वपूर्ण थी।

साधारणतया क्लिकबेट करने से यूजर की वेबसाइट या ब्लॉग को बहुत नुकसान होता है जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

1. क्लिकबेट करने से लोगों का संबंधित वेबसाइट से भरोसा कम हो जाता है।
2. क्लिकबेट वाली वेबसाइट से लोग अपेक्षित जानकारी न मिलने के कारण जल्दी वेबसाइट छोड़ देते हैं जिससे उसका बाउंस रेट बढ़ता है और गूगल रैंकिंग गिरती है।
3. क्लिकबेट करने की सजा के रूप में संबंधित वेबसाइट गूगल में प्रतिबंधित की जा सकती है और लोग भी उसकी शिकायत कर सकते हैं।
4. वेबसाइट की डोमेन अथॉरिटी पर भी क्लिकबेट का असर पड़ता है।
5. वेबसाइट की विश्वसनीयता संदिग्ध हो जाती है।
6. क्लिकबेट से करने से वेबसाइट की अलेक्सा रैंक में कम अंतराल के लिए सुधार आता है लेकिन लंबे समय में यह रैंक बहुत नीचे चली जाती है।
7. क्लिकबेट प्रक्रिया के तहत लोगों को बहुत दिनों तक धोखे में नहीं रखा जा सकता है।

सही तरीके से किया गया क्लिकबेट लोगों का ध्यान आकर्षित करने और वेबसाइट पर ट्रैफिक लाने के प्रभावी तरीकों में से एक है। विपणक और लेखक पाठक को यह सोचने पर मजबूर करने के लिए क्लिकबेट शीर्षक बनाते हैं कि वे लिंक पर क्लिक करके कुछ नया सीखेंगे। नैतिक टिप्पणी पेज पर ट्रैफिक प्राप्त करने के लिए भ्रामक शीर्षक का उपयोग नहीं करती है। यह ऑनलाइन सफलता मापने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि किसी ब्लॉग या वेबसाइट पर लोगों द्वारा क्लिक नहीं किया जाता है तो निर्माता संभावित ग्राहकों से बातचीत का अवसर खो देता

है। क्लिकबेट रणनीतियों का उपयोग करने के समय निर्माताओं को अपने ग्राहकों के लिए आकर्षक बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित कर ऐसी सामग्री बनानी चाहिए जो उन्हें शिक्षित और उत्साहित करे। यदि उनका शीर्षक सामग्री से मिलता-जुलता रहेगा तो ब्लॉग निर्माता दर्शकों की नकारात्मक प्रतिक्रिया से बच सकते हैं। एक तरफ क्लिकबेट सफल डिजिटल मार्केटिंग रणनीति हो सकती है वहीं गलत होने पर यह संबंधित ब्रांड की छवि को खराब कर उनको नुकसान पहुंचा सकता है। कई सोशल मीडिया साइटों और सर्च इंजनों ने इससे बचने के लिए अपनी नीतियों में बदलाव किया है। मौजूदा दौर में क्लिकबेट, विज्ञापन आधारित पत्रकारिता व डिजिटल मीडिया का एक जांचा-परखा औज़ार बन गया है। सनसनीखेज हेडलाइंस के जरिए लोगों के अंदर की इच्छाओं को उकसाना और उन्हें स्टोरी क्लिक करने के लिए आकर्षित करना इस पत्रकारिता की पहचान बनता जा रहा है।

क्लिकबेट का उपयोग स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर भी बहुतायत में किया जाता है जो लक्षित-विज्ञापनों और वैयक्तिकरण के साथ पनपते हैं। इंटरनेशनल कंज़्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स शो में यूट्यूब ने खुलासा किया कि देखे गए अधिकांश वीडियो गूगल सर्च इंजन से नहीं बल्कि वैयक्तिक विज्ञापनों और अनुशंसा पेज से आए थे। यूट्यूब जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर जिसके प्रतिदिन 30 मिलियन से अधिक सक्रिय उपयोगकर्ता हैं जो वीडियो देखे जाते हैं उनमें वीडियो के शीर्षक या थंबनेल में क्लिकबेट होने की बहुत संभावना होती है जो ध्यान आकर्षित करते हैं और इसलिए दर्शकों द्वारा क्लिक किए जाते हैं। सही तरीके से किया गया क्लिकबेट लोगों का ध्यान आकर्षित करने और वेबसाइट पर ट्रैफिक लाने के प्रभावी तरीकों में से एक है। विपणक और लेखक पाठक को यह सोचने पर मजबूर करने के लिए क्लिकबेट शीर्षक बनाते हैं कि वे लिंक पर क्लिक करके कुछ नया सीखेंगे। नैतिक टिप्पणी पेज पर ट्रैफिक प्राप्त करने के लिए भ्रामक शीर्षक का उपयोग नहीं करती है। यह ऑनलाइन सफलता मापने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि किसी ब्लॉग या वेबसाइट पर लोगों द्वारा क्लिक नहीं किया जाता है तो निर्माता संभावित ग्राहकों से बातचीत का अवसर खो देता है।

आरती शर्मा/लेखाकार

सुरीली चिड़िया

सुस्मिता सरकार

ओशी ने मानों आज न सोने का प्रण लिया हो। कंबल से अपना सिर निकालकर वह लगातार बेसिर-पैर की बातें की जा रही थी, जैसा वह आमतौर पर करती है।

"मम्मी मैं क्लास वन में नहीं पढ़ना चाहती। मैं क्लास थ्री में पढ़ूंगी। मुझे क्लास थ्री का सब आता है। स्वीटी उसी क्लास में पढ़ती है, बी सेक्शन में। स्वीटी इज माय बेस्ट फ्रेंड। क्लास वन में मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं कब क्लास थ्री में जाऊंगी?"

तनु ने उसे डपटते हुए कहा, "अब सो जाओ। सुबह स्कूल जाना है। स्कूल के लिए सुबह उठ नहीं पाती। तब सोने की जिद करती हो।" तनु ने मुख्य द्वार के लॉक को पुनः चेक किया। सोने से पहले वह लॉक चेक करती है, किचन में गैस रेगुलेटर स्विच ऑफ करती है, घर के सभी लाइट्स ऑफ करती है। "हॉल में कोई नहीं है, पर लाईट ऑन है। ये मैना भी न कुछ खयाल नहीं रखती। अपने कमरे में सो रही होगी। कितनी बार कहा कि सोने से पहले हॉल और बालकनी के फैन-लाइट्स स्विच ऑफ कर दे। पर वह कुछ सुनती ही नहीं। दस बजते ही अपने बिस्तर में घुस जाती है। एक काम ठीक से नहीं करती। कुछ कहो तो काम छोड़कर चली जाएगी।" तनु बड़बड़ाते हुए सीढ़ी उतरने लगी। नीचे के छोटे कमरे में मैना बेसुध सोई थी। तनु का गुस्सा धीरे-धीरे उतरने लगा। वह मन ही मन सोची बेचारी सुबह छह बजे जागकर घर का कितना काम करती है। ओशी को संभालती है। थक जाती है बेचारी मैना।

ओशी की बातें अनवरत जारी थीं। वह कंबल में तनु से लिपटकर बोली, "मम्मी, आज लंबी कहानी सुनानी होगी। कल की कहानी का एकदम छोटी थी।"

अंधेरे कमरे में तनु भले ही ओशी को देख न पा रही हो पर वह जिस शिकायती लहजे में बोली, माँ की आंखों के सामने ओशी के शिकायती चेहरे का बिंब उभर आया। कहानीसुने बिना ओशी सोती ही नहीं थी। तनु कहानी कहने लगी, "बहुत समय पहले की बात है। एक राक्षस काली गुफा में रहता था। वह गुफा का मुंह बड़े से पत्थर से.....।"

"यह कहानी बहुत बार सुन चुकी हूँ। उसे राक्षस का प्राण एक भौंरे में होता है। कोई असली कहानी सुनाओ न।

तनु कुछ देर ठहरकर ओशी की उष्ण सांसों को अपने गले के पास महसूस करती रही।

तनु बोली, "अच्छा नई कहानी सुनो।"

ओशी नई कहानी सुनने माँ के और निकट आ गई।

"एक थी सुरीली चिड़िया। अल्हड़, बेफिक्र मस्ती में डूबी। वह खूब सुबह जग जाती थी। बकुल की टहनी पर बैठकर रियाज करती थी। कहीं से दो दाने चुगकर वह फुर्र हो जाती थी। नीले उन्मुक्त आकाश में अपने पंखों को खोल गुनगुनी धूप में उड़ती। अपने सुंदर पंखों पर इतराती। सरसों के पीले खेत के ऊपर, नदियों के ऊपर, घनी झाड़ियां के ऊपर और गांव की झोपड़ियां के ऊपर वह मंडराती रहती थी। अपने मीठे स्वर में गाती और फुदक-फुदककर नाचती।रखेगा भला।"

"उस चिड़िया का नाम क्या था?" ओशी ने पूछा।

तनु बोली, "उम्म...उस चिड़िया का नाम था बिन्नी।"

"बिन्नी नाम किसने रखा?" ओशी मानों सवाल के साथ तैयार रहती है।

"बिन्नी के माँ-बाप ने रखे थे, और कौन रखेगा भला।

"ओशी- "उसके माँ-बाप भी चिड़िया थे?"

तनु- "चिड़िया के माँ बाप चिड़िया ही होंगे न। अब कहानी सुनो।

"बिन्नी क्या सारा दिन गाती रहती थी?"

"गीत में ही उसके प्राण बसते थे।"

"वह सोती कहाँ थी?" ओशी के सवालों से तनु की कहानी के सूत्र उलझ जाते थे।

वह बोली, "बिन्नी अपने घोंसले में सोती थी, अपने मम्मी-पापा के साथ।

"मेरे पापा हमारे साथ क्यों नहीं रहते? वह बेंगलुरु क्यों रहते हैं? मैं भी मम्मी और पापा के साथ सोऊंगी।"

तनु कुछ नाराज होती हुई बोली, "तुम्हे कहानी सुननी है या नहीं?

"ओके कहानी सुनाओ। ओशी को कहानी सुननी है।

"हां तो बिन्नी का गाना वैसे तो सबको पसंद है, पर एक चिड़ा उसका गाना सुनने रोज उसके पास आने लगा।"

"यह चिड़ा क्या होता है?" ओशी भोलेपन ने से पूछा। तनु बोली, "चिड़ा मतलब लड़का-चिड़िया।"

"उस चिड़े नाम क्या था?" ओशी ने पूछा।

तनु कुछ सोचकर बोली, "उसका नाम रॉकी था। रॉकी को बिन्नी के सारे गाने बहुत पसंद थे। वह सारा दिन बिन्नी के पीछे-पीछे घूमता रहता था। उसके गीत की प्रशंसा करता था। वह कभी बिन्नी के लिए कभी बादाम चुगकर लाता था। कभी मीठे फल लाकर देता था। बिन्नी भी रॉकी को पसंद करने लगी।" कभी मीठे फल लाकर देता था। बिन्नी भी रॉकी को पसंद करने लगी।""रॉकी और बिन्नी में शादी होगी, है न? मुझे पहले ही पता है। ओशी बीच में बोल पड़ी।

"हाँ उनकी शादी हो गई।" बिन्नी बहुत खुश हो गई। वह जंगल को लाँघकर, पहाड़ के दूसरे छोर जाकर, नदी को पार कर, सुदूर फूलों की घाटी में जाकर गाना चाहती थी।

वह चाहती थी कि नदी, झरनें, फूल, भौंरें सभी को गीत सुना आए। रॉकी उसके साथ चले। रॉकी का साथ पाकर वह निर्भय वहां जा सकती थी। पर रॉकी को यह सब पसंद नहीं था।

ओशी- "क्यों रॉकी तो बिन्नी के गीत पसंद करता था। तनु बोली, "रॉकी ने साफ कह दिया कि बिन्नी सिर्फ उसके लिए ही गाएगी। उसके सामने ही गाएगी। धीरे-धीरे बिन्नी के जंगल, पहाड़, झरने, फूल सब छूट गए। वह दिन, महीने साल रॉकी के घोसले में बैठी गाती रही। उसका सुर बिगड़ गया था। गीत के बोल भूल सी गई थी। रॉकी भी अब बिन्नी से कटा-कटा रहने लगा था। उसे अब बिन्नी के गीत अच्छे नहीं लगते।"तनु कुछ देर चुप रही। वह अक्सर कहानी कहते कहते सो जाती थी। ओशी उसे झिंझोड़ते हुए बोली,"बोलो न मम्मी फिर क्या हुआ? सो गई क्या? अरे! तुम रो रही हो मम्मी!" तनु के गालों से लुढ़क आईं आँसू की धार ओशी के चेहरे तक बह आई थी।तनु भरे गले से बोली, "नहीं..नहीं। अच्छा यह हुआ कि रॉकी एक दिन बिन्नी को छोड़कर दूर कहीं चला गया। बिन्नी उस पेड़ का पता जानती थी, जहाँ रॉकी रहता था। पर वह रॉकी को बुलाने नहीं गई। क्यों जाए भला। उसे रॉकी के बिना जीना सीखना होगा।"

ओशी बोली, "बिन्नी तो एकदम अकेली हो गई मम्मी।"

"नहीं बेटा। बिन्नी को एक सुंदर सी, प्यारी सी, नन्ही चिड़िया मिली। बिन्नी अब माँ बन गई है। वह अपनी छोटी सी चिड़िया की देखभाल करती है। जब उसकी नन्ही चिड़िया बड़ी हो जाएगी तो बिन्नी उसे उन नदियों, पहाड़ों, जंगलों और सुदूर फूलों की घाटियों के ऊपर उड़ना सिखाएगी। उसे फूलों और भंवरों को गाना गाकर सुनाना सिखाएगी। उसे खुले आसमान में गोते लगाना सिखाएगी।"

"उस नन्ही चिड़िया का नाम क्या है मम्मी?" तनु को न जाने क्यों हँसी आ गई। बोली, "उसका नाम है स्वीटी। ओशी विरोध में बोली, "नो-नो मम्मी। स्वीटी इज नॉट माय बेस्ट फ्रेंड। वह क्लास थ्री में पढ़ती है और मैं वन में। उस नन्ही चिड़िया का नाम है-ओशी।" कमरे में अंधेरा होने के बावजूद तनु को ओशी का उज्ज्वल और दिव्य चेहरा दिख रहा था। उसने उसे भींचकर अपने सीने से लगा लिया।

सुस्मिता सरकार/वरिष्ठ लेखाकार

गीतकार हसरत जयपुरी

रेवती रंजन पोद्दार

प्रिय पाठकों,

हमारी प्रतिष्ठित अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'वंदे मातरम' का यह 27वां अंक है। विगत 26वें अंक में मैंने अपने देश के महान गीतकार साहिर लुधियानवी को याद किया था और श्रद्धांजलि अर्पित की थी। मैंने इस अंक में महान गीतकार हसरत जयपुरी को याद करते हुए उनके की गीतों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

हसरत जयपुरी का जन्म 1922 में राजस्थान के जयपुर शहर में हुआ था। उनका नाम इकबाल हुसैन रखा गया था, बाद में हसरत जयपुरी नाम पड़ा। उनके दादा फ़िदा हुसैन ने उन्हें उर्दू और फारसी की शिक्षा दी। हसरत जयपुरी ने उर्दू-काव्य में भी लेखन कार्य किया। अपने महान रचनाकर्म के लिए वे हमेशा हमारी यादों में रहेंगे। हसरत जयपुरी ने हिंदी और उर्दू में सैकड़ों गीत रचे हैं जिनमें से बहुत सारे गीत 1955 से 1971 के दौरान फिल्मों के माध्यम से हमारे सामने आते हैं। मैंने यहाँ पर बॉलीवुड में फिल्माए गए उनके कुछ महत्वपूर्ण और लोकप्रिय गीतों की चर्चा की है।

वर्ष 1956 में राजकपूर द्वारा बनाई गई फिल्म 'चोरी-चोरी' में मन्ना डे और लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ और नरगिस और राजकपूर द्वारा अभिनीत एक गीत **'आ जा सनम मधुर चाँदनी में हम'** बहुत लोकप्रिय हुआ। हसरत जयपुरी द्वारा रचित यह गीत आज भी बहुत लोकप्रिय है।

वर्ष 1959 में देवानंद और माला सिन्हा अभिनीत फिल्म 'लव मैरेज' में हसरत जयपुरी द्वारा रचित और शंकर-जयकिशन द्वारा संगीतबद्ध गीत 'धीरे-धीरे चल चाँद गगन में' बहुत लोकप्रिय हुआ। इसे मोहम्मद रफी व लता मंगेशकर द्वारा गाया गया था।

वर्ष 1961 में देवानंद और आशा पारीख अभिनीत फिल्म 'जब प्यार किसी से होता है' के लिए हसरत जयपुरी द्वारा रचित गीत 'सौ साल पहले मुझे तुमसे प्यार था, आज भी है और कल भी रहेगा' बहुत लोकप्रिय हुआ। जी हाँ, आज भी इस गाने से हम सबको उतना ही प्यार है।

हसरत जयपुरी के अधिकांश गीतों के लिए शंकर-जयकिशन द्वारा ही संगीत दिया गया है।

वर्ष 1961 में शम्मी कपूर व सायराबानो अभिनीत फिल्म 'जंगली' में हसरत जयपुरी द्वारा लिखे गए **चाहे कोई मुझे जंगली** कहे और **अहसान तेरा होगा मुझ पर** जैसे गीतों ने संगीत-प्रेमियों को झूमने के लिए विवश कर दिया था।

हसरत जयपुरी द्वारा किशोरावस्था में पत्नी के लिए लिखे गए पत्र की कुछ पंक्तियाँ **'ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर तुम नाराज ना होना'** आगे चलकर 1961 में ही प्रदर्शित की गई फिल्म 'संगम' का लोकप्रिय गीत बन गईं।

वर्ष 1965 में राजेन्द्र कुमार और साधना अभिनीत फिल्म 'आरज़ू' में हसरत जयपुरी द्वारा लिखा गया और लता मंगेशकर द्वारा गाया गया गीत **'अजी रूठकर अब कहाँ जाइएगा'** व **'बेदर्दी बालमा तुझको मेरा मन याद करता है'** बहुत लोकप्रिय हुआ।

वर्ष 1966 में प्रदर्शित फिल्म 'तीसरी कसम' में मुकेश द्वारा गाया गया एक गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ- दुनिया बनाने वाले, क्या तेरे मन में समायी, काहें को दुनिया बनायी। दार्शनिकता से भरा हुआ और मुकेश की मधुर आवाज से युक्त ये गीत हसरत जयपुरी ने ही लिखा था। हसरत जयपुरी ने वर्ष 1968 में राजेन्द्र कुमार अभिनीत फिल्म 'झुक गया आसमाँ' के लिए रोमांटिक गीत भी लिखे।

वर्ष 1968 में आशा पारीख अभिनीत फिल्म 'शिकार' के लिए हसरत जयपुरी ने लीक से हटकर **'पर्दे में रहने दो पर्दा न उठाओ'** गीत लिखा। आशा भोसले द्वारा गाया गया गीत लोकप्रिय रहा। 1969 में प्रदर्शित फिल्म 'प्यार ही प्यार' के लिए लिखे गए उनके गीत **'मैं कहीं कवि न बन जाऊँ तेरे प्यार में कविता'** को धर्मेन्द्र और वैजयंतीमाला पर फिल्माया गया था। मोहम्मद रफी की आवाज में यह गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ और आज भी यह गीत सभी को आकर्षित करता है।

राजकपूर की बहुचर्चित फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में हसरत जयपुरी के लिखे और मुकेश द्वारा गाए गीत 'जाने कहाँ गए वो दिन, कहते थे तेरी राह में' को बहुत लोकप्रियता मिली। 1971 में हसरत जयपुरी के लिखे और शंकर-जयकिशन के संगीतबद्ध गीत को पहली बार किशोर कुमार ने अपनी आवाज दी।

राजेश खन्ना अभिनीत फिल्म का यह गीत 'जिंदगी एक सफर है सुहाना, यहाँ कल क्या हो किसने जाना' बहुत हिट हुआ और आज भी बहुत प्रचलित है।

हसरत जयपुरी ने बहुत सी सुपरहिट फिल्मों के लिए गाने लिखे। 1985 में रवींद्र जैन के संगीत निर्देशन में 'राम तेरी गंगा मैली' के लिए हसरत जयपुरी द्वारा लिखा गया व लता मंगेशकर की आवाज गाया गया गीत 'सुन सायबा सुन, प्यार की धुन' बहुत ही लोकप्रिय हुआ। हसरत जयपुरी के गीत हमारे लिए हमेशा ही यादगार बने रहेंगे।

रेवती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागीगण

हिंदी पखवाड़ा 2023 के दौरान आयोजित पोस्टर-बैनर प्रतियोगिता के प्रतिभागियों से संवाद करते हुए महालेखाकार महोदय

"हृदय की कोई भाषा नहीं है,
हृदय-हृदय से बातचीत करता है
और हिंदी हृदय की भाषा है।"

महात्मा गांधी

कार्तिक स्वामी मंदिर के दर्शन: भगवान का अपना निवास

सौमी बन्दयोपाध्याय

नवंबर 2022 में अपने माता-पिता के साथ कार्तिक स्वामी मंदिर की यात्रा मेरे लिए एक अनूठा, रोमांचकारी और यादगार अनुभव था, जिसे मैं अपने जीवन में कभी नहीं भूल सकती। कनक चौरी उत्तराखंड मे रुद्रप्रयाग से 40 किलोमीटर की दूरी पर समुद्रतल से लगभग 2800 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ से कार्तिक स्वामी मंदिर की यात्रा शुरू होती है। भगवान कार्तिक ऊंचे और राजसी हिमालय पर्वतमाला की मनोरम पृष्ठभूमि में एक पर्वत चोटी पर निवास करते हैं। यह उत्तर भारत में भगवान कार्तिक का एकमात्र मंदिर है। अगर आप एडवेंचर का शौक रखते हैं तो यहाँ ट्रेकिंग और हाइकिंग का आनंद भी ले सकते हैं। मंदिर से आप प्राकृतिक दृश्यों की खूबसूरती का जी भरकर आनंद उठा सकते हैं।

पहले दिन हमने किराए पर ली गई निजी कार से सर्द लेकिन सुखद सुबह के छः बजे हरिद्वार की कनक चौरी के रास्ते में हमने कई हरे-भरे और बर्फ से ढके पहाड़ों को पार किया। देवप्रयाग में हमने एक छोटा सा विश्राम किया और आलू पराठा का नाश्ता किया। हमारा दूसरा पड़ाव

रुद्रप्रयाग में था जो हरिद्वार से लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। वहाँ से हम कनक चौरी तक एक अलग रास्ते से आए थे। हरिद्वार से कनक चौरी तक की पूरी यात्रा में हमें हिमाच्छादित हिमालय पर्वतमाला की सम्मोहक सुंदरता आकर्षित करती रही। दोपहर करीब 12 बजे हम कनक चौरी पहुंचे जो कि उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में रुद्रप्रयाग-पोखरी रास्ते पर स्थित है।

भगवान कार्तिक स्वामी का मंदिर समुद्र तल से 3050 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कनक चौरी से लगभग 3.5 किलोमीटर की दूरी पर है। भगवान कार्तिक स्वामी के मंदिर के लिए के लिए ट्रेक कनक चौरी से शुरू होती है जो एकांत और कम आबादी वाला गाँव हैं। यहाँ कुछ दुकानें और कुछ घर हैं। लगभग 12.30 बजे दोपहर हमने हरे-भरे और टेढ़े-मेढ़े पहाड़ी रास्तों के माध्यम से मंदिर के लिए ट्रेकिंग शुरू की। इस ट्रेक पर पैदल चलना आसान नहीं था। ट्रेक, बंदरपूंछ, केदारनाथ डोम और चौखम्बा चोटियों का आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता है। लगभग 2.5 किलोमीटर चलने के बाद हम दो बजे पुजारी के घर पहुंचे जो कि मंदिर से एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पुजारी के बेटे ताजू पुरी ने गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया। ताजू पुरी ने हमें शानदार गढ़वाली भोजन परोसा जिसका स्वाद हम जीवनभर नहीं भूल सकते। कुछ देर आराम करने के बाद हमने फिर से अंतिम एक किलोमीटर के लिए पैदल यात्रा शुरू की। यहाँ से मंदिर तक के लिए लगभग 80 सीढ़ियाँ हैं। कार्तिक स्वामी मंदिर गहरी घाटी के साथ एक संकीर्ण रिज के अंत में स्थित है जो हिमालय का शानदार 360 डिग्री दृश्य प्रस्तुत करता है।

शीर्ष पर पहुँचने के बाद हम मंदिर और इसकी पृष्ठभूमि के राजसी दृश्य से मंत्रमुग्ध हो गए। मंदिर में लगभग दो घंटे के दौरान हमने भगवान कार्तिक स्वामी की पूजा की जो कि साधारण विधि-विधान से युक्त थी। इस बारे में पुराणों में वर्णित है कि इस स्थान पर भगवान कार्तिक ने अपनी हड्डियाँ पिता शिव को अर्पित कर दी थीं इसलिए यह जगह और मंदिर महत्वपूर्ण है। अगले दिन सुबह-सुबह हम मंदिर के पीछे हिमालय पर्वतमाला में सूर्योदय के एक दुर्लभ और कभी न भूलने वाले दृश्य को देखने के लिए फिर से कार्तिक स्वामी मंदिर पहुंचे। बेहद ठंड में सुबह छः बजे कार्तिक स्वामी मंदिर में सूर्योदय देखना मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव है। कार्तिक स्वामी मंदिर और कनक चौरी को विदा कर मंदिर जाने की स्वप्निल इच्छा लिए हम उस शाम लगभग पाँच बजे हरिद्वार वापस आ गए।

सौमी बन्दयोपाध्याय
लेखाकार/ पेंशन-VI

हैप्पी फादर्स डे

मौटुसि मित्रा

फादर्स डे को लेकर हर किसी के मन में प्लान चल रहा था। सब सोच रहे थे कि कैसे इस दिन का प्लान करके न सिर्फ अपने पापा के मन को छू लें बल्कि उसके साथ फेसबुक, व्हाट्सएप्प स्टेटस इसकी पिक्चर डालकर अपने दोस्तों के बीच अपना रोब जमाएँ। मीना 11वीं कक्षा में पढ़ती थी। परीक्षा में अच्छे नंबर से पास होने पर उसके पापा ने उसे एक एंड्रायड फोन उपहार में दिया था। मीना के लिए फेसबुक, व्हाट्सएप्प नया था इसलिए उसने भी फादर्स डे प्लान करके अपने दोस्तों के बीच मशहूर होना चाहती थी। मीना का एक भाई भी था। एंड्रायड फोन को लेकर दोनों में खूब लड़ाई होती रहती थी। फादर्स डे के पहले मीना ने उस दिन को बहुत धूमधाम से मनाने का प्लान बनाया। उसने सोचा कि इससे पापा बहुत खुश होंगे और साथ ही पापा के साथ अपनी फोटो को फेसबुक, फेसबुक, व्हाट्सएप्प पर डालकर अपने दोस्तों को भी दिखाएगी। मीना के लिए ये सब बहुत रोचक होने वाला था। फादर्स डे के लिए उसने पापा के लिए गिफ्ट खरीदे और केक की दुकान से केक का ऑर्डर भी दे दिया। उसने अपनी मम्मी को भी इस प्लान की सूचना नहीं दी थी क्योंकि डर था कि मम्मी के जानने से पापा भी जान जाएंगे।

अगले दिन मीना सुबह ही उठी जबकि रविवार का दिन था। उसने सोचा था कि पापा तो शायद सो रहे होंगे। केक आ चुका था। मीना जल्दी से तैयार होकर पापा के कमरे में गई, पापा वहाँ नहीं थे। उसने सोचा- आस-पास ही गए होंगे, जल्दी ही आ जाएंगे। मीना उनका इंतजार करने लगी। दोपहर 12 बजे तक भी उसके पापा नहीं आए तो उसने मम्मी से पूछा। मम्मी बोलीं- तुम्हारे पापा ऑफिस के काम से पाँच दिन के लिए बाहर गए हैं।

ये सुनकर मीना बहुत उदास हो गई। उसने आज के लिए बड़ी मेहनत से प्लान किया था। उसकी पूरी मेहनत पर पानी फिर गया और वो दुखी होकर रोने लगी। उसकी मम्मी को समझ में नहीं आया। उन्होंने मीना से पूछा- तुम क्यों रो रही हो? मीना रोते हुए बोली- आज फादर्स डे है और मैं आज पापा को सरप्राइज़ देना चाहती थी। ये सुनकर मीना की मम्मी भी दुखी हो गई। मम्मी मीना से बोली- तुम अगर मुझे पहले से बोलती तो मैं तुम्हें पहले ही बता देती कि तुम्हारे पापा बाहर जा रहे हैं। अब रोने से क्या होगा? मीना की मम्मी उसे चुप कराने लगीं। मीना का भाई उसे चिढ़ाने लगा, जिससे मीना और तेज रोने लगी। दोपहर को मीना की मम्मी ने उसे खाने के लिए बुलाया।

मीना भगवान का फोटो देखकर मन ही मन उनसे बोली- आज पापा को ऑफिस से बाहर क्यों भेजा भगवान? बोलते-बोलते अचानक उसके घर की घंटी बजी।

मम्मी ने मीना को दरवाजा खोलने को कहा। मीना उदास मन से दरवाजा खोलने के लिए जा रही थी। जैसे ही उसने दरवाजा खोला उसकी आँखों में खुशी के आँसू बहने लगे। उसके पापा सामने खड़े थे। मम्मी ने पूछा- कौन है? मीना ने कहा- पापा..! मीना के पापा ने उसे रोते हुए देखकर पूछा-तुम रो क्यों रही हो? तब तक मम्मी भी आ गई थीं, उन्होंने पूछा- आप गए नहीं? उन्होंने कहा- ट्रेन कैंसिल होने के कारण नहीं जा सका। ये सुनकर मीना भागकर अपने कमरे में गई और गिफ्ट लाकर पापा को देते हुए बोली- हैप्पी फादर्स डे पापा..! ये देखते ही उसके पापा बहुत खुश हुए। फिर केक कटिंग और फोटो सेशन हुआ। मीना ने अपने फेसबुक, व्हाट्सएप्प पर स्टेटस लगाकर फादर्स डे को मनाया।

मौटुसि मिला/लेखाकार

बचपन कैसा

सुनीता राउत

अब तो सारे खेल हो गए बहुत पुराने,
बचपन कैसा?
सुबह-सुबह आलस में भी जब
उचट नींद जो खुल जाती थी,
खाने-पीने से तो पहले रट,
खेल-कूद की लग जाती थी

गुल्लीडंडा, कहीं कबड्डी दिखते नहीं हैं
बचपन कैसा?

लुका-छिपाई याद नहीं अब
लगता बच्चे भूल गए सब
वो पेड़ों पर उछल-कूद तो
सपने की बस बात हुई अब

रोज खिलौने बदल-बदल भी ये
चिल्लाते,
बचपन कैसा?

दूर-दूर तक बाग-बगीचे
घूम-फिर लेते थे चलकर
आसमान में हो वो उड़ते, जब
पतंग उड़ाते, मचल-मचलकर

दूर बहुत, मासूम बड़े थे, अकड़ आज
की
बचपन कैसा?

सच्चे थे लड़ते थे हम-सब
सुबह भूल सब जाते थे
गलती कोई हो जाती थी
तो प्रायः चुप रह जाते थे,
बात-बात पर गुस्सा करना, झूठ
बोलना
बचपन कैसा?

दौड़-दौड़ कर थक जाते पर
कहते थे मन भरा नहीं है
रस्सी के उस खेल-कूद सा
वो आनंद तो कहीं नहीं है

निश्छल सो जाते थे थककर, उल्लू
जैसा
बचपन कैसा?

दादी माँ की वही कहानी
बड़े चाव से सुनते थे सब,
मालूम नहीं नींद कब आती
गोद में सो जाते थे हम सब

कहे समय बलवान बहुत है, आज की
दुनिया
बचपन कैसा?

सुनीता राउत (एमटीएस)

गुलमोहर

आशीष कुमार

धीर-धीरे ट्रेन की गति कम होती जा रही थी। कुहासा बादलों की तरह निर्जन पहाड़ी जंगल में पसर गया था। ज़रूर दृश्यता से संबंधित समस्या होगी नहीं तो ये ट्रेन कभी देरी से नहीं चलती थी। आमतौर पर ट्रेन की यात्रा शांति और सुकून से नहीं हो पाती है। अलग-अलग श्रेणियों का अनुभव अलग होता है। प्रथम श्रेणी वातानुकूलित में तो लोग जाते ही इसलिए हैं कि उन्हें अजनबियों से बात करना पसंद नहीं और फिर उनपर भरोसा भी नहीं किया जा सकता है। वहीं सामान्य श्रेणी में चुप रह पाना मुश्किल होता है। पैसे की तंगी न हो तो शायद ही कोई सामान्य श्रेणी में सफ़र करना चाहेगा लेकिन बात यहाँ ख़त्म नहीं होती है।

रेणु मानने के लिए तैयार नहीं थी कि ये समस्या पैसे से जुड़ी है। अमर से ऐसे कई मुद्दों पर उसकी भयंकर बहस हो चुकी है। अपना नाश्ता ख़राब कर चुकी है, पसंदीदा कॉफ़ी ठंडी हो गई या फिर कभी लंच तो कभी डिनर का पूरा मन ही बिगड़ गया। अमर हर क्षण वाद-विवाद करने का उद्यत रहता है, कोई न कोई चीज़ हमेशा उसे परेशान करती रहती है और वो हमेशा उसे रेणु से साझा करना चाहता है। रेणु भी जानती है कि उसका मंतव्य लड़ाई करने का नहीं है लेकिन उसके स्वभाव में है कि किसी बात पर संवाद करते हुए वह अपना ज्ञान बघारने लगता है और अपनी सहजता को कहीं खो देता है। वह भूल जाता है कि वह चाय या कॉफ़ी के वक्त ख़ुशनुमा माहौल रखने के लिए ही ऐसा छोटा-मोटा टॉपिक उठा लेता है ताकि रेणु को अकेला न लगे। लेकिन कब वह आक्रामक हो जाएगा मालूम नहीं चलता है। शायद उसका अहं बार-बार और छोटी-छोटी चीजों में भी आगे आ जाता है।

एक बार खुद कैसे उसने मान लिया था कि वह ख़ुशी से ऐसा नहीं करता है, बस भावनाओं पर उसका नियंत्रण नहीं रह पाता। रेणु को तब लगा था कि वह इस आक्रामकता का कोई न कोई उपाय ढूढ़ ही लेगी। बहुत बार उसने प्रयास किया था। एक शनिवार पिक्चर से लौटते वक्त कैब में ही अमर चिल्ला पड़ा था- एकदम मूर्ख हो तुम? उसका चेहरा तमतमा रहा था और शरीर बुरी तरह काँप रहा था जैसे कि इलेक्ट्रॉनों का झंझावात उसे अंदर से

रेणु को याद है कि इसके बाद वह रास्ते भर अन्यमनस्कता से स्ट्रीटलाइट में लहराते गुलमोहर की ओर देखती रही। कभी वह इन गुलमोहर के फूलों पर अपनी जान छिड़कती थी। रेणु अपनी ज़िद याद करती है। अमर का पीछा वह तभी छोड़ती थी जब वह गुलमोहर के फूल लाकर उसके बैंड में लगा देता था। गुलमोहर की ख़ुशबू नहीं, उसका रक्ताभ सौंदर्य रेणु को बहुत आकर्षित करता था। पतझड़ के बाद जब गुलमोहर में नई कलियाँ आती थीं तो 'गुंजन पथ' पर वह अमर के हाथों में हाथ डालकर इतराते हुए चलती थी। ऐसा लगता था मानो सारा आकाश अपने हर्ष की बारिश कर रहा हो..एक रक्ताभ वीथि सा 'गुंजन पथ' पंछियों के कलरव से आह्लादित होता रहता था।

वे दिन बिना बारिश के सबसे मधुर दिन होते थे। अमर के स्वभाव से किसी को भी आभास नहीं होता था कि संभ्रांत परिवार का अकेला लड़का अपने आप को हमेशा पीछे रखना चाहता है। अपनी इच्छाओं का, प्रतिभा का न तो वह प्रदर्शन करता था और न ही किसी को पता चलने देना चाहता था। लेकिन सृजन के अंकुर को पथरीली चट्टान भी कहाँ रोक पाती? उसकी वक्तृत्व-कला से तो बड़े-बड़े प्रोफ़ेसर और वक्ता भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे। भौतिकी के प्रोफ़ेसर डॉ. निर्वेद प्रायः कहा करते थे कि अगर उनके पास अमर जैसी विश्लेषण कला होती तो वे देश में भौतिकी के अध्ययन स्तर को महत्तम ऊँचाई पर पहुँचा देते।

अगर रेणु आज कहे कि उसे अमर से प्यार था तो ये सच है लेकिन ये भी सच है कि वह अमर के साथ नहीं रह सकती है। आज जब ट्रेन पहुँचेंगी तो कोई भी उसे लेने नहीं आएगा। सबसे विद्रोह करके उसने प्यार को चुना था। रेणु को समझ में नहीं आ रहा था कि जब अपनी सहजता के लिए परिवार को छोड़ना कठिन नहीं था तो उसी सहजता के लिए एक संत्रास भरे संबंध को तोड़ने में इतनी मुश्किल क्यों हो रही है। रेणु को लगता है कि जैसे ट्रेन के पहियों में किसी ने पूरा दण्डकारण्य बांध रखा हो। ट्रेन रेंग रही थी, लेकिन ठहरा हुआ समय उससे भी भारी लग रहा था। रेणु के हृदय में एक गहराता जाता शून्य उतर रहा था, मानो उसकी भावनाओं और विचारों पर शुष्क बर्फीली चादरें फैलती जा रही हों। रेणु को अब लग रहा था कि अमर ने उसे कभी प्यार किया ही नहीं। लेकिन अमर ने जो कुछ किया वो तो धोखा बिलकुल नहीं था, दूसरे ही पल वह सोचती। सच भी था क्योंकि समस्या ये नहीं थी कि अमर बहुत कमज़ोर और अस्थिर चरित्र का था। समस्या थी ग़ुस्सा या भावनाओं पर अनियंत्रण, जो कि ऐच्छिक नहीं था। अमर बार-बार कहता था कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, बिलकुल वैसे ही जैसे गुलमोहर के रक्ताभ फूल खिलतें हैं और प्रकृति को सौंदर्यपूर्ण कर देते हैं, वैसे ही तुम्हारा प्यार मुझे परिपूर्ण बना देता है रेणु। रेणु की स्मृतियों में प्रायः अमर की ये ध्वनि गूंजती रहती है।

याद है कि जब अमर ये बोल रहा था उस समय उसकी आँखों की गहराई में एक मधुर संगीत से उपजी हुई संतृप्ति सी व्याप्त थी, उसकी स्वर-लहरी में एक प्रवाहमय माधुर्य था और रेणु के हृदय का स्पंदन उस मधुर प्रवाह में विलीन होता जा रहा था। रेणु सोचती कि तब मैंने अपने आप को भी तो भावनाओं के अकुंठ प्रवाह में बहने दिया था, कभी ठहरकर नहीं सोचा था कि जीवन का सच, प्यार के अतिरिक्त भी होता है और जीवन का प्यार से परे भी अस्तित्व होता है। क्या वह प्यार से परे ग़ुस्से, चिड़चिड़ेपन, तनाव आदि के अस्तित्व को झुठला रही है? कोई भी व्यक्ति मशीन या खिलौना, सॉफ़्टवेयर या रोबोट नहीं है जो निर्दिष्ट संकेतों का अनुपालन मात्र करता रहे। क्या अमर सचमुच बुरा व्यक्ति है? ग़ुस्से के अलावा उसके व्यक्तित्व में कौन सी कमी है? अगर वो पैसे से लोगों की मदद करता है तो ये तो उसके ही पैसे हैं और फिर मदद करना कोई बुरी बात तो नहीं है? फिर ऐसा क्या है कि जिस कारण से वह अमर से दूर जा रही है? परिवार से विरोध तो अमर को भी झेलना पड़ा था, उसकी अकेले की ज़िद से तो साथ आना संभव नहीं था।

रेणु का ध्यान एक पल के लिए भंग हुआ तो ऐसा लगा कि जैसे कुहासा छँट रहा हो और सुस्त पड़ी ट्रेन ने अंगड़ाई ली हो। निर्जन पहाड़ी के उजाड़ जंगल के बीच रेणु को लगता है कि उसके जीवन में भावनाओं की शुष्कता, जीवन को निस्संग एकांत की ओर लिए जा रही है। वह सोचती है कि प्रथम श्रेणी के वातानुकूलित कूपे में कितनी स्थूल शांति है, खूब नीरवता है, जीवन का शोर नहीं है किंतु क्या यही जीवन की सच्चाई है?? सामान्य श्रेणी में यात्रा कर रहे लोग भी तो जीवन जी रहे हैं, प्रसन्न न होने के बावजूद यात्रा कर रहे हैं, कभी-कभी पैसे न होने के बावजूद भी। पकड़े जाने पर न जाने क्या-क्या झूठ बोलते हैं, अकड़ भी जाते हैं, गिड़गिड़ाते भी हैं ..यूँ ही जीवन जीते चले जाते हैं। क्या उनका कोई स्वाभिमान नहीं होता? बिलकुल होता होगा लेकिन वह भी तो इसी समय और जीवन का सत्य है, रेणु मानने को विवश हो जाती थी। रेणु के विचारों के द्वंद्व में कभी बिजली कड़कती है, कभी बारिश होती है, कभी मधुर स्मृतियों का स्मित हास होंठों तक आता है और क्रोध? क्या वह कभी किसी पर कुपित नहीं हुई है आज तक?? उसके मन में भी तो अमर के प्रति एक अयाचित ग़ुस्सा जन्म ले रहा है तो क्या उसने भी अमर से प्यार नहीं किया था?

रेणु के मन में सहपाठियों के तानें प्रायः गूँजते रहते हैं। कल्पित तो ठहाके मारकर हँसता था कि रेणु ने पैसेवाले को अपने सौंदर्य और भोलेपन का शिकार बना लिया है। बात उड़ती हुई ही रेणु तक पहुँची थी पर आज वह सोच रही है कि क्या ये सच है? क्या उसका प्यार, बहुत सारे मानकों की अपेक्षा नहीं रखता था। भौतिकी विभाग में लड़कों की तो भरमार थी और फिर अमर के साथ कोई विचित्र संयोग तो घटित नहीं हुआ था जो वे दोनों विवाह के बंधन में बँध गए। और ये कोई एक दो महीने या कुछ साल मात्र की बात नहीं थी। पूरे पाँच साल का स्नेहिल संबंध ही इस स्तर तक पहुँचा था। फिर गलती कहाँ पर हो रही है? रेणु का मन चिंतन करते-करते ऐसा जड़ हो जाता है कि उसे कई बार दिन के उजाले में भी कुछ नहीं दिखता। ऐसा लगता है कि जंगल का कुहासा अपना विस्तार करता हुआ उसके अंतर्मन पर छा जाता है और गहराता जाता है। अमर का स्वभाव कहीं से भी शंकित नहीं लगा था, तब वह उसे दुनिया का सबसे सुंदर और प्यार भरा व्यक्ति लगता था, कमज़ोरियाँ दिखती ही नहीं थीं। शायद यहीं गलती हुई हो। रेणु का मन विचारों और भावनाओं के ऊर्मिल चक्रवात में उलझता जा रहा है। कभी-कभी रेणु को लगता है कि उसका जीवन खुला रहस्य बन गया है, अथक प्रयासों के बाद भी जिसे वह नहीं समझ पा

रही है। ट्रेन चल रही थी लेकिन उसकी चाल में एक संगीतमय मंदता थी। रेणु का स्टेशन निकट आ रहा था, किंतु भावनाओं के ऊहापोह में भारीपन गहराता जा रहा था।

रेणु वो शाम याद करती है जब अमर, प्रोफ़ेसर डॉ. निर्वेद से क्वांटम भौतिकी की संभावनाओं पर संवाद के दौरान किसी की व्यक्तिगत टिप्पणी से आहत हो गया था। प्रोफ़ेसर ने किसी का पक्ष नहीं लिया था लेकिन उन्होंने टिप्पणी करने वाले को रोका भी नहीं था। उस दिन रेणु ने पहली बार अमर को क्रोधित होते हुए देखा था। वातावरण में सन्नाटे की गूँज थी। केवल एक वाक्य गूँज रहा था- 'उसकी हिम्मत कैसे हुई ये सब बोलने की !' अमर आपे से बाहर हो गया था, उसका शरीर काँप रहा था, स्वर में क्रोध-मिश्रित चीत्कार भरी हुई थी। उसे धकेलते हुए रेणु एक ओर ले गई। अमर उसके कंधे पर सिर रखकर सिसकने लगा था। तब रेणु को आभास नहीं था कि अमर के स्वभाव में गुस्सा वैसे ही शामिल है जैसे कि प्यार, जैसे कि अध्ययन और सबसे अधिक फुटबाल खेलना। रेणु ने इस समय मान लिया था कि यह एक सहज गुस्सा था, अनैतिक और प्रतिकूल टिप्पणी के विरुद्ध जहां वह अमर के साथ खड़ी थी। उसने प्रोफ़ेसरों से भी शिकायत की थी। गुस्से के अनपेक्षित प्रकटीकरण की करूण परिणति ने रेणु को अमर के और निकट ला दिया था। ऊष्ण आंसुओं के निश्छल प्रवाह को रेणु ने अपने शरीर ही नहीं, हृदय तक में बहते हुए पाया था।

रेणु मान भी लेती है कि ये सब प्यार था, संबंधों का पल्लवन था, समय का स्वीकार्य सत्य था लेकिन अब जो हो रहा है वह अमर के स्वभाव का न देखा गया या बाद में उपजा हुआ अंकुर था। गुस्से की बढ़ता आवर्तन, अमर के दिए गए स्पष्टीकरण को बार-बार असत्य बना देता है। यह असत्य रेणु को स्वीकार्य नहीं है, ऐसी बात न थी किंतु गुस्से को सहज मानकर स्वीकार कर लेने का संत्रास उसके जीवन की सहजता की परिधि को सीमित करता जा रहा था। किसी की सहजता को स्वीकार कर लेने का मूल्य क्या होना चाहिए? स्वयं की असजता? संबंधों के निर्वहन में इसे त्याग कहकर सहनशीलता को बढ़ाने की बात अमर के मुख से सुनकर रेणु को दुःख हुआ था। उसे लगा कि अमर अब बदल चुका है, वह पुरुषमात्र रह गया है, उसका अभिजात्यपन, उसके ज्ञान का अहंकार उसके मनुष्यत्व को निगल गया है...गुलमोहर के रक्ताभ फूल अब उसके लिए निरर्थक लगते हैं। 'गुंजन पथ' पर जाने और गुलमोहर की पंक्ति को निहारने की बात पर भी वह बिखर जाता है ऐसा क्यों? एक जीवंत और प्रफुल्लित व्यक्ति

कुंठा और संकीर्णता का शिकार कैसे हो सकता है। बंद घेरे में वह क्यों सिमटने लगा जिसने दुनिया में अपनी जगह बनाने के लिए इतनी लड़ाइयाँ लड़ीं??

क्या अमर ही सभी समस्याओं का कारक है? रेणु कभी-कभी सोचती। रेणु ने उन सभी बिंदुओं पर ध्यानपूर्वक विचार किया जिन पर अमर को ग़ुस्सा आया था। ज़्यादातर बिंदु ऐसे थे जहां पर अमर अपने आप को सही मानता था और रेणु को मूर्ख या विचार देने के लिए अनुपयुक्त मान लेता था। अमर को वाद-विवाद हमेशा से अच्छा लगता था लेकिन उसमें आक्रामकता का पुट इतना गंभीर पहले कभी नहीं हुआ था। अमर क्या चाहता था, ये समझना रेणु के लिए बहुत कठिन हो गया था। जब भी उसने अमर से आमने-सामने बैठकर बात की तो वह प्रायः मौन धारण कर लेता था, एक क़ातर मौन जिसमें रेणु को रक्ताभ गुलमोहर का निरीह सौंदर्य दिखता था। रेणु दुविधा में है। जैसे जैसे ट्रेन स्टेशन की ओर बढ़ रही है उसे समझ में नहीं आ रहा है कि अगर वो अमर को छोड़ देती है तो भी घर पर उसे माँ-बाप क्षमा नहीं करेंगे। और ऐसे कुंठित, लगभग निष्प्राण हो चुके संबंध में जीवन व्यतीत करना उसके लिए संभव नहीं था। उसे स्वयं ही अपना जीवन जीना है। रेणु सोचती कि वह तो आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर नहीं है लेकिन आजकल के उन्मुक्त संबंधों का निर्दयी परिवेश उसे अच्छा नहीं लगता था। वैवाहिक संबंध का विच्छेद ही एकमात्र संभव रास्ता था। कई हितैषियों ने भी यही सलाह दी थी। रेणु की अन्यमनस्कता की परिधि में बाहर का जगत शून्य हो गया था.... ट्रेन के झटके, कोलाहल, चहल-पहल सब कुछ..रेणु भावनाओं के संजाल में यूँ खोई हुई थी कि कोई अजनबी भी उसके चेहरे को पढ़ सकता था।

ट्रेन जमहर स्टेशन पर पहुँच गई थी। कुहासे की भीति में डूबा हुआ जमहर....बोर्ड को पढ़ पाना बहुत कठिन था, वैसे भी ख़ुरचे हुए अक्षर..वह छोटा सा सूटकेस ही लाई थी। जैसे ही रेणु अपने कूपे से बाहर निकलने के लिए दरवाज़ा खोलती है, अमर उसकी ओर आता हुआ दिख गया। अमर यहाँ...?? रेणु की भावनाओं का मंथन जैसे यथास्थिति में बर्फ़ की तरह जम गया....वह पूछना चाहती है किंतु होंठ हिलते ही नहीं हैं और अमर ने आकर उसे गले लगा लिया.. बालों में वही गुलमोहर के फूल लगा देता है...सूखे हुए...लेकिन उनमें भावनाओं का सिंचन था...प्रेम से अभिषिक्त..रेणु अमर के चेहरे को देखती है...वही रक्ताभ गुलमोहर याद आता है..गुंजन पथ पर हाथों में हाथ दिए चलना..रेणु की

भावनाओं का मंथन जैसे यथास्थिति में बर्फ़ की तरह जम गया....वह पूछना चाहती है किंतु होंठ हिलते ही नहीं हैं और अमर ने आकर उसे गले लगा लिया.. बालों में वही गुलमोहर के फूल लगा देता है...सूखे हुए...लेकिन उनमें भावनाओं का सिंचन था...प्रेम से अभिषिक्त..रेणु अमर के चेहरे को देखती है...वही रक्ताभ गुलमोहर याद आता है..गुंजन पथ पर हाथों में हाथ दिए चलना..रेणु की आँखों में विचारों की ऊहापोह से उपजे थकान भरी आंसू की कुछ बूँदें थीं...उसे नहीं मालूम था कि अमर के मन में क्या है लेकिन वह जानती थी कि गुलमोहर का रक्ताभ सौंदर्य वह कभी नहीं भूल सकती....कभी नहीं...।

आशीष कुमार/कनिष्ठ अनुवादक

हम जो सुनते और समझते हैं
हम जो सोचते हैं,
उसे लिख सकते हैं,
व्यवहार में ला सकते हैं।
ऐसे ही हम हिंदी भाषा में कामकाज बढ़ा सकते हैं।

अप्रैल-जून 2023 को समाप्त तिमाही हिंदी बैठक की अध्यक्षता करते हुए महालेखाकार महोदय

संस्मरण

चंद्रशेखर भगत

जीवन में मनुष्य के बहुत सारे गुण जैविक और आनुवांशिक आधार पर वंशानुक्रम में देखने को मिलते हैं। जैविक आधार पर ये लक्षण मनुष्य के स्वभाव पर बहुत असर डालते हैं। मेरा तो स्पष्ट मानना है कि आनुवांशिक गुणधर्मों का हमारे आचार-विचार पर जितना असर पड़ता है, आसपास के वातावरण, परिस्थिति, माँ-बाप, परिवार, रिश्तेदार और समाज आदि का उससे कहीं अधिक असर हमारे जीवन पर पड़ता है। आसपास के वातावरण और परिस्थितियों से तात्पर्य बच्चे के विकास पर पड़ने वाले शारीरिक और मानसिक बदलावों से है। एक माँ ही बच्चे की पहली शिक्षिका होती है। इस तरह से समाज का कोई भी व्यक्ति समाज की अच्छाइयों और बुराइयों से प्रभावित होता है। साथ ही उसके मन में अच्छाई और बुराई को लेकर रस्साकसी चलती रहती है। यूं तो समाज में बहुत सारे रिश्ते हैं लेकिन दोस्ती का इनमें बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। दोस्त परिवार के भी हो सकते हैं या परिवार से बाहर भी। ऐसा देखने में आता है कि सामान्यतः दोस्त परिवार से बाहर के ही होते हैं। दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जहां मनुष्य सबसे सहज भाव से अपने विचारों, भावनाओं आदि को साझा कर सकता है।

किसी के भी सामाजिक जीवन में एक दोस्त की भूमिका खुली हवा की तरह होती है, जहां वह दिल खोलकर बातें कर सकता है, घूम सकता है, लड़ सकता है, रो सकता है या अन्य भावनाओं को सांझा कर सकता हैं। यह प्रक्रिया गतिशील होती है और कई बदलावों से होकर गुजरती है फिर इसका आकर्षण हमेशा नया बना रहता है। हम आज जो हैं, हमारा जो व्यक्तित्व है वह सामाजिक संबंधों की वजह से विकसित हुआ है। हम किसी से आचार-विचार सीखते हैं और किसी को सिखाते हैं; कोई हमसे प्रभावित होता है तो हम किसी से प्रभावित होते हैं। जैसे समाज में वस्तुओं आदि का आदान-प्रदान चलता रहता है वैसे ही आचार और विचार भी एक दूसरे में घुलता-मिलता रहता है। किसी ने कहा भी है कि संगत से गुण होत है, संगत से गुण जात। मैं एकांत में बैठा कभी-कभी सोचता हूँ, अपने अंदर झाँकने की कोशिश करता हूँ कि मैं जो कुछ भी हूँ क्या वह सब कुछ

मेरा है या मैंने बनाया है? जब मैं खुद से बात करता हूँ तो जान लेता हूँ कि मेरी अच्छाइयों के पीछे कौन लोग हैं और मेरे अंदर अवगुण हैं तो वो किनसे मिल गए हैं।

मुझे अपने एक दोस्त की बहुत याद आती है। साहित्य के प्रति मेरी रुचि और आकर्षण का कारण मेरा वही दोस्त था जो कि अब इस दुनिया में नहीं रहा। मैं गणित और विज्ञान का विद्यार्थी था, साहित्य तो बस परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए पढ़ा करता था। परीक्षा पास करने के लिए साहित्य पढ़ना एक अलग बात है और साहित्य पढ़ना और उसका आनंद लेना एक अलग बात। मेरा दोस्त विनोद साहित्य और कला का अनन्य प्रेमी और उपासक था। रवींद्रनाथ टैगोर के साहित्य को पढ़ते हुए वह प्रायः रोने लगता था, कहता था कि मानों भावनाओं का ज्वार उसे अपने साथ बहाए जा रहा है। मैंने उसकी संगति में रहते हुए शरतचंद्र, प्रेमचंद, निराला, प्रसाद, महादेवी वर्मा, दिनकर आदि जैसे महान भारतीय साहित्यकारों को ही नहीं पढ़ा अपितु रूस के पुश्किन, टालस्टाय, दोस्तोवस्की, मैक्सिम गोर्की, अंटोव चेखव आदि के साथ-साथ शेक्सपीयर, कीट्स, शेली, बायरन आदि के साहित्य को पढ़ा और उसका अनुशीलन भी करने की कोशिश की।

मौत जीवन का अंत करती है रिश्तों को नहीं। और बात दोस्ती की हो, उसमें भी दोस्त का बिछड़ना....! हमारे साथ बचपन से जीवन को जीनेवाला, खेलने-कूदने, बोलने- बतियाने वाला। साथ में बड़ा होना और एक दिन अचानक दुनिया छोड़कर चला गया वो...! 2 जनवरी 2023 की रात 11:30 बजे आँख लगी ही थी कि मेरे मोबाइल की घंटी बजने लगी। अचानक से कच्ची नींद टूट गई। सामने से विनय की रुँधी हुई आवाज आई- भैया, सो रहे थे क्या आप? मैंने कहा- नहीं... बस हल्की सी झपकी आई थी। कहो, इतना घबराए क्यों हुए हो? सामने से आवाज आई- विनोद भैया नहीं रहे....! और फिर दोनों ओर आश्चर्य और दुखभरी चुप्पी छा गई... बस एक दुखी मौन। फिर थोड़ा संभलते हुए मैंने पूछा- ये सब कैसे हो गया? दुखी विनय ने बताया- अभी आधा घंटा पहले उनका ब्लडप्रेशर अचानक से बढ़ गया था। डॉक्टर को दिखाने के लिए भागलपुर ले आए थे। डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया है। मेरी नींद जैसे सन्न से उड़ गई। मैंने पूछा- अभी कौन-कौन है वहाँ? विनय ने बताया- मैं हूँ और भाभी हैं, कुछ स्थानीय मित्रों को फोन किया हूँ, वे लोग आते ही होंगे। मुझे लगा समय वहीं ठहर सा गया और कुछ पल बाद समय ने अतीत की स्मृतियों को मानस पटल पर ला दिया। अब नींद नहीं आने वाली थी। मन

बहुत उदास हो गया था। जिंदगी ने ऐसा झटका दिया कि जीवन से मोहभंग सा होने लगा था। स्मृतियों का भारीपन जितना बढ़ता जा रहा था, आँख से आंसुओं की धार उतनी ही बढ़ती जाती थी।

लोग कैसे कहते हैं कि दो चार दिन में सब कुछ सामान्य हो जाता है? मुझे ऐसा नहीं लगता। जीवन की गति और रीति सामान्य हो जाती है लेकिन जीवन के कई रंग-रूप और आयाम होते हैं जो सामान्य नहीं होते हैं। मन के भीतर एक टीस सी उभरती है, एक कसक सी बन जाती है। मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि जीवन का कुछ बहुत जरूरी सा स्थान खाली हो गया है जिसे अब नहीं भरा जा सकता। अलग-अलग ख़याल आते हैं-

दुनिया छोड़ के तूने छोड़ा ये मेला है/आँसू रुकते नहीं अब यही झमेला है
कब तक खुद को समझाएँ कि तू आएगा/ तेरे जाने के बाद तेरा हर दोस्त अकेला है।

मुझे याद है कि उसके श्राद्ध के दिन मैं बस पकड़कर सीधे गाँव गया था। बस उतरते ही गाँव में एक खालीपन महसूस हो रहा था। दूर तक फैले हुए गाँव में नदी, तालाब और बाग-बगीचों से घिरे मनमोहक वातावरण में अजीब सी उदासी सी पसरी हुई लग रही थी। गाँव में दोस्त के साथ बिताया हुआ बचपन आँखों के सामने घूम गया। नदी में नहाना, तैरकर पार करने की होड़, भैंस की पीठ पर बैठकर घूमना, जामुन खाना, जामुन के पेड़ से गिरना आदि सब कुछ....। उसके घर तो उदासी पसरी हुई थी। लोग अब भी तरह-तरह की बातें कर रहे थे कि आयुर्वेद में दिखाना चाहिए था, तो किसी ने कहा होम्योपैथिक से ज्यादा फायदा होता तो कोई कहता कि समय से इलाज करवाना चाहिए था। अब इन सब थोथी बातों का कोई मतलब नहीं था। मुझे याद है कि वो कहा करता था कि मैं अब ज्यादा दिन नहीं जी सकूँगा। वो चुप रहने लगा था। कई बार पूछने पर बड़े ठंडे मन से उसने एक शेर सुनाया था-

"खामोशियाँ कर देती बयां तो अलग बात है,
कुछ दर्द हैं जो लफ्जों में उतारे नहीं जाते ।"

हम सब उसे हौसला देते थे किन्तु मेरा दोस्त आज हमारे बीच नहीं है। उसकी एक बात हमेशा मेरे हृदय में कसक पैदा करती है। वो कहा करता था- चंद लम्हें निकालकर, दो-चार दिन के लिए तुम्हारे पास आऊँगा; हमारा सिर्फ एक काम होगा, एक बढ़िया सा टिफिन पैक करके और दिन भर नेशनल लाइब्रेरी में बिताऊँगा। देहांत के कुछ महीने पहले पति-पत्नी यहाँ आने का मन बना चुके थे।

मैं बहुत उत्साहित था। मच्छरदानी, तकिया, चादर आदि को धूप में सुखाकर करीने से सजा लिया था। मन में

तरह-तरह की योजनाएँ बना रखीं थीं। किसी दिन हावड़ा ब्रिज दिखाने ले जाऊंगा तो कभी हुगली नदी में बजरे पर एक कविताओं वाली शाम का आनंद लेंगे। प्रिंसेप घाट, विक्टोरिया मेमोरियल, साइंस सिटी, निक्को पार्क न जाने और कहाँ-कहाँ...! किसी शाम सिनेमा हाल जरूर जाएंगे, ऐसा भी सोच रखा था। शहर का मशहूर रसगुल्ला और समोसा, खाए बिना तो सफर ही अधूरा रह जाएगा क्योंकि समोसा तो उसे बहुत पसंद था....सब कुछ मेरे दिमाग में रेखांकित और चित्रित भी हो गया था।

अचानक से उसकी यहाँ आने की योजना रद्द करनी पड़ी। उसकी सासू माँ की तबीयत बिगड़ गई। उसे भागकर ससुराल जाना पड़ा। यद्यपि वह पहले भी कोलकाता आ चुका था लेकिन पत्नी के साथ कभी नहीं आया था। उस समय उसने मुझसे पूछा भी कि नेशनल लाइब्रेरी गए हो क्या कभी? मैंने तब कह दिया था- जाऊंगा तो तुम्हारे साथ ही, नहीं तो नहीं जाऊंगा। उसके बिना पुस्तकालय जाने में मुझे कोई आनंद नहीं आता। किताबें पढ़ते हुए हमने साथ में सैकड़ों घंटे गुजारे होंगे। पुस्तक पढ़ने के बाद हम उस पर लंबी चर्चाएँ किया करते थे। जब देवदास पारो को बंसी से मार देता है....ओह, सुधा की राख़ जब पानी में तैरती हुई लकीर बन जाती है....। उर्वशी का पुरुरवा, कामायनी की श्रद्धा और रश्मिरथी का कर्ण... न जाने कितनी बहसें होती थीं। कभी तो ऐसा भी लगता था कि अमुक पुस्तक नहीं पढ़ते तो जीवन व्यर्थ हो जाता...अब तो तुम ही नहीं रहे दोस्त.... अब जीवन में हमेशा कचोटने वाला खालीपन आ गया है। प्रायः खुद से बतियाने लगता हूँ...गला भर आता है और मौन होकर आकाश को निहारने लगता हूँ कि आकाश की परिधि तक चारों ओर हमारी यादें जैसे बिखरी पड़ीं हों। किसी ने कहा है-

"रहने को सदा दहर में आता नहीं कोई,
तुम जैसे गए ऐसे भी जाता नहीं कोई।"

मौत जीवन का अंत करती है, रिश्तों का नहीं। तुम चले गए, टीसभरा सूनापन और आँसू भरी यादें रह गई हैं अब...।

चंद्रशेखर भगत/पर्यवेक्षक

जीवन के कुछ पहलू

अनिल कुमार

आज मैं जो आपको बताने जा रहा हूँ वह एक सामान्य सत्य है। इस बारे में आप सब पहले ही जानते हैं। इस बात को संक्षेप में कहने से पहले मैं एक कथन का उल्लेख करना चाहूँगा-**'बात छोटी हो या बड़ी उस पर सम्पूर्ण समर्पण के साथ ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।'**

अब मैं मुद्दे पर आता हूँ, निर्णय के कुछ महत्वपूर्ण आयामों के बारे में बात करता हूँ-

1. **समय:** समय ही धन है। पहली चीज है कि किसी के साथ भी अपना समय व्यर्थ न करें अन्यथा सामनेवाला भी आपकी महत्ता को नहीं समझेगा। समय के महत्व का पता सभी को होना चाहिए। लोग आपकी योग्यता से आपके समय की महत्ता को आँकते हैं। **अति सर्वत्र वर्जयेत** अर्थात समय की महत्ता को समय समझें, और समय को निरर्थक न बिताएँ। समय की महत्ता धन के समान है।

2. **दिनचर्या:** आपकी दिनचर्या सुनिश्चित करती है कि आपके लिए महत्वपूर्ण क्या है। आपकी सेहत से लेकर कामकाज तक, आपकी दिनचर्या पर ही निर्भर करते हैं। आपकी दिनचर्या में अनुशासन आपको जीवन में बहुत आगे तक ले जा सकता है।

3. **लोगों के साथ संबंध:** हमारा प्रयास होना चाहिए कि हमारे आस-पास ऐसे लोग हों जिनसे हमें सकारात्मक ऊर्जा मिलती हो। कहावत भी है कि जैसी संगत वैसी रंगत। दुनिया में आदान-प्रदान एक सामान्य व्यवहार है। आपके साथ जैसा व्यवहार होता है आप दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं। ऐसे में स्वार्थी लोगों को समझना और उनसे दूर रहना एक अच्छा निर्णय हो सकता है। जीवन में नकारात्मक लोगों से दूर रहना आवश्यक है।

4. **स्वास्थ्य की जागरूकता:** कहावत है कि **स्वास्थ्य ही धन** है और **स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है।** जरूरी है कि स्वास्थ्य की देखभाल अच्छे से की जाए। प्रतिदिन व्यायाम, संतुलित आहार और दिनचर्या का अनुशासन हमें स्वस्थ बनाएँ रखने में हमारी मदद करता है।

5. **पढ़ना:** पढ़ने की आदत हमें गंभीर और विनम्र बनाती है। इससे समय का सदुपयोग होता है और हमारी जानकारी भी बढ़ती है। पुस्तकें हमें प्रेरित करती हैं, अखबार हमें

देश-दुनिया से जोड़कर रखते हैं।

जीवन में प्रायः हम निर्णय लेने की दुविधा से घिरे रहते हैं। आवश्यक नहीं कि हमारा हर निर्णय सही हो लेकिन कोशिश यही होनी चाहिए कि निर्णय सही हो ताकि समस्याओं का समाधान हो और हम आने वाली समस्याओं से बच सकें। इतिहास-प्रसिद्ध लोग भी अपने किसी महान निर्णय की वजह से जाने गए। निकोलस टेस्ला, एलन मस्क, मार्क जुकरबर्ग, हेनरी फोर्ड आदि ने निर्णय की क्षमता से ही अपनी पहचान हासिल की।

टेस्ला की निर्णय लेने की क्षमता ने टेस्ला टर्बाइन, इंडक्टर मोटर, द शैडोग्राफ आदि जैसे कई सिद्धान्त प्रौद्योगिकी की दुनिया को दिए। थॉमस एल्वा एडिसन की अंधेरे पर विजय पाने की कहानी पूरी दुनिया जानती है। कहने का आशय ये है कि महान लोगों ने जो निर्णय लिया, उससे दुनिया में कई बदलाव आए। राबर्ट फ्रास्ट की एक कविता है 'द रोड नॉट टेकेन' जिसकी पहली पंक्ति है-

टू रोड डाइवेर्ज्ड इन अ येलो वुड

और अंतिम दो पंक्ति है-

आई टुक द वन लेस ट्रवेल्ड बाइ/ एंड दैट हैज मेड ऑल द डिफरेंसेज।

निर्णय लेने की महत्ता का उदघाटन करना ही इस कविता के उल्लेख का कारण था। व्यक्ति की भूल और सतत प्रयास व्यक्ति को महान बनाता है। दुनिया की सबसे अच्छी किताब हम स्वयं हैं यदि हम खुद को समझ लें तो सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। अंत में मैं कहना चाहूँगा कि

'ये जिंदगी की कश्ती है, सोच समझकर चलिए
जब चलती है तो किनारा नहीं मिलता
और जब डूबती है तो सहारा नहीं मिलता।'

अनिल कुमार/लेखाकार

आत्मजाल

तापसी आचार्य

रतनपुर गाँव में श्रीहरि मिश्रा एक सालों पुराने जमींदार वंश की एकमात्र संतान हैं। पत्नी, पुत्र, कन्या सहित उनका छोटा सा परिवार है। वे कुछ काम-धाम नहीं करते हैं। किसानों को उनका हिस्सा देकर जो बचता है उसमें उनका गुजारा हो जाता है। श्री हरि बाबू थोड़ा भजन-कीर्तन करते हैं, कविता और निबंध लिखते हैं। वे हमेशा अपनी प्रशंसा करते रहते हैं। यही आत्मुग्धता उनका सबसे बड़ा अवगुण है। गाँव के लोग इसलिए उनसे परेशान हो जाते हैं। कभी-कभी गाँव के लोग उनकी इस आदत को हथियार बनाकर उनका इस्तेमाल अपने हित में करते हैं।

इस तरह एक दिन बटतल्ला में चाय की दुकान पर श्रीहरि को लेकर चर्चा हो रही थी। उसी समय श्रीहरि बाजार से लौट रहे थे। उनको देखकर सभी लोग चिल्लाने लगे- अरे ओ श्रीहरि भैया, आइए...चाय तो पीकर जाइए। जमींदारी की ठसक भरी चाल से वे अंदर आए। थैले को एक तरफ रखकर चाय पीने लगे। बड़ी सी मछली की पूंछ, फूलगोभी और तरह-तरह की सब्जियाँ थैले में थी। गदाधर नाम का एक लड़का बोला- आज कोई वीआईपी मेहमान आने वाला है क्या भैया? श्रीहरि के पास अपनी प्रशंसा का एक और अवसर मिल गया। उन्होंने कहा- हाँ, एकदम वीआईपी। गदाधर भी मज़ाक में बोला- हाँ, आप तो बड़े लोगों के साथ उठते-बैठते हैं। हमारी फिक्र है इसलिए आप रतनपुर में ठहरे हैं। पर आज कौन आ रहा है? श्रीहरि बोले- जन-समाचार पत्रिका के साहित्य विभाग के संपादक अधिराज चौधरी आ रहे हैं, बहुत ही ख़ास आदमी। गाँव के लड़के तो साहित्य के बारे में कुछ जानते नहीं थे फिर भी बोले- सुने हैं बड़े विख्यात व्यक्ति हैं। वे क्या करने आ रहे हैं? श्रीहरि ने जवाब दिया- महेशपुर में साहित्य सम्मेलन कर रहे हैं। इसमें मुझे सभापति बनने का निमंत्रण देने आ रहे हैं। गदाधर ने मर्म को समझते हुए फिर व्यंग्य किया- तो आप लेखक भी हैं... हमें तो पता ही नहीं? श्रीहरि शर्मीले स्वभाव में बोले- हाँ, अपना नाम छिपाकर लिखता हूँ। लेकिन अधिराज जी अब सबके सामने मेरा परिचय कराना चाहते हैं।

गदाधर ने थोड़ी और प्रशंसा करते हुए कहा- आप तो गाँव के गर्व हैं। आप एक

आग हैं। आप इतने महान आदमी हैं, हमें पता ही नहीं। सबने जिद की- भैया, आज तो आप कुछ कविताएं सुनाकर ही जाएंगे। श्रीहर बोले- आज नहीं, फिर कभी। थैला ले जाऊंगा तभी तो घर में खाना बनेगा। चाय की कुल्हड़ फेंकते हुए श्रीहरि भाग निकले। सब लोग हँसने लगे। सबने राजन नाम के लड़के को श्रीहरि बाबू की जासूसी की ज़िम्मेदारी सौंपी। दूसरे दिन राजन से सबने पूछा- क्या पता चला? राजन ने कहा- असली बात तो मैंने नौकरानी को कुछ पैसे देकर उगलवा ली। सबने पूछा- अधिराज चौधरी आए थे? राजन बोला- नहीं। वे भाभीजी के बड़े भैया थे। परिवार सहित। इसलिए भारी-भरकम इंतजाम हुआ था। गदाधर बोला- उसने झूठ बोला, उसका मजा चखाना पड़ेगा। राजन बोला- छोड़ो भी, ऐसा नाटक करो कि जैसे हमें कुछ भी मालूम नहीं।

इसी वक्त सामने से श्रीहरि आता हुआ दिखाई पड़े। गदाधर चिल्लाया- कहो भैया, कैसा रहा आपका सम्मेलन? इससे श्रीहरि घबरा गए, लेकिन खुद को संभालते हुए बोला- बड़े मुश्किल से उन्हें मनाया कि नहीं जा सकूँगा। श्रीहरि निकलने वाला था कि इतने में लक्ष्मण आ पहुंचा। सबने पूछा- ये कौन है? श्रीहरि बोले- अरे, इन्हें नहीं जानते। यह पंचायत समिति का नेता विपक्ष है और मेरा दोस्त भी। लोग मुझे ही मेरे पास आया है। श्रीहरि ने कहानी मोड़ दी थी। इससे लड़कों को आश्चर्य हुआ। गदाधर बोला- आप राजी हैं न...? श्रीहरि बोले- मुझे बेवकूफ समझते हो क्या? मैंने कहा, दोस्त हूँ, लेकिन राजनीति मेरे लायक नहीं है। गदाधर फिर बोला- आप तो नेता पक्ष बनने वाले हैं तो लक्ष्मण को मना करेंगे ही। श्रीहरि ने चकित होते हुए पूछा- मतलब? गदाधर बोला- सत्ता वालों ने मुझे बताया था कि आपको नेता बनाने वाले हैं। सब बोल रहे थे कि स्वच्छ छवि वाले नेता की बहुत जरूरत है। श्रीहरि थोड़ा संकोच से बोला- ऐसी बात है। तो मेरा राजनीति में आना ठीक होगा क्या? सब एक स्वर में बोले- हाँ...! हम सब आप जैसे योग्य व्यक्ति को ही पंचायत प्रधान के पद पर देखना चाहते हैं। श्रीहरि बोले- ऐसी बात है तो सत्ता पक्ष को कह दीजिए मैं चुनाव में जरूर उतरूँगा। गदाधर को आँखों में इशारा करके साथियों ने कहा- हाँ,हाँ ... आप घर जाइए, बाकी हम फाइनल कर लेंगे। श्रीहरि आनंद में डूबा हुआ घर की ओर चल दिया। गदाधर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। बोला- अब इसे फँसाकर हम मुर्गे की दावत करेंगे। लेकिन ये एक रहस्य है।

दूसरे दिन चाय की दुकान पर हलचल थी। सत्ता पक्ष का ज्योति और श्रीहरि भी थे वहाँ पर।

दूसरे दिन चाय की दुकान पर हलचल थी। सत्ता पक्ष का ज्योति और श्रीहरि भी थे वहाँ पर। ज्योति इस दुकान पर जल्दी नहीं दिखता था। उसको देखकर सबको लगा कि कुछ तो गड़बड़ जरूर है। चाय पीते हुए गदाधर बोला- श्रीहरि भैया, आपका सत्ता पक्ष का पद पक्का है। अगर विश्वास नहीं है तो खुद ज्योति से पूछ लो। श्रीहरि बोले- छी...! कैसी बात करते हो गदाधर...? एक तरफ इतना सम्मान तो दूसरी ओर सवाल पूछूं।

गदाधर फिर बोला- आप अच्छे से सब जानकारी ज्योति से ले लीजिए। गदाधर की जल्दबाज़ी देखते हुए ज्योति बोला- हाँ भाई, सही बात है। पंचायत प्रधान के पद के लिए तीन नामों का पैनल बनाया गया है। लेकिन मेरा विश्वास है कि इसमें से आपका नाम ही चुना जाएगा। श्रीहरि विनयपूर्वक बोले- मैं आप सबका आभारी रहूँगा। आज मैं आप सब को दावत पर आमंत्रित करता हूँ...आपको भी ज्योति। ज्योति बोला- मैं नहीं आ सकूँगा, लेकिन गदाधर और उसके साथियों को खिलाइए दावत।

श्रीहरि के जाने के बाद साथियों ने पूछा- ज्योति ऐसा बोलने के लिए राजी कैसे हुआ? गदाधर बोला- आसान नहीं था लेकिन बहुत कोशिश करने पर मान गया वो। सब पूछने लगे कि क्या सच में श्रीहरि को प्रार्थी बनाया जाएगा? गदाधर बोला- ये सब दावत के लिए है। लेकिन ये बात है कि तीन में से एक नाम तो है श्रीहरि का।

श्रीहरि की दावत बहुत बढ़िया थी। पूरी, दाल, सब्जियाँ, मुर्गा, मिठाई सब कुछ था इसमें। श्रीहरि आत्ममुग्ध होकर खुद को पंचायत प्रधान के रूप में देख रहे थे। खाने-पीने के बाद सबने जिद की- श्रीहरि भैया, अब आपकी एक कविता हो जाए बस। श्रीहरि थोड़ा सा घबराकर बोले- हाँ...हाँ, क्यों नहीं? मैं ऊपर से डायरी लेकर आता हूँ। इसी समय दरवाजे के पीछे से लक्ष्मी भाभी की आवाज आई- आप सबलोग आज मेरे अतिथि हैं। आप आए हमें अच्छा लगा। लेकिन इसके लिए मेरे भोलेभाले पति के साथ इस तरह व्यवहार करना अच्छा नहीं। उन्होंने किसी का नुकसान नहीं किया है। अपने बारे में थोड़ा सा बढ़ा-चढ़ाकर बोलते हैं तो क्या हुआ? मैं उन्हें समझाती हूँ लेकिन नहीं सुधरते। गाँव के शरारती लड़कों को लगा कि जैसे किसी ने उनके गालों पर थप्पड़ मार दिया हो। तब तक श्रीहरि नीचे आए और बोले कि कविता की डायरी तो अधिराज जी ले गए हैं। फिर कभी सुनाऊँगा। सब लोग ठीक है...ठीक है कहते हुए चोरों की तरह भाग लिए। श्रीहरि दरवाजे पर खड़े रहे।

है...ठीक है कहते हुए चोरों की तरह भाग लिए। श्रीहरि दरवाजे पर खड़े रहे।

चुनाव के समय वादों की बौछार होती है। किसी ने कहा कि गाँव में एक स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना होगी। इसलिए सभी से धन का संग्रह किया गया। चाय की दुकान पर बैठकर लिस्ट बन रही थी। इसी समय वहाँ पर श्रीहरि आ गए। गदाधर फिर से मज़ाक करने लगा- आइए भैया, आपकी ही बात हो रही थी। स्वास्थ्य केंद्र गठन की सभा में हम आपको ही प्रधान अतिथि बनाने के लिए सोच रहे थे। आप उस दिन सुबह-सुबह आ जाइए। श्रीहरि ने पूछा- इतने लोगों के होते हुए मैं क्यों भला? सब लड़के बोले- आपको आना ही पड़ेगा... कोई बहाना नहीं। ठीक है...ठीक है कहते हुए श्रीहरि चले गए। किसी ने कहा- इस बुद्धू को कौन सम्हालेगा? गदाधर बोला- वहाँ पर पंचायत प्रधान के प्रार्थी का नाम घोषित किया जाएगा। मनोज उपाध्याय ने सबसे ज्यादा चंदा दिया है, उन्हें ही बनाया जाएगा अध्यक्ष और पंचायत प्रधान पद का प्रार्थी।

स्वास्थ्य केंद्र के उद्घाटन समारोह में बड़े-बड़े नेता रतनपुर आ गए थे। श्रीहरि की कोई खबर नहीं थी। श्रीहरि टसर का कुर्ता, धोती और गले में उत्तरीय पहने हुए सीढ़ी के नीचे खड़े थे। गदाधर का हृदय एक क्षण के लिए काँप गया। बिलकुल प्रधान अतिथि बनने पहनावा था। गदाधर वहाँ से भागने के मूड में था क्योंकि वहाँ पर थोड़ी देर पहले ही प्रधान अतिथि व पंचायत प्रधान पद के लिए मनोज उपाध्याय का नाम घोषित हो चुका था। स्पीकर पर गूंज रहा था- दस हजार रूपये का दान देकर सबसे बड़े दाता मनोज उपाध्याय बने हैं। श्रीहरि खिन्न भाव से बोले- मेरे पास चंदे के लिए अंग्रेजों के जमाने के चार चाँदी के सिक्के किए सिवा कुछ भी नहीं है। मैं आज वही स्वास्थ्य केंद्र के लिए दान में देता हूँ। लेकिन इस दान के बारे में मेरा नाम न लिया जाए। मैं इस पद के लिए बिलकुल योग्य नहीं हूँ। गदाधर का सिर शर्म से झुक गया। उन मुद्राओं की कीमत बहुत थी। गदाधर ने ढूढ़ने की बहुत कोशिश की लेकिन श्रीहरि भीड़ में गायब हो चुके थे। मंच की बत्ती जल रही थी और गदाधर हाथ में चाँदी की मुद्राओं को हाथ में लिए टूटकर रो पड़ा। आज श्रीहरि ने क्षमा मांगने का भी अवसर न दिया।

तापसी आचार्य (बसाक)/
सहायक लेखा अधिकारी

आगरा और फतेहपुर सीकरी की मनोहारी यात्रा

जयंत कुमार सील

कुछ दिनों से कहीं घूमने जाने का मन था। इतनी गर्मी में सभी जगह जाया नहीं जा सकता साथ ही ऑफिस से छुट्टी मिलना भी मुश्किल है। फिर बहुत सोच विचार कर आगरा और फतेहपुर सीकरी की यात्रा पर निकल पड़ा। इससे पहले 2010 में आगरा घूम चुका था परंतु तब फतेहपुर सीकरी घूमना नहीं हो सका था। तो अप्रैल में घूमने की योजना बना डाली। आगरा में तीन दिन और फतेहपुर सीकरी में एक दिन ठहरने की व्यवस्था भी हो गई। कोलकाता से वायु मार्ग द्वारा सुबह नौ बजे लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचा। आगरा की फ्लाइट में देर थी सोचा क्यों न लखनऊ शहर घूम लिया जाय। समीप के मेट्रो स्टेशन से हम के.डी. सिंह स्टेडियम स्टेशन गए। इस मेट्रो स्टेशन के समीप अनेक दर्शनीय स्थल है। वहां से भाड़े की गाड़ी से हम बड़ा इमामबाड़ा, छोटा इमामबाड़ा, भूल-भुलैया, आर्ट ऑफ गैलरी और सात मंजिला गए। सात मंजिला से नवाब की पत्नियां ईद का चांद देखती थीं। वहां कई तरह के रंग बिरंगे पार्क है। वहां से हम सभी रूमी दरवाजा पहुंचे। इसकी खासियत है कि यह एक ओर से देखने पर पांच मंजिल दिखता है और दूसरी ओर से एक मंजिल दिखता है।

इतना साफ सुथरा शहर देख कर हमें आश्चर्य हो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो नवाब का शहर नवाबी ठाठ के साथ खड़ा है। वहां के इमारतों की बनावट और स्थापत्य शैली बेहद खूबसूरत है। आधुनिक तकनीकी और आधुनिक यंत्रों के बिना ही ऐसे असाधारण भवनों का निर्माण असंभव प्रतीत होता है। हमलोगों का ड्राइवर बहुत भला आदमी था। जब उसने सुना कि हम लखनऊ केवल तीन घंटे रुकेंगे तो वह हमें वहां के सभी दर्शनीय स्थलों के बारे में हमें विस्तार पूर्वक बताने लगा। इमारतों के अलावा वहां कई पार्क थे जो महापुरुषों के नाम पर निर्मित थे। इसके अलावा उस शहर में कई बाग एवं मकबरे भी थे। इन सबका भ्रमण कर हम निर्धारित समय पर लखनऊ एयरपोर्ट लौट आए।

वहां से हम दोपहर साढ़े तीन बजे जा पहुंचे आगरा। साढ़े चार बजे के करीब हम होटल में प्रवेश कर गए। शाम को हम आगरा घूमे और अगले दिन फतेहपुर सीकरी जाने की योजना बनाई। अगली

सुबह साढ़े सात बजे हम फतेहपुर सीकरी निकल पड़े। फतेहपुर सीकरी पहुंचकर हम अपने होटल में फ्रेश होकर भ्रमण के लिए निकले। फतेहपुर सीकरी में प्रवेश करते ही हमने नौबत-खाना देखा। उसके अलावा वहां दीवान-ए-खास भी दिखा जहां कभी नवरत्नों की सभा होती थी। वहां हमने अनूप तालाब के पीछे अकबर महल, दीवान-ए-आम, और बादशाही दरवाजा के बाईं तरफ इक्यावन फुट ऊंचा बुलंद दरवाजा भी देखा। इसके सामने ही अवस्थित है सलीम चिश्ती की दरगाह। कहते हैं कि बाबा सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से अकबर को पुत्र की प्राप्ति हुई थी। जिसका नाम अकबर में सलीम रखा। बाद में सलीम जहांगीर के नाम से विख्यात हुए। सलीम के जन्म से अकबर इतने खुश हुए कि फतेहपुर सीकरी को उन्होंने अपनी राजधानी बनाई।

बाबा सलीम चिश्ती की दरगाह पर मन्नत मांगने वालों की भीड़ लगी रहती है। इस दरगाह के पास ही कई अन्य कब्रें भी हैं जो कि यहां के संतों एवं फकीरों की हैं। हम जब वहां गए थे, उसके दो दिन बाद ही ईद का त्योहार था। ईद में फतेहपुर सीकरी की रात रोशनी से नहाई रहती है। इस त्योहार के दौरान यहां काफी भीड़ भी रहती है। वहां हमने जोधाबाई महल, बेगम रुकैया महल आदि भी देखे। इसके अलावा बीरबल महल, तानसेन महल भी यहां के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। फतेहपुर सीकरी के कई महल खंडहरों में तब्दील हो चुके हैं।

वहां से करीब नौ बजे होटल पहुंचकर, स्नान-भोजन आदि कर हमने थोड़ा विश्राम किया और शाम को फतेहपुर सीकरी के बाजारों में घूमने गए। हमने रात में अचानक मथुरा- वृंदावन घूमने का मन बनाया। अगले दिन सुबह हम सात बजे वृंदावन की ओर निकल पड़े। हमारी गाड़ी भरतपुर होकर करीब नौ बजे वृंदावन पहुंच गई। रास्ता बेहद सुंदर था। रास्ते के दोनो ओर लहलहाती फसलों के खेत बेहद सुंदर लग रहे थे। वृंदावन पहुंचकर हम पहले प्रेम मंदिर गए। रविवार होने के कारण प्रेम मंदिर में बहुत भीड़ थी। प्रेम मंदिर का सौंदर्य अद्भुद था। वहां भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं को मूर्तियों द्वारा प्रदर्शित किया गया था। प्रेम मंदिर के पास ही हम इस्कॉन मंदिर गए। इसके बाद हम किसी अन्य मंदिर में नहीं गए क्योंकि 12 बजे सभी मंदिर बंद रहते है। वृंदावन से हम मथुरा की ओर रवाना हुए। मथुरा पहुंचकर थोड़ा भोजन और विश्राम के बाद हम श्री कृष्ण के जन्म स्थान के दर्शन करने गए। वहां हमने कंस के कारागार उस स्थल का दर्शन किए जहां श्री कृष्ण का जन्म हुआ था। कारागार के चारों ओर अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएं थी। मथुरा से हम आगरा वापस आए।

आगरा में हम अगली सुबह ताजमहल देखने पहुंचे। आगरा का केंद्र-बिंदु ताजमहल अपने अनुपम स्थापत्य और बेजोड़ शिल्पकारी से परिपूर्ण दुनिया के सातवें अजूबे के रूप में हमारे सम्मुख था। सफेद संगमरमर पर उकेरी गई नक्काशी तथा रंगीन पत्थरों की सज्जा अद्भुद शिल्प-कौशल का परिचय दे रहीं थीं। ताजमहल को देखकर हम आगरा फोर्ट गए। मुगल सम्राट अकबर ने इस फोर्ट का निर्माण करवाया था।

आगरा फोर्ट से ताजमहल दिखता है। इसके बाद हम स्वामी नारायण मंदिर भी गए और वहां से पहुंचे अकबर की समाधि स्थल। इन सभी स्थलों पर घूमने के बाद करीब चार बजे हम होटल पहुंचे। होटल पहुंचकर थोड़ा विश्राम और भोजन के बाद हमने अपना बैग सजाना शुरू किया क्योंकि अगले दिन 12 बजे हमारी फ्लाइट थी। इन दर्शनीय स्थलों की सुंदर स्मृतियों को अपने मानस पटल पर सहेजकर हम अपने घर को लौट गए।

जयंत कुमार सील/वरिष्ठ लेखा अधिकारी

लोकल ट्रेन

सचिन प्रसाद

महानगरों की 'लाइफ लाइन' कही जाने वाली लोकल ट्रेन का नाम सुनते ही लोगों के मन में महानगरों में चलने वाली एक ऐसे ट्रेन की छवि आ जाती है जो यात्रियों से खचाखच भरी हुई होती है, जहां पाँव रखने तक की जगह नहीं होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि नौ डिब्बों वाली लोकल ट्रेन की कुल क्षमता 1700 लोगों की होती है परंतु उसमें लगभग 4000 से 4500 लोग यात्रा करते हैं। कोलकाता में चलने वाली लोकल ट्रेनें भी ऐसी ही हैं।

कोलकाता लोकल ट्रेन एक उपनगरीय रेल प्रणाली है जो कोलकता महानगरीय क्षेत्र और इसके आस पास के क्षेत्रों में सेवा प्रदान करती है। इसकी शुरुआत अंग्रेजों द्वारा 15 अगस्त 1854 में की गई थी। इसी दिन से हावड़ा और हुगली स्टेशनों के मध्य 38.6 कि.मी. मार्ग पर नियमित सेवाएं शुरू की गई थीं। तब से आज तक यह रेल नेटवर्क बहुत व्यापक और विस्तृत हो गया है। आज 458 स्टेशनों और 1501 कि. मी. की ट्रैक लंबाई के साथ, यह ट्रैक लंबाई और स्टेशनों की संख्या के मामले में भारत का सबसे बड़ा और विश्व का सातवाँ सबसे बड़ा उपनगरीय रेल नेटवर्क है जिसकी पांच मुख्य एवं उन्नीस शाखा लाइनें है। इस उपनगरीय रेल प्रणाली में प्रतिदिन 3.5 मिलियन और सालाना लगभग 1.2 बिलियन लोग यात्रा करते हैं।

यह उपनगरीय रेलवे प्रणाली दो रेलवे जोनों, पूर्वी रेलवे जोन और दक्षिण पूर्व रेलवे जोन में बटा हुआ है। पूर्वी रेलवे जोन को सियालदह और हावड़ा डिवीज़न और दक्षिण पूर्व रेलवे जोन को खड़गपुर डिवीज़न में विभाजित किया गया है। लोकल ट्रेन मुख्यतः हावड़ा और सियालदह डिवीज़न में ही चलती है। हावड़ा जंक्शन की बात करें तो इसके पास सबसे ज्यादा स्टेशन होने के साथ सबसे व्यस्त स्टेशन होने का रिकॉर्ड भी है। इसमें कुल 24 प्लेटफॉर्म और 26 रेलवे ट्रैक हैं जहाँ से प्रतिदिन 600 से ज्यादा ट्रेनें गुजरती हैं। यहां लगभग 10 लाख से ज्यादा लोग प्रतिदिन यात्रा करते हैं।

सियालदह स्टेशन भी देश के सबसे व्यस्त स्टेशनों में से एक है। इसकी शुरुआत 1869 ई. में हुई थी। 1978 से

पहले यह ट्राम स्टेशन भी हुआ करता था। वर्तमान में इसमे कुल 21 प्लेटफॉर्म और 28 लाइनें है। सियालदह स्टेशन मुख्यतः तीन भागों में बंटा हुआ है - उत्तर, मेन और दक्षिण। उत्तर में कुल 5 प्लेटफॉर्म, मेन में 9 प्लेटफॉर्म और दक्षिण में कुल 7 प्लेटफॉर्म हैं। यहां प्रतिदिन लगभग 12 लाख यात्री यातायात करते है। दो सबसे व्यस्त स्टेशन से जुड़े होने के कारण यहां के लोकल ट्रेनों में बहुत भीड़ होती है।

ये ट्रेनें लगभग 5 मिनट के अंतराल पर किसी न किसी स्टेशन पर रुकती हैं और यात्रियों को लेकर अगले स्टेशन के लिए रवाना होती है। अत्यधिक भीड़ के कारण लोग किसी प्रकार लड़ते झगड़ते ट्रेन के गेट पर लटककर किसी प्रकार से अपने गंतव्य तक पहुंचते हैं। यह परिस्थिति आफिस ऑवर यानी सुबह में 10 बजे से पहले और शाम 5 बजे के बाद भयावह हो जाती है। सुबह सियालदह और हावड़ा जानेवाली ट्रेन में और शाम में सियालदह और हावड़ा से रवाना होने वाली ट्रेनों में इतनी भीड़ होती है कि प्रतिदिन सफर ना करने वाले लोगों के लिए ट्रेन में चढ़ना भी मुश्किल हो जाता है और किसी तरह यदि ट्रेन में वे चढ़ भी जाते हैं तो बैठने की तो बात ही छोड़िये आराम से खड़ा होना भी दुष्कर होता है। डिब्बे के दरवाजे के सामने ही भीड़ में फंसे रहना पड़ता है। प्रत्येक स्टेशन पर यात्री चढ़ते-उतरते रहते हैं जिससे शरीर की बुरी हालत हो जाती है।

ट्रेनों में इतनी भीड़ होती है कि कुछ यात्री ट्रेन में चढ़ ही नही पाते हैं और कुछ अपने स्टेशन पर उतर ही नहीं पाते हैं। यदि आपको किसी स्टेशन पर उतरना होता है तो आपको दो स्टेशन पहले से ही यात्रियों के मध्य से स्वयं के लिए रास्ता बनाना पड़ता है अन्यथा आप उतर नही पाएंगे। यदि आपको अगले स्टेशन पर उतरना नहीं है और आप दरवाजे के सामने खड़े हैं तो आप भीड़ द्वारा अगले स्टेशन पर उतार दिए जाएंगे।

इस भीड़ से बचने के लिए आपको तो सबसे पहले बैठने के लिए सीट ढूंढनी होगी। सीट न मिलने पर आपको अनुभवी यात्रियों की तरह दो सीट के मध्य की खाली जगह में खड़े हो जाना होगा। इससे आप भीड़ की धक्का-मुक्की से बच पाएंगे और बैठे हुए यात्रियों के उतरते ही आपको बैठने की जगह मिल जाएगी।

इन मुसीबतों के बीच न जाने कैसे ट्रेन में सामान बेंचने वाले वेंडर "जोल लगबे जोल....ठंडा जोल आछे..., बादाम आछे

मिस्टी बादाम, गोरोम-गोरोम दिलखुश होबे ....." इत्यादि कहते हुए महाभारत के अभिमन्यु की तरह उस चक्रव्यूह रूपी भयानक भीड़ को भेदते हुए अपना सामान बेंचते हैं। वे इतना अभ्यस्थ हो चुके होते हैं कि अपना सामान लेकर वे आसानी से ट्रेन के डिब्बे बदलते, चढ़ते- उतरते अपना सामान बेचते हैं।

लोकल ट्रेन में इतनी भीड़ का यह कारण बिल्कुल भी नहीं है कि ट्रेन की संख्या कम है। आफिस ऑवर में प्रत्येक 5 से 10 मिनट में 1 ट्रेन तो होती ही है। भीड़ का मुख्य कारण है-हुगली नदी के किनारे बसे शहरों की अधिक आबादी और यहां रोजगार एवं कल-कारखानों की कमी भी है। इन शहरों में वैसे तो कई कल-कारखाने, विशेषकर जूट की मिलें हैं परंतु इनमें से अधिकतर अब बंद हो चुकी हैं। इसलिए लोग रोजगार के लिए बड़े शहरों में जाते हैं। अन्य कारण यह भी है कि भारत की राजधानी रह चुका कोलकाता शहर शुरू से ही बाजार एवं व्यापार का केंद्र रहा है। इसके अलावा मोटरगाड़ी तैयार करने का कारखाना, सूती-वस्त्र उद्योग, कागज-उद्योग, विभिन्न प्रकार के इंजीनियरिंग उद्योग एवं चाय विक्रय केन्द्र आदि यहाँ अवस्थित हैं। कोलकाता में कई बड़ी भारतीय निगमों की औद्योगिक ईकाईयां स्थापित हैं, जिनके उत्पाद जूट से लेकर इलेक्ट्रॉनिक सामान तक हैं। यहां कई बड़ी कंपनियों के मुख्यालय भी हैं। अतः इन शहरों से बड़ी संख्या में लोग कोलकाता एवं उसके आस पास के क्षेत्रों में रोजगार एवं काम की तलाश में आते हैं और अपने घर से वे लोग प्रतिदिन ट्रेन की यात्रा करते हैं । इसके साथ ही सियालदह, कोलकाता एवं हावड़ा स्टेशन से लगभग भारत के सभी राज्यों में जाने वाली ट्रेनें खुलती हैं जिसके कारण लोग लोकल ट्रेन के द्वारा इन स्टेशनों में अन्य राज्यों को जाने के लिए आते हैं। इस कारण भी लोकल ट्रेन में भीड़ बढ़ती है।

इतनी मुसीबतों और परेशानियों के बावजूद भी लोग अपना मार्ग ढूंढ ही लेते हैं। प्रतिदिन यात्रा करने वाले यात्रियों के मध्य घनिष्ठ मित्रता हो जाती है और हो भी क्यों न, 8 से 12 घंटे की ड्यूटी और 2 से 3 घंटे की यात्रा के पश्चात उनके पास समय कितना ही बचता होगा? घर पहुँचते ही थका हुआ शरीर सिर्फ आराम ढूंढता है ताकि फिर सुबह जल्दी उठकर कार्य स्थली पहुँच सके। वे अपना सामाजिक जीवन ट्रेन के उन्हीं 2 से 3 घंटों में जीते हैं। प्रतिदिन यात्रा करने वाले यात्रियों के मध्य मित्रता इतनी घनिष्ठ हो जाती है कि जाति- पाति, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब का भेद उनके मध्य नहीं रह जाता। बड़े-बड़े अधिकारियों की मित्रता अर्दलियों या निजी क्षेत्र में कार्य

कर रहे किसी कर्मचारी से हो जाती है।

वे प्रतिदिन किसी ट्रेन के एक ही डिब्बे में चढ़ते है ताकि अपने मित्रों के साथ यात्रा कर सकें, उनके साथ अपना सुख-दुख साझा कर सकें, गप्पे मार सकें, हंसी-मज़ाक कर सकें, लूडो-ताश जैसे खेल खेल सकें। रास्ते में मंदिर आते ही "जय श्री राम "और "हर हर महादेव" के नारे लगा सकें। कुछ लोग तो घर से ब्लूटूथ स्पीकर्स भी लाते हैं और अपना मनपसंद संगीत सुनते हुए यात्रा करते हैं। उन्हें देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि वे लोग अपने कार्यालय नहीं बल्कि कहीं छुट्टियां मनाने जा रहे हैं।

लंबी दूरी तक जाने वाली ट्रेनों (एक्सप्रेस ट्रेनों) में सफर कर रहे यात्रियों के लिए यह तो आम बात है क्योंकि लंबा सफर होने के कारण लोग मनोरंजन और टाइम पास के लिए इन खेलों और वार्तालाप का सहारा लेते हैं। परंतु लोकल ट्रेन में यह आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। इतना ही नहीं किसी के घर पर यदि कोई अनुष्ठान जैसे शादी-विवाह, पूजा-पाठ इत्यादि होता है तो वे अपने सहयात्री मित्रों को भी बुलाते हैं और वे खुशी-खुशी वहाँ जाते भी हैं। यहाँ तक कि किसी मित्र का जन्मदिन आने पर रात को लौटते समय ट्रेन में ही केक काटकर जन्मदिन की बधाइयां देते हैं। सहयात्री आपस में एक परिवार की तरह हो जाते हैं।

परंतु समय के साथ यह परंपरा भी अब धीरे धीरे बदल रही है। अब मोबाइल लोगों का प्रिय मित्र बन चुका है। अब उनको अपने सहयात्रियों से कोई मतलब नहीं। अब लोग ट्रेन में ईयरफ़ोन लगा कर फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम व ट्विटर आदि चलाते रहते हैं, गाने सुनते हैं, फिल्में देखते हैं। उन्हें अपने आस-पास की हो रही घटनाओं से कोई मतलब नहीं होता। ऐसे लोगों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है जिसके कारण आशंका है कि आने वाले समय में लोकल ट्रेन भी अपनी जीवंतता खो देगी।

सचिन प्रसाद/कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी में कामकाज बहुत आसान है,
भाषा अपनी पहचान है।
तो आइए संकल्प लें,
हिंदी के अनवरत प्रयोग का।

सौभाग्य

अमित कुमार

कुछ वर्ष पहले की ही बात है। मेरे जीवन में एक ऐसी घटना घटी जिसे मैंने अपने पूरे जीवनकाल के लिए सजोकर रखने का प्रण ले लिया। मेरा प्रयास है कि अपने पूरे परिवार, गाँव-समाज से भी इस घटना को साझा करूँ ताकि वे लोग भी इस घटना को आगे साझा कर सकें। बाकी भगवान की मर्जी कि किसी को कहा तक सफलता मिलेगी.....!

यह वाकया उस वक्त का है जब मैं गर्मी की छुट्टी में अपने परिवार वालों के साथ गाँव गया था। मैंने देखा एक वृद्ध व्यक्ति अपने बच्ची की खुशी को पूरा करने के लिए पास ही के एक होटल में ऐसे चला आता है, मानो वह जीवन में किसी भी होटल में पहली बार गया हो... वही फटे पुराने कपड़े, पाँव में गंदी मटमैली सी चप्पल पहने हुए। बच्ची और वह वृद्ध व्यक्ति उस होटल की खूबसूरती को निहारने में मग्न हो जाते हैं। तभी वहाँ एक वेटर आता है और उस वृद्ध व्यक्ति को ऊपर से नीचे की ओर देखता है और कहता है कि यहाँ इस हालत में अंदर तो आ गये पर यहा कुछ भिक्षा नहीं मिलेगी। वह वृद्ध व्यक्ति कहता है कि मैं यहाँ भिक्षा मागने नहीं आया हूँ बल्कि अपने बच्ची को कुछ खिलाने लाया हूँ। तभी वेटर कहता है- पैसे तो है न तुम्हारे पास। वह वृद्ध व्यक्ति कुछ देर रुक जाता है और फिर कहता है हाँ..हाँ, है न मेरे पास। तभी वह वेटर उसे दूर किनारे की टेबल में बैठने को कहता है। वे दोनों वहाँ जाकर चुपचाप बैठ गए। उसे पता ही नहीं कि आगे क्या करना होता है। होटल में आने के बाद वह वृद्ध व्यक्ति डरा सहमा हुआ सा बैठा कुछ सोच रहा था तभी वहा वेटर आकर पानी की दो ग्लास देकर पूछता है कि आपलोगों के खाने के लिए क्या लाऊं? वह व्यक्ति सोचने लगता है। तभी उसे कुछ दूर बैठे टेबल पर एक फैमिली नजर आती है। वहाँ छोटा सा बच्चा कुछ खा रहा होता है। उस वृद्ध व्यक्ति को वह क्या खा रहा है, नहीं दिखता परंतु वह उस वेटर से कहता है कि उस फैमिली के बच्चे जो खा रहे हैं, आप कृपया मेरे बच्ची के लिए भी वही लाकर दें।

ये सब बातें उस वेटर से हो रही होती हैं कि उस फैमिली की नजर भी उस वृद्ध व्यक्ति पर जाती हैं। वेटर कहता है- उसका

नाम पाव-भाजी है। तो वृद्ध व्यक्ति दोबारा कहता है- हाँ भाई, वही जो भी नाम है....वही मुझे भी एक प्लेट दे दीजिए। तभी वेटर कहता है- और कुछ नहीं बस एक प्लेट पाव-भाजी ही चाहिए तुमको...? वेटर वहाँ से चला जाता है। यह दृश्य वे फैमिली वाले देख रहे थे तभी उस फैमिली के बच्चे जो पाव-भाजी खा रहे थे अपने पापा से पूछते हैं-व्हाट हैपेंड पापा? बच्चे के पापा कहते हैं- कुछ नहीं बेटा आप अपना खाना खाओ। वह वृद्ध और उसकी बच्ची इधर-उधर देख रहे थे। सभी टेबल पर खाना आता देख वह बच्ची वृद्ध पापा से पूछी- हमारे टेबल पर खाना कब तक आएगा और कितना समय बैठना पड़ेगा? यह सब सोचते वह कहती है कि लगता है हमलोग यहाँ आकर कुछ गलती कर बैठे हैं। तभी तो सभी टेबल पर खाना परोसा जा रहा है परंतु हमलोगों को वेटर बोलकर चला गया है कि ठीक है मैं पाव-भाजी लेकर आ रहा हूँ परंतु अभी तक नहीं आया। तभी उस वृद्ध व्यक्ति की आँखों में आँसू आ जाते हैं और यह देख बच्ची अपने वृद्ध पापा से कहती है-पापा चलो यहाँ से मुझे कुछ भी नहीं खाना यहाँ और हमलोग यहाँ कभी नहीं आएंगे।

कुछ दूर बैठी वह फैमिली सब कुछ देख रही थी। अचानक उस फैमिली ने कुछ सोचा और फिर उस वेटर को बुलाया और पूछा कि आखिरकार उस वृद्ध व्यक्ति के टेबल के खाने के ऑडर को क्यों नहीं दिया? तब वेटर कहता है- सर अगर मैं उन जैसे लोगों को अटैंड करूंगा तो आप जैसे लोग नाराज हो जाएंगे। क्योंकि बहुत से ऐसे फैमिली वाले आते हैं जो अपनी लाइफ-स्टाइल में मशगूल रहते हैं। और इस तरह के फटे-पुराने कपड़े पहनने वाले और पैर में टूटी हुई चप्पल पहने वृद्ध व्यक्ति को देखकर कहने लगते हैं कि ये लोग अगर आते हैं तो हमलोंगों के स्टैंडर्ड का क्या होगा? तभी उस फैमिली वाले ने वेटर से कहा- ये सोच रखने वाले तो बिलकुल गलत सोचते हैं। आखिरकार वह भी इंसान है। अगर भगवान ने उसे ऐसा बनाया है तो उसकी क्या गलती है? वेटर कहता है- सर आप बिल्कुल सही बोल रहे है पर मैं क्या कर सकता हूँ? तभी उस फैमिली ने वेटर से कहा- सबसे पहले आप उस वृद्ध व्यक्ति के टेबल का ऑडर उसे दें और फिर मेरे पास ऑडर लेने आइए। वेटर उस वृद्ध व्यक्ति के पास जाकर कहता है कि आपका एक प्लेट ऑर्डर पाव-भाजी मैं लेकर आ रहा हूँ। आप कृपया ना जाए अन्यथा वे फैमिली वाले चले जाएंगे और मालिक मुझे नौकरी से निकाल देगें।

यह बात सुनकर वह वृद्ध व्यक्ति अपनी बच्ची के साथ चुप-चाप वहाँ बैठे रहे। फैमिली वाले उस वृद्ध व्यक्ति के पास

आकर बैठ जाते हैं और पूछने लगते है बाबा आप कहाँ से आ रहे हैं?..... कहाँ रहते हो?.... आप क्या करते हैं?.... यह सुनकर उस वृद्ध व्यक्ति ने कहा- मैं यहीं पास ही के गाँव में रहता हूँ, वहीं से आया हूँ और मैं मजदूरी करता हूँ। मेरी बेटी अपने पूरे गाँव में मैंट्रिक की परीक्षा में प्रथम स् थान लायी है। मैंने अपनी बच्ची से वादा किया था कि तुम्हारी परीक्षा के अच्छे परिणाम आने के बाद अच्छे होटल में खाना खिलाऊंगा। इसी वजह से हमलोग यहाँ आए हैं। वह व्यक्ति कहता है- पूरे गाँव में प्रथम आना तो बहुत ही अच्छी बात है। वह व्यक्ति पुनः कहता है- कोई नहीं आप आराम से बैठो। मैं वेटर को बोलता हूँ कि सबसे पहले वे आपके ऑडर को आप तक तुरंत लाएँ। वह व्यक्ति वेटर को बुलाता है और कहता है- आप पहले इस वृद्ध व्यक्ति के टेबल पर खाना सर्व करो। वेटर कहता है- जी सर मैं अभी ले आता हूँ। यह सुनकर उस वृद्ध व्यक्ति की आँखों में आँसू आ जाते है। उस फैमली वाले ने कहा- कोई नहीं सर, मैं समझ सकता हूँ क्योंकि मैंने भी अपने गाँव से पढ़ाई–लिखाई की है। और आज मैं जो कुछ भी हूँ अपने माता-पिता की बदौलत हूँ।

यह सुनकर वह वृद्ध व्यक्ति अंदर ही अंदर बहुत खुश होता है और आँसू पोंछते हुए कहता है- आप कहाँ से हो बेटा....? और आप क्या करते हो.....? यह सुनकर उस व् यक्ति ने उत्तर दिया कि मैं भी यहीं पास के गाँव से हूँ और मेरे माता-पिता ने भी मुझे बड़ी मुश्किल से पढ़ाया–लिखाया और आज मैं आई.ए.एस. हूँ। मुझे मेरे माता-पिता से बहुत कुछ सीखने को मिला जो मैं आज साझा कर रहा हूँ। अपनों को अपने से दूर होते देखा है मैंने। यही वे पैसे हैं जो इंसान को इंसान की अहमियत बताते हैं। तभी वेटर वहाँ खाना लेकर आ जाता है। वह फैमिली वाला व्यक्ति कहता है- ये क्या ऑडर दिया है आपने? पाव-भाजी, वो भी एक प्लेट? तभी वृद्ध व्यक्ति कहता है- मेरी बेटी को यही चाहिए थी..... और मेरा पेट भरा हुआ है। तभी वह फैमिली वाला व्यक्ति समझ जाता है कि हो न हो उसके पास इतने पैसे नहीं होगें तभी तो उन्होंने अपने लिए कुछ भी खाने को ऑर्डर नहीं किया है।

यह सोचकर उसे अपने माता-पिता की याद आ गई। उसने कहा- मेरे भी माता–पिता ऐसा ही किया करते थे। खुद भूखे रहकर भी मुझे खिला–पिला दिया करते। मैं जब भी पूछता कि पापा-मम्मा आपने कुछ खाया कि नहीं तो वे कहते- हाँ बेटा, मैं तो तुमसे पहले ही खाना खा लेता हूँ ताकि मैं तुम्हें आराम से खाना खिला सकूँ। एक दिन मैंने देखा कि मेरे माता–पिता

ऐसा ही किया करते थे। खुद भूखे रहकर भी मुझे खिला–पिला दिया करते। मैं जब भी पूछता कि पापा-मम्मा आपने कुछ खाया कि नहीं तो वे कहते- हाँ बेटा, मैं तो तुमसे पहले ही खाना खा लेता हूँ ताकि मैं तुम्हें आराम से खाना खिला सकूँ। एक दिन मैंने देखा कि मेरे माता–पिता खाना खाने के बाद बचे हुए कुछ खाने को बांटकर खा रहे हैं। तभी मैंने पूछ लिया कि पापा-मम्मा आपन मुझसे झूठ क्यों बोलते हैं? माता-पिता ने कहा- नहीं बेटा, मैं तो सच कह रही हूँ, बात यह है कि तुम्हें खाना खिलाने के बाद कुछ खाना बच गया था तो हमलोगों ने सोचा कि क्यों नहीं हम दोनों इस बचे खाने को एक साथ में मिलकर खा लें...बस यही बात है बेटा। मैं चुप रहा। एक दिन की बात है मैंने देखा कि घर में तो खाना बहुत कम बना है। जब माता-पिता मुझे खाना खिलाने लगे तो मैंने पूछा- आपलोगों ने खाना खा लिया पापा-मम्मा? मम्मा और पापा ने एक साथ जबाब दिया-हाँ बेटा...हमलोगों ने तो बहुत ही पहले खाना खा लिया तभी तो बेटा मैं तुम्हे खाना खिला रही हूँ। मैं समझ गया और माता-पिता से कहा- आप मेरी कसम खाकर कहो कि आप लोगों ने खाना खा लिया है। यह बात सुनकर माता-पिता के आँखों में आँसू आ जाते है। वे बोले- बेटा देखो, हमलोग मजदूर हैं और इतना कमा नहीं पाते कि तुम्हारी पढ़ाई–लिखाई और घर का खाना ठीक से हो सके। इसलिए हमलोग तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई के साथ–साथ तुम्हें हर खुशी दे सकें जो तुम्हें मिलनी चाहिए। यह सब बात सुनते ही हमसब एक दूसरे से सिमटकर रोने लगते हैं। यह बात याद आते ही ही मेरी भी आँख में आँसू आ जाते हैं सर।

उस फैमिली वाले ने अपनी यादों को पीछे छोड़ते हुए वेटर को बुलाया और कहा- यहाँ पर बर्गर, पिज्जा और बच्ची को जो भी पसंद है वे सब कुछ लाकर दो तभी वृद्ध व्यक्ति कहता है नहीं–नहीं बेटा रहने दो। सच कहूँ तो मुझे सच में भूख नहीं लगी है। तब उस फैमिली वाले व्यक्ति और उसके परिवार के सभी सदस्य अपने टेबल से उठकर उस वृद्ध व्यक्ति के टेबल पर चला आता है और साथ में मिलकर खाना खाते हैं। खाने के बाद में वृद्ध व्यक्ति मन ही मन में सोचने लगता है कि पता नहीं खाने–पीने में कितने पैसे का बिल बना होगा और मैं उसे कैसे दे पाऊँगा? इतने में ही वह फैमिली वाला व्यक्ति वेटर को बुलाकर टेबल का बिल को मँगवाता है। बिल रूपये तीन हजार से अधिक का हो जाता है। तभी वृद्ध व्यक्ति घबरा जाता है और कहता है इतने कम खाने–पीने का इतना पैसा....बाप रे बाप... तभी वह फैमिली वाला व्यक्ति वेटर को पैसे दे देता

है और वेटर को कहता है कि आप लोग इस बात का ध्यान रखें कि यहाँ पर आए हुए सभी कस्टमर को एक जैसे देखना आपका पहला कर्तव्य होना चाहिए, न की अच्छे पहनावे वाले व्यक्ति को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह सब बात सुनकर वेटर सिर झुकाकर चुप हो जाता है... तभी वह फैमिली वाला व्यक्ति बच्ची को बहुत सारी दुआएँ और आर्शीवाद देकर कहता है- बेटी अपने माँ–बाप का तुमने इतना नाम किया है और आगे भी माँ-बाप का सर कभी न झुकने देना.....यह कहकर वह फैमिली वाला व्यक्ति उस वृद्ध व्यक्ति को प्रणाम करते हुए कहता है- ये मेरा नंबर है, कभी भी किसी भी तरह की कोई मदद चाहिए तो आप मुझे कॉल कर लीजिएगा। मैं हमेशा ही आपकी मदद के लिए तैयार रहूँगा। यह बोलकर वे फैमिली वाले उस होटल से बाहर अपने घर की ओर प्रस्थान कर गए।

तब वह बच्ची अपने वृद्ध पापा से पूछती है कि वे अंकल कौन थे जिन्होंने हमलोगों के साथ मिलकर खाना खाया और हमें बहुत सारा आर्शीवाद दिया। वह वृद्ध व्यक्ति कहता है कि वे बहुत ही भले मानुष थे। आई.ए.एस. है वें। यह बात सुनकर बच्ची कहती है कि बाबा ये आई.ए.एस. क्या होता है। तब उसके बाबा कहते हैं- बेटी मुझे भी नहीं पता, परंतु मुझे लगता है कि बहुत भला मानुष वाला कुछ होता होगा। यह सब सुन उसकी बच्ची अपने मन ही मन में आई.ए.एस. बनने के बारे में सोचा। वह बच्ची जानकारी हासिल करने लगी और आगे अपनी पढ़ाई के दौरान ही आई.ए.एस. भी बनने का मन में प्रण कर लिया और स्नातक होते ही प्रथम प्रयास में आई .ए. एस. बनकर अपने गाँव का, अपने बाबा का और उस फैमिली वाले व्यक्ति का नाम रौशन कर दिया जिसके बारे में वह अभी भी कुछ नहीं जानती और उसी के पदचिन्हों पर चलने का प्रयास करने लगी। कुछ वर्षों के बाद अचानक उसकी मुलाकात उस फैमिली वाले व्यक्ति से हो जाती है। वह बच्ची तो उस फैमिली वाले व्यक्ति को पहचान जाती है पर वे नहीं पहचान पाते। तभी वह बच्ची पुरानी यादें साझा करते हुए कहती है- मैं जो भी हूँ, आपके आर्शीवाद के बदौलत हूँ और उन्हें चरण छू कर प्रणाम करती है।

अमित कुमार/वरिष्ठ लेखाकार

वहम

प्रियंका संजीव सिंह

करीब चार साल बाद पूरा ग्रुप इकट्ठा हुआ और वो भी किसी की शादी या बर्थडे पार्टी के लिए नहीं, बल्कि घूमने के लिए। कई बार प्लान बना, कभी किसी ने कोई बहाना बनाया तो कभी कोई आने को राज़ी न हुआ।

खैर मेहनत–मशक्कत करते, सभी को मनाते हुए किसी तरह इस बार पूरा ग्रुप जुटा और घूमने के लिए जिस जगह को चुना गया, वो सभी के बकेट लिस्ट का एक लंबे समय से हिस्सा था। अपने जीवन में हम सभी एक बार हिमाचल प्रदेश अवश्य जाना चाहते थे और इस दफे सबने एक ही बार में इसके लिए अपनी हामी भी दे दी। घूमने का कार्यक्रम बनाने का पूरा जिम्मा संजू को दिया गया। सात लोगों का ग्रुप था जिसमें, चार लोग नितिन, संजू, अनुपम और नंदन कोलकाता से और कुश, सैम और अक्षय मध्य प्रदेश से आ रहे थे। ये तय हुआ कि अब से ठीक 6 दिन बाद दोनों ग्रुप दिल्ली में मिलेंगे। कोलकाता वाला ग्रुप इस ट्रिप को लेकर थोड़ा ज़्यादा ही उत्सुक था, सो इस ग्रुप ने यह तय किया कि दो दिन पहले पहले ही दिल्ली चला जाए।

सौभाग्य से एक दिन बाद की दिल्ली की फ्लाइट भी बजट में मिल गई। कोलकाता वाला पूरा ग्रुप एक दूसरे के आस–पास ही रहता है, इसलिए जाने वाले दिन को सबने एक साथ ही एयरपोर्ट पहुँचना तय किया। नंदन और अनुपम ने नितिन और संजू को रास्ते से ले लिया। नियत समय से सभी एयरपोर्ट पहुँच गए। वहाँ की सभी कारवाई पूरी कर फ्लाइट में बैठने के बाद सबने राहत की सांस ली।

उनकी फ्लाइट टाइम से दिल्ली लैंड कर चुकी थी। दिल्ली पहुँचने के बाद लगा कि अब टूर शुरू हो चुका है। सब कुछ लेकर तय दिन और समय से दिल्ली पहुँचना भी इस ग्रुप के लिए एक बहुत बड़ी सफलता थी, क्योंकि उन सबका ऐसा रूटीन और रिकॉर्ड था कि किसी न किसी के कारण फ्लाइट छूटना कोई बड़ी बात न थी। खैर, इस दफ़े सबने समय का पूरा ध्यान रखा और तय कार्यक्रम के अनुसार आगे की याला के लिए दिल्ली पहुँच गए।

अपने सूत्रधार की भूमिका निभाते हुए संजू ने पहले ही जेएनयू के हॉस्टल में सबके रुकने के लिए दो कमरों का इंतजाम कर

रखा था। इस भूमिका को वह थोड़ा सीरियसली ले रहा था। कोलकाता ग्रुप का दिल्ली में दो दिन का कार्यक्रम पहले ही सबके सुझाव और रजामंदी से तय हो चुका था। इस ग्रुप के सभी लोगों की उच्च शिक्षा का केंद्र दिल्ली ही था। सो इस ट्रिप के बहाने सबने तय किया कि पुरानी यादों को फिर से ताज़ा किया जाए।

जेएनयू की कैंटीन में दोपहर का भोजन कर सभी को पुराना स्वाद याद आ गया। थोड़ा आराम कर शाम को सभी पुराने अड्डों पर जाने का मन बनाया गया। विश्वविद्यालय के दिनों को वापस से जीने का मौका मिल रहा था, संजू का मन यही सोच कर गद-गद था कि कैसे इन क्षणों को जी भर कर जी लिया जाए? वैसे भी दिल्ली से संजू की भावुकता बहुत ज़्यादा थी। यहीं आ आकर तो उसे समझ आया कि जीवन में कितना कुछ करने को है।

दिन भर कोलकाता वाला ग्रुप घूमता और रात को आने वाले दिनों की रूपरेखा तैयार करने के लिए सैंकड़ों प्लानिंग चलती। सब के सब बहुत उत्साहित थे। संजू को तो उत्सुकतावश नींद भी कम ही आती। रात को सोते समय वह दिन भर हुई घटनाओं की लड़ियाँ जोड़ता रहता। इतना ही नहीं, आने वाले दिनों में कब कहाँ जाना है? किस दिन को क्या करना है, यह सब लगातार उसके दिमाग में घूमता रहता। कभी-कभी संजू और निशा में इस बात पर बहस भी हो जाती थी। निशा का ज़रूरत से ज़्यादा प्री–प्लानिंग करना संजू को न भाता। लेकिन अब जब उसे यह भूमिका मिली है तब वह मन ही मन निशा को याद करता और तुलना करता कि दोनों में कौन ज़्यादा अच्छा प्लानर है?

एम. पी. वाले ग्रुप को अभी आने में टाइम था। प्लान के अनुसार दिल्ली तक तो दोनों ग्रुपों ने अपनी यात्रा तय कर ली थी। दिल्ली से हिमाचल तक की यात्रा के लिए एक दिन बाद निकलना था। चूंकि हिमाचल का कार्यक्रम करीब आठ दिनों का था, इसलिए सभी ये सोच रहे थे कि क्यों न गाड़ी से आगे की यात्रा की जाए।

लगभग सभी ने इस विचार पर अपनी हामी दे दी। इसके दो फायदे थे। सबसे बड़ा फायदा यह था कि अपने समयानुसार सब खाते–पीते पहुँच जाएँगे और दूसरा यह कि सामान की भी कोई चिंता नहीं करनी थी। गाड़ी ठीक करने का ज़िम्मा संजू ने नितिन को सौंपा। कारण यह था कि

नितिन हरियाणा का रहने वाला था। दिल्ली में उनके जान पहचान के बहुत लोग थे। दो–एक जगह बात करने के बाद दो बड़ी गाड़ियों का इंतजाम हो गया। बस अब दिल्ली की यादों को समेट कर अगले दिन हिमाचल के लिए निकलना था। शाम को सबने जल्दी खा पीकर सोने का मन बना लिया, नहीं तो सुबह जल्दी निकलना मुश्किल ही था।

सब लोग कमरों की व्यवस्थानुसार उस रात सोने चले गए। पहले ही तय हो गया था कि अगले दिन सुबह तड़के ही निकल जाना है, फिर भी संजू की बेचैनी उसे सोने नहीं दे रही थी। ऐसा नहीं था कि इसके पहले वह कहीं पहाड़ी जगह पर ना गया हो, लेकिन जब भी पहाड़ घूमने की बारी आती उसके मन–मस्तिष्क में सैंकड़ों ख़्याल उठने लगते। एक बात और कि उसे समुद्र ज़्यादा भाता था, फिर भी पहाड़ों की नीरवता में उसका मन रम जाता। उस रात उसे निशा की भी बड़ी याद आई, संजू को पता था कि निशा को पहाड़ कितने पसंद थे? उसने मन ही मन सोच भी रखा था कि इस बार दोस्तों के साथ घूम फिर लिया जाये लेकिन एक दफ़े तो निशा के साथ दुबारा आना ही पड़ेगा। कोशिश करने के बाद भी जब उसे नींद न आई तो, उसने हिमाचल के बारे में पढ़ना शुरू किया। पढ़ते–पढ़ते कब उसका मन शांत हुआ और वो सो चुका था, पता ना चला।

निकलने वाले दिन संजू सबसे आखिर में उठा। तब तक लगभग सभी लोगों ने चाय–नाश्ता कर लिया था। नितिन की आवाज़ उसके कानों तक गई और झटके से वह उठ कर बैठ गया। देखा तो सभी तैयार बैठे थे। बस उसी का इंतज़ार था। फटाफट उठकर हाथ-मुंह धोकर उसने अपना सामान गाड़ी में रखा। हल्का नाश्ता कर संजू गाड़ी के पास पहुंचा। एक गाड़ी की कमान संजू ने, और एक की सैम ने संभाली। नाश्ता हो ही चुका था, इसलिए अब सीधे दोपहर के खाने के लिए ही रुकने का मन बनाया गया। पहले दिन का लक्ष्य रखा गया कि अंधेरा होने के पहले होटल पहुँच जाया जाए।

चलते-चलते दिल्ली की सीमा अब पार हो चुकी थी। दोपहर खत्म हो अब शाम होने ही वाली थी। खाने का कुछ खास मन अब था नहीं। सब उत्सुक थे कि अब सीधे पहाड़ी खाने का ही आनंद लिया जाएगा। धीरे–धीरे अब समतल भूमि की जगह घुमावदार पहाड़ी रास्ते आने लगे। दिन भर की थकान ने अब मन और शरीर दोनों को बोझिल करना शुरू कर दिया। पहाड़ों में शाम जल्दी होती है और उसका असर अब दिखाई दे रहा था। हल्की धुंध रास्ते पर छिटकती दिख रही थी। बाहर के मौसम का असर अब सब पर होने लगा। सबकी

कोशिश थी कि जितनी जल्दी हो, होटल पहुंचा जाए।

अंधेरा और गहरा हो चला था। शाम के करीब सात बजे बुक किए होटल में सभी आ पहुंचे। एक रात के लिए जितना सामान चाहिए था, सबने उतना ही निकाला। इस होटल में तीन कमरे बुक किए गए थे। संजू और नितिन रात के खाने का पता करने चल दिए। पूरे रास्ते ढंग से कहीं खाना नहीं हुआ। अगले दिन का कार्यक्रम बहुत लंबा और थकाने वाला था। सब एक ही कमरे में बैठकर अगले दिन के कार्यक्रम पर बातचीत कर रहे थे। तब तक फोन आया कि खाना लग चुका है। सबको ऐसी ज़बरदस्त भूख लगी थी कि यह सुनते ही उनके पूरे दिन की थकान हवा हो गई। जैसे ही होटल के डाईनिंग हाल में गए, खाने की ख़ुशबू ने सबके शरीर–दिमाग को तरो–ताज़ा कर दिया।

अगले दिन की सुबह कुछ खास थी। संजू ने जैसे ही कमरे की खिड़की खोली सामने का नज़ारा देख वह गदगद हो उठा। बचपन में किसी कहानी में पहाड़ों के बारे में जैसा उसने सुना और पढ़ा था, बिलकुल वही दृश्य उसकी आँखों के सामने था। ऊंचे पहाड़ और उन पर नाचते बादल, साफ चटकती धूप ने उसकी सुंदरता को और बढ़ा दिया था। आज के दिन का कार्यक्रम यही था कि शाम होने तक अपने अगले गंतव्य सिस्सू पहुंचा जाए। जितनी खुशी संजू को हुई थी, उतनी ही उस जगह पर सभी ने महसूस की। आगे की यात्रा के लिए सबका उत्साह देखते बन रहा था।

अब ठंड कुछ ज़्यादा लगने लगी थी। आखिर होमस्टे मिल ही गया। यहाँ का नज़ारा अद्भुत था और संजू को कुछ समय तक तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। एक छोटा सा गाँव, जो चारों तरफ से प्रकृति के अद्भुत नज़ारों से घिरा हुआ था। उनके होमस्टे के एक तरफ घाटी थी, तीन तरफ से जंगल की घनी हरियाली। एक लंबे सफर के बाद यहाँ तक पहुंचे थे, लेकिन थकान अब आधी हो चुकी थी। दोनों गाड़ियों से सामान निकाला गया, यहाँ दो दिन रुकना जो था। होमस्टे में कुल तीन कमरे थे। सबने अपनी सुविधानुसार कमरा चुन लिया। संजू और नितिन एक कमरे में रुके थे।

संजू को इस बात की भी खुशी थी कि अब तक उसके द्वारा की गई व्यवस्था से सब संतुष्ट थे। होमस्टे की व्यवस्था काफी अच्छी थी। खाने का ऑर्डर सबकी रजामंदी से संजू ने पहले ही दे दिया था। थोड़ा लेटकर सीधे रात के खाने पर मिलने का मन बनाया गया। होमस्टे का फायदा ये हुआ कि शुद्ध एवं पारंपरिक पहाड़ी खाने का आनंद भी लिया जा सकता था। रात को ठीक 8.30 बजे होमस्टे के मालिक का

फोन आया कि खाना तैयार है। संजू ने बाकी सबको भी फोन करके डाईनिंग हाल में बुला लिया। सबने तबीयत से खाने का मज़ा लिया। एक तो बाहर का ऐसा नज़ारा उस पर ऐसा लज़ीज़ पहाड़ी ख़ाना, संजू की अंतरात्मा तृप्त हो गई।

बाहर ठंड बहुत ज़्यादा थी, लेकिन ऐसी जगह और ऐसे खाने के बाद सबका मन टहलने का हुआ। होमस्टे के बाहर का रात का नज़ारा अविश्वासनीय ही था। घूप अंधेरे में कहीं–कहीं एक-दो घरों से निकलती रोशनी चमकते जुगनू सी लग रही थी। बात करते–करते संजू और नितिन बाकी के ग्रुप से थोड़ा आगे निकल आए थे। नितिन को तो नहीं लेकिन संजू को चाय की तलब हो रही थी। कुछ दूर उन्हे एक गुमटी दिखाई दी, अनुमान लगाया गया कि यहाँ चाय मिल सकती है। उस गुमटी में एक अधेड़ महिला थी, जो चाय, मैगी आदि चीज़ें बेंच रही थी। संजू ने अपने लिए एक कप चाय मांगा। उस महिला ने बैठने का इशारा किया और चाय बनाने लगी। दोनों बाहर ही कुर्सी निकाल कर बैठ गए। इधर–उधर की बातें होने लगी। इस बीच संजू ने बाकी के ग्रुप को उस दुकान के बारे में बताते हुए चाय पीने के लिए बुला लिया।

बात करते–करते नितिन को हल्का होने की ज़रूरत लगी। संजू को बोलकर वह बगल की झाड़ी की तरफ बढ़ा। इस बीच संजू की चाय आ चुकी थी। चाय तो ठीक सी ही थी, लेकिन आस-पास का वातावरण ऐसा था कि स्वाद की तरफ उसका ध्यान कुछ खास नहीं गया। चुस्की लेकर वह कुछ गुनगुना रहा था कि ऐसा लगा उसके पीछे कोई खड़ा है। उसे लगा नितिन वापस आ गया, सो उसने बिना मुड़े बैठने के लिए कुर्सी उस तरफ कर दिया। लेकिन वह बैठा नहीं, तब संजू ने पीछे मुड़कर देखा। करीब 80 साल का एक बूढ़ा फटे–कुचैले कपड़े और एक उधड़ी टोपी पहने हाथ फैलाए उसके सामने खड़ा था।

अचानक उसे देख संजू थोड़ा घबराया। उस सन्नाटे में उसकी उपस्थिति उसे थोड़ी विचित्र लगी। खैर खुद को थोड़ा सामान्य करते हुए संजू ने उसे चाय पीने और कुछ खाने का इशारा किया। उस बूढ़े ने हामी भर दी। संजू ने उसके लिए चाय और बिस्कुट मंगाया। थोड़ा टाइम लगा चाय आने में, तब तक वह संजू के पास पड़ी कुर्सी की तरफ बैठने के लिए बढ़ा। उसके बैठते ही चाय भी आ गई। उसने जल्दी–जल्दी बिस्कुट चाय ख़ाना शुरू किया। उसे देख ऐसा लगा मानो वह कई दिनों से भूखा था। उसे और बिस्कुट चाहिए थी, उसने संजू को देखा तो वह समझ गया। उसने और बिस्कुट मंगा दिया। उसने पूरा पैकेट खत्म कर दिया और अब जाने

की तैयारी करने लगा। संजू को लगा कि अब तो वह चला जाएगा, सो वह दुकान की तरफ बढ़ा कि पैसा देकर वापस होमस्टे लौटा जाए। उसने जैसे ही पैसे निकालने के लिए अपनी जेब से वालेट निकाला, वह बूढ़ा एकदम से उसके सामने आ गया और अपना हाथ फैलाया। संजू को कुछ अजीब लगा फिर खुद को स्थिर कर उसने एक दस का नोट उसकी हथेली पर रख दिया। दस का नोट देखकर उसके हाव-भाव ही बदल गए। उसे थोड़ा गुस्साया देखकर संजू ने नोट वापस रख कर खाने का दाम देकर आगे बढ़ना ठीक समझा। अभी वह पैसे दे ही रहा था कि एकदम से उस बूढ़े व्यक्ति ने सामने आकर कहा कि उसे पचास रुपये चाहिए। अब संजू को थोड़ा गुस्सा आया लेकिन खुद पर नियंत्रण रखते हुए उसने उसे अनदेखा कर चाय का पैसा आगे बढ़ाया।

बूढ़े ने इशारे से बताया कि उसे दस नहीं बल्कि पचास रुपये चाहिए। संजू को उसका यूं ढिठाई से ज़िद करना बिलकुल ना रास आया। उसे अनदेखा करते हुए वह उस ओर बढ़ा जिधर नितिन गए थे। संजू को उधर से नितिन आते दिखाई दिए और दोनों होमस्टे की तरफ बढ़ चले। उस बूढ़े के बारे में नितिन को उसने कुछ नहीं बताया। टहलने के बाद सब सोने चल दिए। अगली सुबह चूंकि सिस्सू घूमना था, सबने समय से आराम करना ही ठीक समझा।

अचानक संजू को लगा कि कोई उसके पैर के पास खड़ा है। उसने देखा तो उसे आश्चर्य हुआ। ये तो वही बूढ़ा था जो चाय वाली दुकान पर मिला था। उसने दुबारा संजू से पचास रुपये मांगे। इस बार उसे बड़ा गुस्सा आया और उसने उसे कमरे के बाहर जाने को कहा। तब तक वह बूढ़ा उसकी छाती पर बैठकर उसका गला दबाने लगा कि मुझे पचास रुपये चाहिए। संजू ने झटके से उसे हटाते हुए होमस्टे के मालिक को फोन कर बुलाया। कुछ देर बाद मालिक आया। उसने कहा कि ऐसे कैसे कोई भी वहाँ अंदर घुसकर पैसे मांग सकता है। इतना सुनते ही होमस्टे के मालिक के हाव–भाव बदल गए और उसने संजू को उस बूढ़े को पचास रुपये देने के लिए कहा। होमस्टे का मालिक ज़ोर से चिल्ला कर पैसे देने को कह रहा था। साथ ही वह बूढ़ा भी उसकी तरफ पैसे मांगने के लिए बढ़ रहा था। दोनों को अपनी तरफ आता देख संजू ने खुद को बचाने के लिए एक तरफ हटना शुरू किया। अचानक उसे लगा कि वह खिड़की के एकदम पास आ गया है और वो दोनों एकदम उसके पीछे खड़े हैं। उन दोनों ने मिलकर उसे खिड़की से धक्का दे दिया।

एक झटके से संजू को लगा कि वह कई हज़ार फुट नीचे गिर पड़ा। अजीब आवाज़ें, घना कुहरा और घूप अंधेरा है और वह गिरता चला जा रहा है। किसी ने उसे झकझोरा। सामने देखा तो नितिन खड़ा था, जो ना

जाने कब से उसे जगाने की कोशिश कर रहा था। आँख मलते हुए उसने जैसे तैसे खुद को संभाला। सामने की खिड़की से देखा तो बादल आ जा रहे हैं और सब घूमने के लिए बस उसी का इंतज़ार कर रहे हैं।

प्रियंका संजीव सिंह/ कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी पत्रिका वंदे मातरम के 26वें अंक के विमोचन के दौरान प्रशासन हिंदी सेल के कार्मिकों के साथ प्रधान महालेखाकार महोदया

हिंदी पत्रिका वंदे मातरम के 26वें अंक का विमोचन करते अधिकारीगण

हावड़ा ब्रिज

रवि प्रदीप इंदवर

हावड़ा ब्रिज....नाम सुनते ही मन में बस एक ही तस्वीर और एक ही शहर आँखों में बंद नजर आता है। किसी शहर की पहचान है या कारीगरी का अनूठा प्रदर्शन। दुनिया भर में कई ऐसे पुल/सेतु हैं, जो निर्माण और कारीगरी के मामले में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहे हैं। कभी-कभी ऐसे पुलों को देश का गौरव भी माना जाता है। ऐसा ही एक नायाब पुल भारत में भी है। भारत के हावड़ा और कोलकाता शहर के बीच में हुगली नदी पर स्थित हावड़ा ब्रिज वास्तुकला का एक अनूठा नमूना है। हावड़ा ब्रिज भारत ही नहीं पूरी दुनिया में मशहूर है।

पहले कोलकाता और हावड़ा के बीच हुगली नदी पर कोई पुल नहीं था। जलमार्ग से नदी पार करने के लिए नाव का उपयोग ही एकमात्र रास्ता था। हावड़ा ब्रिज अपने निर्माण के समय से ही कोलकाता की पहचान बना रहा है। इस पुल को बने हुए सात दशक से भी अधिक समय बीत चुका है। ऐसा कहा जाता है कि उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक में ब्रिटिश भारत सरकार ने कोलकाता और हावड़ा के बीच बहने वाली हुगली नदी पर एक स्तम्भरहित पुल के निर्माण की योजना बनाई थी। ऐसा इसलिए है क्योंकि कई बड़े व्यापारिक जहाज प्रतिदिन हुगली नदी में आते थे। खंबे वाले पुल के निर्माण से जहाजों की आवाजाही में कोई बाधा ना आए और नदी का जलमार्ग ना रुके। साल 1926 में "हावड़ा ब्रिज एक्ट" पारित किया गया। हावड़ा ब्रिज का निर्माण कार्य वर्ष 1937 में शुरू हुआ और 1942 में यह ब्रिज पूरी तरह बनकर तैयार हो गया था। कोलकाता के प्रसिद्ध 'हावड़ा ब्रिज' को 3 फरवरी 1943 को यातायात के लिए खोल दिया गया था। उस समय यह पुल दुनिया में अपनी तरह का तीसरा सबसे लंबा पुल था।

इस पुल की खासियत यह है कि पूरा पुल नदी के दोनों किनारों पर बने 288 फीट ऊंचे दो स्तंभों पर ही टिका है। इसके दोनों स्तंभों के बीच की दूरी डेढ़ हजार फीट है। इन दोनों स्तंभों के अलावा नदी में कहीं भी ऐसा आधार नहीं दिया गया है जो पुल को सहारा दे सके। इसके अलावा इस कैंटिलीवर ब्रिज को बनाने में लगभग 26.5 हजार टन स्टील का इस्तेमाल किया

गया है। इसमें से 23.5 हजार टन स्टील की आपूर्ति 'टाटा स्टील' ने की थी। ये एक कैंटिलीवर का उपयोग करके बनाया गया एक कंटीवेर पुल है। एक ऐसी संरचना जो अंतरिक्ष में क्षितिज रूप से ऊपर की ओर उठी होती है, जो केवल एक छोर पर आधारित होती है। पुल के निर्माण में किसी नट और बोल्ट का उपयोग नहीं किया गया है और स्टील प्लेट को जोड़ने के लिए नट बोल्ट के बजाय धातु की कीलों का उपयोग किया गया है। यह हैरानी भरा तथ्य है कि दशकों बाद भी हावड़ा ब्रिज का औपचारिक उदघाटन आज तक नहीं हो पाया है। इसके पीछे मुख्य कारण यह है कि जिस समय यह पुल बनकर तैयार हुआ तब द्वितीय विश्व युद्ध चरम पर था। इसके बाद तय हुआ कि इस पुल के औपचारिक उदघाटन के मौके पर कोई धूम धाम नहीं होगी। जब कोलकाता और हावड़ा को जोड़ने वाले इस पुल का निर्माण पूरा हुआ तब इसका नाम 'न्यू हावर्ड ब्रिज' रखा गया था। स्वतंत्र भारत में 14 जून 1965 को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के नाम पर इस पुल का नाम बदल कर 'रवीन्द्र सेतु' कर दिया गया था, लेकिन आज भी लोग इसे हावड़ा ब्रिज के नाम से जानते हैं। पुल का उपयोग करने वाला पहला वाहन 'ट्राम' था। ट्राम या ट्रॉली कार एक प्रकार की रेल है जो आम तौर पर कोलकाता में शहरी सड़कों के किनारे पटरी पर चलती है।

हावड़ा ब्रिज द्वितीय विश्वयुद्ध का भी गवाह रहा है, दरसअल दिसंबर 1942 में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इस पुल से कुछ दूर जापान ने एक बम गिराया गया था। विद्यासागर सेतु और विवेकानन्द सेतु हावड़ा ब्रिज के दोनों तरफ नदी पर दो अन्य प्रमुख पुल हैं। हावड़ा ब्रिज से रोजाना करीब 1.5 लाख वाहन और 5 लाख यात्री सफर करते हैं। ऐसा सुनने में आता है कि शहर में लोग इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास खुद के लिए भी समय नहीं होता पर यहां तो पूरा का पूरा शहर इस पर सफर

करता है जो पुल को व्यस्त रखता है। लाखों लोग अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए सफर करते हैं। जब भी इस पुल से गुजरता हूँ, एक पल के लिए भी पलक नहीं झपका पाता हूँ। यह मन मोह लेता है। इतने कदम एक साथ चलते हैं कि जैसा आसमान में सितारों को गिनना आसान नहीं वैसे ही इतने कदमों को गिनना आसान नहीं। हावड़ा ब्रिज पर खड़े हो कर जब हुगली नदी को देखता हूं तो वो चांदी की तरह चमकती है और मेरी आंखें बंद हो जाती है। चमकती रोशनी को अपने चेहरे पर महसूस करता हूं। यूं तो गाड़ी से हावड़ा ब्रिज को पार करने का अलग मजा है। सर को खिड़की से बाहर निकल कर उसकी ऊंचाई को देख कर मुग्ध हो जाना, पर उस पर पैदल चलने की बात ही कुछ अलग है। ऐसा लगता है कि बस चलते जाएँ और ये रास्ता ख़तम ना हो। लोग इतनी अफ़रा-तफ़री में चलते हैं और इस पल को पार करते हैं कि एक दूसरे के चेहरे पर ध्यान नहीं देते हैं लेकिन मैंने इन्हें देखने की कोशिश की है, अचानक चलते-चलते रुका हूं और चेहरों को देखने की कोशिश की है। सब खुद में ही व्यस्त हैं।

इस पुल की लंबाई तेज धूप में या गर्मी के समय तीन मीटर तक बढ़ जाती है क्योंकि तपमान में वृद्धि होने के कारण धातु फैल जाती है। हावड़ा ब्रिज पर पक्षियों द्वारा फैलाई जा रही गंदगी को साफ करने के लिए कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट को सलाना करीब 5 लाख रुपये खर्च करने पड़ते हैं। कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट को वर्ष 2011 के दौर ln एक अजीब समस्या से जूझना पड़ा था। एक अध्ययन से पता चला है कि तम्बाकू के थूकने से पुल के स्टील का हुड क्षतिग्रस्त हो रहा था। टैब ट्रस्ट द्वारा नीचे से फाइबर ग्लास से स्टील की हुड को ढकने पर करीब 20 लाख रुपये का खर्च आया था। हावड़ा ब्रिज को इसकी ख़ासियत और सुंदरता के कारण कई फिल्मों और गाने में भी दिखाया गया है।

रवि प्रदीप इंदवर/लेखाकार

मजबूत इच्छाशक्ति से आगे बढ़िए,

हिंदी भाषा में कार्य कीजिए।

आप सभी का साथ है

आपके साथ हिंदी का विश्वास है।

कार्यालय में आयोजित लेखापरीक्षा सप्ताह 2023 के समापन अवसर पर पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री सी. वी. आनंद बोस की गरिमामयी उपस्थिती एवं उनके अभिभाषण के कुछ दृश्य।

सरस्वती वंदन

हिंदी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के दौरान अपना विचार रखते हुए महालेखाकार महोदय